नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट

2017–2018

STAFF & STUDENTS

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट
2017–2018

जवाहर लाल नेहरु मार्ग
नई दिल्ली – 110002

विषय सूची

वार्षिक रिपोर्ट

2017–2018

	पृ॰सं॰
अध्यक्षीय संदेश	3
निदेशक की कलम से	4
संस्थान के सबंध में	6
प्रबंधन समिति	7
वैज्ञानिक सलाहकार समिति	8
नैतिक समिति	9
वरिष्ठ कर्मचारीगण	11
अनुसंधान एवं प्रकाशन	12
वैज्ञानिक कार्यक्रमों मे भागीदारी	22
बैठकें	35
नैदानिक अनुभाग	37
जनपादिक अनुभाग	42
जनस्वास्थ्य अनुभाग	47
माइक्रोबैक्टीरियल प्रयोगशाला	53
प्रशिक्षण एवं पर्यवेक्षण अनुभाग	58
निरीक्षणात्मक कार्य	77
पुस्तकालय एवं सूचना सेवाएं	79
प्राशासनिक अनुभाग	79
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की गतिविधियों का सार	82
लेखा परीक्षक की रिपोर्ट	

अध्यक्ष का संदेश

यह मेरे लिए गौरव की बात है कि मैं क्षयरोग के लिए अपनी सेवाएं देने वाले देश के सबसे सबसे पुराने संगठन नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र (एनडीटीबीसी) के साथ जुड़ा हूं। इस संस्थान ने 1940 में एक आदर्श क्षयरोग क्लीनिक के रूप में अपनी यात्रा आरंभ की थी। टीबी तथा सांस संबंधी अन्य रोगों से पीडित रोगियों की सेवा कर रहे राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में आज इस केन्द्र का गौरवपूर्ण स्थान है।

एनडीटीबीसी पूर्ववर्ती राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम या वर्तमान के परिवर्तित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम के क्रियाकलापों के लिए अपनी सेवाएं देकर भारत सरकार के प्रयासों को पूर्ण कर रहा है। क्षयरोग के बारे में जागरूकता पैदा करने, उसकी रोकथाम, जल्दी पहचान करने तथा क्षयरोगियों के उपचार में अपने योगदान के अलावा संस्थान को आरएनटीसीपी गतिविधियों को मॉनीटर करने तथा दिल्ली राज्य के अभिनामित माइक्रोस्कोपी केन्द्रों में स्पूटम (लार) स्मियर माइक्रोस्कोपी के गुणता नियंत्रण के लिए आरनएनटीसीपी के अंतर्गत दिल्ली राज्य के लिए टीबी प्रशिक्षण एवं निरूपण (एसटीडीसी) केन्द्र और इंटरमीडिएट रेफरंस प्रयोगशाला (आईआरएल) के रूप में नामित किया गया है।

केन्द्र के पास लाइन प्रोब एसे, एमजीआईटी पद्धति, जीन एक्सपर्ट, बीएसएल सुविधा एवं लिक्विड कल्चर तथा इस वर्ष आरंभ की गई जीन सीक्वेंसर जैसी प्रयोगशाला सुविधाओं के द्वारा गुणवत्तापूर्ण निदान करने के लिए उत्कृष्ट माइकोबैक्टिरियल विभाग है। यह प्रयोगशाला एनएबीएल मान्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया में है।

मैं संस्थान को वर्तमान स्तर तक ले जाने के लिए प्रबुद्ध फैकल्टी, तकनीकी स्टाफ, और अन्य कर्मचारियों का उनके सतत प्रयासों के लिए हृदय से आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मैं केन्द्र को सहयोग देने के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, केन्द्रीय टीबी डिवीजन और दिल्ली सरकार का धन्यवाद करता हूं।

डा एल एस चौहान
अध्यक्ष

निदेशक की कलम से

मुझे नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र (एनडीटीबीसी) की 2017–18 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है। यह रिपोर्ट एक विस्तृत आलेख है जिसमें 'मरीजों की देखभाल', 'अनुसंधान', मानव संसाधन विकास और विकास की अन्य गतिविधियों के क्षेत्र में संस्थान की उपलब्धियों को सामने रखा गया है।

रोगियों की देखभाल के लिए हम क्षयरोग तथा श्वसन संबंधी रोगों के लिए रेफरल क्लीनिक चला रहे हैं। पूरी दिल्ली और आस–पास के क्षेत्रों से मरीजों को जनता तथा निजी क्षेत्र द्वारा यहां सलाह और जांच के लिए रेफर किया जाता है। वर्ष के दौरान 22,599 मरीजों ने नैदानिक अनुभाग की सेवाओं का उपयोग किया। यह अनुभाग विशेष सीओएडी भी चला रहा है जिसमें 1022 सीओएडी मामलों की नियमित जांच एवं उपचार चल रहा है।

केन्द्र की प्रयोगशाला दिल्ली राज्य के लिए इंटरमीडिएट रेफरंस प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर रही है। दिल्ली के 25 में से 17 चैस्ट क्लीनिकों से रोगियों को यहां दवा प्रतिरोधक क्षयरोग के लिए रेफर किया जाता है। यह प्रयोगशाला त्वरित निदान की सुविधा से युक्त है। हम अपनी प्रयोगशाला के एनएबीएल प्रत्यायन प्राप्त करने की प्रक्रिया में है और उम्मीद है कि यह हमें जल्दी मिल जाएगा। इस वर्ष जीन अनुक्रमक (सिक्वेंसर) भी शामिल हुआ है। इस वर्ष 20,026 मरीजों ने प्रयोगशाला सुविधा का लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त प्रयोगशाला की फैक्लटी विभिन्न अनुसंधान कार्य भी करती रही जिसमें स्नातकोत्तर और पीएचडी थीसिस शामिल है। इस वर्ष 6 परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है।

केन्द्र अध्यापन एवं प्रशिक्षण का कार्य भी कर रहा है। एमएएमसी और वी पी चैस्ट क्लीनिक संस्थान के प्रशिक्षुओं और स्नात्तकोतर मेडिकल छात्रों को यहां अध्यापन तथा प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। अहिल्या बाई कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आरएमएल हस्पताल और लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल के नर्सिंग के छात्रों को प्रशिक्षण देने के अलावा केन्द क्षयरोग पर्यवेक्षी पाठ्यक्रम भी चलाता है। आरएनटीसीपी के अंतर्गत मेडिकल और पैरामेडिकल स्टाफ का आरंभिक प्रवेश तथा पुर्नप्रशिक्षण केन्द्र की एक अन्य महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। इस वर्ष 2749 कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया।

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र का जनपादिक रोग विज्ञान कई कार्य करता है। इस खंड द्वारा कई संगठनों के कर्मचारियों की रेडियालॉजिकल जांच की जाती है। इस अनुभाग के संकाय द्वारा परिचालानत्मक परियोजनाएं चलाई जाती हैं।

पिछले वर्ष दिल्ली राज्य में ईको–एमडीआर दूरस्थ शिक्षण परियोजना आरंभ की गई। इस परियोजना का उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा प्रदाता की क्षमता निर्माण करना है। इस परियोजना के तहत विभिन्न मुद्दों, वर्तमान मामलों पर चर्चा करने तथा विशेषज्ञों द्वारा शिक्षात्मक प्रजेन्टेशन के माध्यम से सीखने के लिए एसटीडीसी, एसटीओ कार्यालय, डीआरओबी केन्द्र तथा डीटीओ वास्तविक मंच पर एकसाथ आए। एनडीटीबी केन्द्र ने इस परियोजना में सक्रियता से भाग लिया और इस वर्ष मेडिकल कॉलेज और प्रमुख निजी हस्पतालों के लिए स्वतंत्र रूप से विस्तार किया।

केन्द्र की फैकल्टी चिकित्सकीय जीवाणु विज्ञान में अनुसंधान कार्य भी सक्रिय रूप से करता है। वर्ष के दौरान जर्नल्स में 4 पेपर प्रकाशित किए गए और 4 को प्रकाशन हेतु सूचित किया गया।

भारतीय क्षयरोग संघ एनडीटीबी केन्द्र के प्रारंभिक समय से ही इसके कार्यो की मॉनीटरिंग कर रहा है और कार्यो को बेहतर करने के लिए मार्गदर्शन दे रहा है।

मैं वित्तीय सहयोग के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और केन्द्रीय टीबी डिवीजन का धन्यवाद करता हूं। मैं नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में मूलभूत सुविधाओं को सुदृढ करने के लिए प्रबंध समिति के सभी सदस्यों, राज्य क्षयरोग नियंत्रण अधिकारी दिल्ली राज्य और भारतीय टीबी संघ का बहुमूल्य मदद और सहयोग के लिए आभार प्रकट करता हूं।

डा के के चोपडा
निदेशक

संस्थान के बारे में

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की स्थापना 1940 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान प्राप्त संस्थान के रूप में हुई। एनडीटीबी को 1951 में उन्नत किया गया जिससे यह विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ), यूनीसेफ और भारत सरकार की सहायता से पहला निदर्शन और प्रशिक्षण केन्द्र बना। 1966 में यह क्षयरोगियों के लिए रेफरल केन्द्र बना। देश के सभी हिस्सों से क्षयरोगियों को केन्द्र में रेफर किया जाता है जहां उनके रोग का निदान किया जाता है और उपचार सुविधाएं दी जाती हैं।

1997 में नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र ने आरएनटीसीपी के तहत डॉटस नीति को क्रियान्वित करने के लिए संगठित होकर काम करना प्रारंभ किया। इस समय केन्द्र दिल्ली के 10 चैस्ट क्लीनिकों में से एक है जिसके अंतर्गत लगभग 5 लाख की आबादी है। यह केन्द्र मुख्यतः पुरानी दिल्ली के हिस्से में 15 वर्ग किमी. में फैला है।

वर्ष 2005 में केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग ने नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र को राज्य क्षयरोग प्रशिक्षण एवं निरूपण केन्द्र और दिल्ली राज्य के लिए इंटरमीडिएट रेफरेंस प्रयोगशाला के तौर पर अभिनामित किया। इसके अतिरिक्त यह प्लमनरी रोगों एवं क्षयरोग के मरीजों के लिए रेफरल केन्द्र के रूप में भी कार्यरत है। वर्ष 2015 में केन्द्र ने अपनी स्थापना के 75वां वर्ष मनाया जिसके लिए 'मासिक रोगी देखभाल' संबंधित गतिविधियां नियोजित और क्रियान्वित की गई।

केन्द्र की प्रबंध समिति है जो नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की सुचारू कार्यप्रणाली सुनिश्चित करती हैं। प्रबंध समिति केन्द्र के कार्यों को नियंत्रित करती है और उसके पास केन्द्र के लिए योजना बनाने, स्थापित करने और केन्द्र को चलाने के लिए सभी शक्तियों,कृत्यों तथा कार्यो को करने व लागू करने का अधिकार है। प्रबंध समिति में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, दिल्ली सरकार, निगमों, टीबी भारतीय क्षयरोग संघ तथा अन्य एनजीओ के सदस्य हैं। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय केन्द्र के सुचारू संचालन के लिए सहायता के रूप में प्रत्येक वित्तीय वर्ष में अनुदान देता है।

प्रबंधन समिति

उपाध्यक्ष भारतीय क्षयरोग संघ	अध्यक्ष
उपाध्यक्ष (अनुसंधान व प्रकाशन) भारतीय क्षयरोग संघ	वित्तीय सलाहाकार
अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहाकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्राालय	सदस्य
संयुक्त सचिव (स्वास्थ्य) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्राालय	सदस्य
उप महानिदेशक (क्षयरोग) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्राालय	सदस्य
निदेशक क्षय एवं श्वसन का राष्ट्रीय संस्थान	सदस्य
निदेशक स्वास्थ्य सेवायें (दिल्ली) स्वास्थ्य सेवा निदेशालय – दिल्ली प्रशासन	सदस्य
निदेशक बल्लभ भाई पटेल चेस्ट संस्थान	सदस्य
निदेशक सेवाएं नई दिल्ली नगरपालिका परिषद	सदस्य
महासचिव भारतीय क्षयरोग संघ	सदस्य
अवैतनिक महासचिव दिल्ली क्षयरोग संघ	सदस्य

निदेशक — सदस्य
रेलवे मंत्रालय

निदेशक — सदस्य–सचिव
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

वैज्ञानिक सलाहकार समिति

डा. एल एस चौहान — अध्यक्ष
अध्यक्ष
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

डा. देवेश गुप्ता — सदस्य
अपर महानिदेशक (क्षयरोग)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रााालय

डा. अश्वनी खन्ना — सदस्य
राज्य क्षयरोग अधिकारी
दिल्ली राज्य

प्रो. राज कुमार — सदस्य
निदेशक
बल्लभ भाई पटेल चेस्ट संस्थान

डा. वरिन्द्रर सिंह — सदस्य
प्राध्यापक बाल चिकित्सा
कलावती अस्पताल
लेडी हार्डिग मेंडिकल कालेज

श्री. जी. पी. माथुर — सदस्य
पूर्व–सांख्यिकीविद्
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

डा. एम. हनीफ के. एम. — सदस्य
जीवाणु वैज्ञानिक
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

डा. निशि अग्रवाल — सदस्य
सांख्यिकीविद्
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

डा. . के. के. चोपड़ा — सदस्य–सचिव
निदेशक
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

नैतिक समिति

डा. राज कुमार — सदस्य
निदेशक
बल्लभ भाई पटेल चेस्ट संस्थान

डा. संजय राजपाल — सदस्य
छाती विशेषज्ञ
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

डा. एम. हनीफ के. एम. जीवाणु वैज्ञानिक नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र	सदस्य
डा. चिनकोलाल तानगसिंह एन जी ओ – एच आई वी विशेषज्ञ	सदस्य
श्री टी एस आलूवालिया महासचिव भारतीय क्षयरोग संघ	सदस्य
प्रो माला सिन्हा संकाय चिकित्सा विज्ञान दिल्ली विश्वविघालय	सदस्य
श्री. सवेताकेतु मिश्रा वकील	सदस्य
डा. एम एम सिंह प्राध्यापक मौलाना आजाद आयुर्विज्ञान कालेज	सदस्य
डा. निशि अग्रवाल सांख्यिकीविद् नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र	सदस्य
श्री. कुमार दिल्ली क्षयरोग संघ	सदस्य
श्री. संजीव गुप्ता समुदाय व्यक्ति	सदस्य
डा. शंकर माटा जानपादिकरोगविभागी नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र	सदस्य–सचिव

वरिष्ठ कर्मचारीगण

डा. के. के. चोपड़ा ए.बी.बी.एस., एम.डी., डी.टी.सी.ई.	निदेशक
डा. संजय राजपाल एम.बी.बी.एस., डी.टी.सी.डी., एफ.एन.सी.सी.पी.	छाती विशेषज्ञ
डा. महमूद हनीफ पी.एच.डी.	जीवाणु वैज्ञानिक
डा. (श्रीमति) निशि अग्रवाल पी.एच.डी.	सांख्यिकीविद्
डा. शंकर माटा एम.बी.बी.एस., एम.डी.	जानपादिकरोगविभागी
डा. शिवानी पवार एम.बी.बी.एस., डी.टी.सी.डी.	चिकित्सा अधिकारी
श्री. एस के सैनी स्नातक, एआईसीडब्लयूए	प्रशासनिक अधिकारी (कार्यवाहक)

अनुसंधान और प्रकाशन

(क) प्रकाशित अनुसंधान पेपर

वर्ष 2017–18 में केन्द्र के संकाय (फैकल्टी) ने निम्नलिखित अनुसंधान पेपर प्रकाशित किए अथवा दिए हैं :

1. फिनोटाइप ड्रग रिस्सटेन्स कनर्फमेशन ऑफ एडीशनल सेकंड लाइन ड्रग पर एक्स्ट्रा–प्लमनरी मल्टी ड्रग रिसस्टेन्ट टीबी पेशंट –करंट एडवांस रिसर्च के अंतर्राष्ट्रीय जनरल 2018,7–1 (सी) : 8900–8902में प्रकाशित् ।

2. आइसोलेशन एण्ड आइडन्टीफिकेशन ऑफ माइक्रोबैक्टिरियल ट्यूबरक्लोसिज विद मिक्सड ग्रोथ फरॉम पॉजीटिव एमजीआईटी 960 कल्चर बाई रि–डीकन्टमेशन –जनरल बायोटक्नॉल बायोमीटर 2017; 7:1–3में प्रकाशित।

3. इनफ्लेमेशन एट द सेन्टर ऑफ ऑल रेसपरेटरी डीसिज इन्कलूडिंग ट्यूबरक्लोसिज –इंडियन जनरल ऑफ ट्यूबरक्लोसिज में प्रकाशन के लिए संपादकीय स्वीकृत ।

4. अनुसंधान पेपर शीर्षक ''एक्सलरेटिंग एक्सेस टू क्वालिटी टीबी केयर फॉर पड्रेयिटिक टीबी केसिज थ्रू बैटर डायग्नोस्टिक स्ट्रेटिजी पद फॉर मेथर सिटीज ऑफ इंडिया'' पीएलओएस वन ऑनलाइन जरनल में प्रकाशन हेतु संपादकीय स्वीकृत पीआएनई–डी–17–38222आर1

5. जनेटिक पॉलीमोरफिज्म ऑफ रेयर म्यूटेशन इन एम ट्यूबरक्लोसिज इन्फेक्टिड पेशेंट इन दिल्ली –मूल लेख बायोटेक्नॉलजी रिसर्च जनरल मार्च 2018; आईपी 2 : 74–81 में प्रकाशित ।

6. डिटक्टेशनऑफ मल्टी–ड्रगरिसस्टेन्ट (एमडीआर) एण्ड एक्सटेन्सवली ड्रग रिसस्टेन्ट (एक्सडीआर) अमंग नगेटिव एक्स्ट्रा प्लमनरी टीबी केसिस इन ए रेफरंस लेबाटरी –बायोमेडिकल एवंबायोटेक्नॉलजी रिसर्च जनरल में प्रकाशन हेतु संपादकीय स्वीकृत ।

7. मेसो लेवल मल्टीडिस्पलनरी एप्रोच फॉर रिडक्शन ऑफ प्री ट्रीटमेंट डोज टू फॉलो अप इन आरएनटीसीपीदिल्ली, भारत – आईजेटी 2017, 281–90 में मूल लेख प्रकाशित ।

8 सुश्री शादाब खान और डा के के चोपड़ा का लेख ''रोल ऑफ सोशल वर्क इन टीबी''पंकज सिंह की पुस्तक ''सोशल वर्क इन हॉस्पिटल हेल्पिंग प्रोफेशन'' में तथा 2 अक्तूबर 2017 को भारतीय क्षयरोग संघ की स्मारिका में प्रकाशित।

अनुसंधान परियोजनाएं

1. जेलों में क्षयरोग देखभाल का ढांचा

   एनडीटीबी एवं राज्य क्षयरोग प्रकोष्ठ द्वारा ''जेलों में क्षयरोग की देखभाल का ढांचा'' शीर्षक से एक परियोजना संचालित है। इस परियोजना का उद्देश्य तिहाड़ जेल के कैदियों में क्षयरोगियों की संख्या का अनुमान लगाना और तिहाड़ जेल में दवा प्रतिरोधक क्षयरोग का जल्दी पता लगाने के कार्यात्मक तौर–तरीके तैयार करना तथा इसके साथ कैदियों में (जेल में रहने के दौरान तथा बाद में समुचित रेफरल) क्षयरोग की देखभाल की मानक रीतियों का इस्तेमाल करना है। इस परियोजना को चलाने के लिए तिहाड जेल अधिकारियों से बातचीत की जा रही है।

2. नई दिल्ली में नसों में सुई द्वारा मादक पदार्थ लेने वाले लोगों में सक्रियतापूर्वक क्षयरोग की पहचान करने के लिए अभियान

   इसका प्रयोजन है (क)क्षयरोग की आशंका वाले लोगों में जल्दी पहचान करना (ख) जल्दी निदान करना (ग) उपचार की तैयारी करना (घ) उपचार एवं देखभाल को जोड़ना। लक्षित जन समुदाय : दिल्ली के जमुना बाज़ार, हनुमान मंदिर, कनॉट प्लेस क्षेत्र में सुई द्वारा ड्रग लेने वाले। डीएसएसीएस परियोजना के दो लक्षित केंर्दित केन्दों के कार्यक्षेत्रों की अनुमानित आबादी लगभग 1500 है। प्रस्तावित कार्य : (क) दल के लिए प्रशिक्षण/नीति (ख) क्षयरोग जागरूकता पर सामुदायिक बैठक (घ) दो दिए गए स्थलों पर 1500 पीडब्लूडी मे क्षयरोग के चार लक्षणों की जांच करना (ड) पॉजीटिव पाए जाने वालों के उपचार की तैयारी और उसके बाद उपचार निगरानी।

3. दिल्ली राज्य में संशोधित क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) के अंतर्गत माइकोबैक्टिरियल दवा प्रतिरोधकता हॉटस्पॉट की मैपिंग

   ओआर का उद्देश्य क) दिल्ली राज्य में पीटीबी मामलों में प्रथल एवं द्वितीय लाइन दवा प्रतिरोधकता के प्रसार का आकलन ख) सदृश रोगियों में के उपचार के परिणामों में दवा प्रतिरोधकता के प्रभाव का आकलन करना (ग) दिल्ली राज्य में दवा प्रतिरोधिकता पैटर्न के हॉटस्पॉट का पता लगाना। दिल्ली राज्य के 25 चैस्ट क्लीनिकों के 2015 के पूर्वव्यापी आंकड़े एकत्र किए जाएंगें। आरएनटीसीपी के तहत रोगियों की भर्ती, निदान एवं उपचार किया गया। प्रथम एवं द्वितीय लाइन के प्रतिरोधकता नमूने एकत्र करना। SPSSv20 से आंकड़ो का विश्लेषण किया जाएगा। जीआईएस मैपिंग : दवा प्रतिरोधक हॉटस्पॉट ज्ञात करने के लिएArcGIS सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जाएगा।

4. दिल्ली में एमडीआरक्षयरोगियों के परिणामों पर काउंसलिंग का प्रभाव

इस ओरआर का उद्देश्य एमडीआर टीबी के मामलों में काउसंलिंग के परिणामों के प्रभाव को देखना है जिसका आकलन किया जाएगा : (क) डीआरटीबी रोगियों में उपचार के अनुपालन द्वारा (ख) डीआर टीबी रोगियों में फॉलोअप न किए जाने के नुकसान से (ग) डीआरटीबी रोगियों और उनके परिवार के सदस्यों को मानसिक सामाजिक सहायता प्रदान करके (घ) रोगियों के परिवार वालों में क्षयरोग का समय रहते पता लगा कर (ड) रोगी को विद्यमान सामाजिक सहायता सेवाओं से जोड़ कर। इसकी कार्यप्रणाली इस प्रकार होगी क) तीन वर्षो केआरएनटीसीपीरिकॉर्ड से बेसलाइन डाटा इकठ्ठा करना ख) एलएनडीआरटीबी केन्द्र में प्रशिक्षित काउंसलर नियुक्त करना ग) काउंसलर सभी उपचाराधीन एमडीआर रोगियों को समरूपी सुविधा और गृह आधारित काउंसलिग प्रदान करेगा जिसके लिए पहले से तैयार किए गए मॉड्यूल का प्रयोग किया जाएगा। घ) काउंसलर जिला/उप–जिला आरएनटीसीपी स्टाफ के साथ संपर्क का कार्य भी करेंगे। घ) काउसंलर आईपी में 15 दिनों में एक बार और सीपी में महीने में एक बार एमडीआर क्षयरोगियों के साथ बातचीत करेंगे।

5. दिल्ली क्षयरोग वार्म लाइन परामर्श सेवा

यह एक विशेषज्ञ परामर्श प्लेटफार्म है जिसमें आईटी सपोर्ट प्रणाली है जो कि प्रदाता के क्लीनिकल एवं कार्यक्रमबद्ध क्षयरोग से जुड़े प्रश्नोंका समाधान करता है, जो कि विशेष रूप से निजी चिकित्सकों और जटिल दवा प्रतिरोधक क्षयरोग से संबंधित हैं और जिसको 'वार्म लाइन' नाम दिया गया है। यह टेलीफोन/ईमेल/वेबपेज आधारित सपोर्ट लाइन है जिसमें मेडिकल से जुड़े लोग जटिल प्रश्नों का उत्तर तथा प्रत्येक कॉलर को रेफरल तथा विस्तृत फीडबैक देते हैं। यह एक सुचारू और गैर–आपातकालीन टेलीफोन/ईमेल सेवा हैजोपूछे गए प्रश्न के उत्तर–प्रतिउत्तर के लिए 24 घंटे सेवाएं प्रदान करता है। यह वार्म लाइन प्रणाली क्षयरोग की चेतावनी देने और दिल्ली में रहने वाले सभी रोगियों और उनके परिवारों की समुचित क्षयरोग देखभाल को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। इसका उददे्श्य है :

(1) निजी क्षेत्र के प्रदाताओं को भारत में देखभाल के मानकों के अनुसार सही समय पर और उपयुक्त सलाह देना।
(2) विशेषज्ञ परामर्श तक पहुंच के माध्यम से रोगी देखभाल एवं परिणामों को बेहतर करना।
(3) विशेषज्ञ परामर्श के प्रावधान द्वारा निजी क्षेत्र की सेवा के माध्यम से निजी क्षेत्र की सूचना को बढ़ावा देना।
(4) चिकित्सकीय, प्रशिक्षण और शिक्षा के लिए निजी प्रदाताओं को ईको प्लेटफार्म से जोड़ना।

6 बच्चों में प्लमनरी क्षयरोग के निदान हेतु किसी एक श्वसन नमूने में मॉलीक्यूलर नैदानिकता द्वारा माइक्रोबैक्टिरियम क्षयरोग की तुलनात्मक उत्पति

यह तुलनात्मक अंर्तवर्गीय अध्ययन होगा जिसमें प्लमनरी क्षयरोग की आशंका वाले 1 माह से 14 साल तक के 200 बच्चों को अध्ययन में शामिल किया जाएगा। इसमें शामिल मानदंड होंगे :– 1.दो सप्ताह तक बुखार या निरंतर खांसी या दोनों जिसके साथ या इसके बिना (क) पिछले 3 महीनों में 5% वजन में कमी (ख) संदिग्ध या ज्ञात सक्रिय क्षयरोग वाले व्यक्ति के संपर्क में आने का इतिहास। 2. चैस्ट स्कीग्राम में रेडियोलॉजिकल असामान्यता। छोड दिए जाने वाले मानदंड (कोई भी) (क) सक्रिय लार बलगम (ख) कक्ष वायु में ऑक्सीजन की 92%से कम धमनीय संतृप्ति ।केस को लिखने के लिए 12 महीने की अवधि तथा आंकड़ो को इकठ्ठा करने और विश्लेषण करने के लिए 3 महीनें।

(ग) नैटकान 2017 में प्रस्तुत सारांश

भारतीय क्षयरोग संघ द्वारा आंध्र प्रदेश में आयोजित 72वीं राष्ट्रीय क्षयरोग एवं वक्षरोग सम्मेलन के दौरान निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए :

1. कृत्रिम लार नमूनों से एम ट्यूबरक्लोसिस आइसोलेट को फिर से उत्पन्न करने के दौरान पाए गए दवा प्रतिरोधक पैटर्न
2. बहुदवा प्रतिरोधक वाले रोगियों से माइकोबैक्टिरियम ट्यूबरक्लोसिस आइसोलेट में जीनोटाइप विविधता ।
3. स्मियर नेगेटिव प्लमनरी नमूनों और उनके दवा प्रतिरोधक पैटर्न से एम ट्यूबरक्लोसिसकी पुनः प्राप्ति।
4. स्मियर पॉजीटिव लार के नमूनों को छोड़ कर माइकोबैक्टिरिया के शीघ्र निदान के लिए जीनोटाइप एमटीबीडीआर प्लस एसे का उपयोग।

(घ) यूनीयन वर्ल्ड लंग हेल्थ कान्फ्रेंस 2018 के लिए दिया गया सारांश

1. 'दिल्ली, भारत में बेघर नागरिकों में सक्रियतापूर्वक केस का पता लगाना – 15 सप्ताह के कार्य अनुभव एवं सबक'।
2. रोगी के उपचार के परिणामों को बेहतर करने के लिए क्षयरोग मेडिकल परामर्श मॉडल।
3. अतिरिक्त प्लमनरी क्षयरोग वाले बच्चों में उपचार के दौरान बीमारी का क्लीनिकल कोर्स एवं पैटर्न।
4. महिला सेक्स वर्करों में एसीएफ की क्रियात्मक रूपरेखा का विकास
5. सुई द्वारा नशा लेने वालों में एसीएफ की क्रियात्मक रूपरेखा का विकास
6. दिल्ली, भारत में ट्रक चालकों में घुमंतू समूहों के लिए ट्यूबरक्लोसिसइंटरवेन्शल मॉडल

7. केमिस्ट के माध्यम से स्वसूचना : दिल्ली में क्षयरोग को समाप्त करने के लिए अग्रगामी दृष्टिकोण।

किए गए एमडी थीसिस/एमएससी शोध प्रबंध

1. क्षयरोग पीड़ित बच्चों में दवा संवेदनशीलता पैटर्न की नैदानिक परस्परता : विभिन्न वर्गीय अध्ययन
(बाल–चिकित्सा विभाग, लेड़ी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के स्नातकोत्तर छात्रों की एमडी थीसिस)
क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए बच्चों में क्षयरोग को एक प्रहरी सूचक के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है। यह देखा गया है कि समुदाय में बच्चों में दवा प्रतिरोधिता का पैटर्न सामान्य तौर पर वयस्क जनसंख्या को प्रतिबिम्बित करता है। बहुत कम मामलों में बच्चों में अर्जित प्रतिरोधिता पाई जाती है क्योंकि बाल क्षयरोग सामान्यतः पॉसीबेसिलरी होती है जिसमें रोगाणु जीव मात्रा (आर्गेनिज्म लोड) कम होती है। इसलिए प्रतिरोधक उत्परिवर्तकों के उत्पन्न होने और उनको ज्ञात करने की संभावना कम होती है। अतएव, निगरानी दवा प्रतिरोधकता आवश्यक हो जाती है क्योंकि आरंभिक दवा प्रतिरोधिता में प्रवृत्ति या आरंभिक दवा प्रतिरोधकता, उपचार प्रणाली के प्रभावी होने की सूचक होती है। लिटरेचर से पता चलता है कि क्षयरोग से ग्रस्त बच्चों में दवा ग्राहिता पैटर्न पर जानकारी का विशेषकर भारत में अभाव है। इसलिए वर्तमान अध्ययन दवा संवेदनशीलता के पैटर्न तथा क्षयरोग से पीड़ित बच्चों में पनपती दवा प्रतिरोधकता को जानने के लिए किया जा रहा है। क्षयरोग से पीडित़ 0–14 वर्ष के बच्चों (जो कि गंभीर रोग या प्रतिरक्षा तंत्र की कमी से मुक्त हैं) को इस अध्ययन में शामिल किया गया है। इसमें एक्सपर्टएमटीबी आरआईएफ, लाइन प्रोब एसे ओर एमजीआईटी कल्चर और डीएसटी जैसी माइकोबैक्टिरियोलॉजिकल जांच की गई। इससे प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया और थीसिस जमा की गई।

2. एचआईवी पॉजीटिव रोगियों में प्लमनरी क्षयरोग और प्राथमिक दवा प्रतिरोधकता का जल्दी पता लगाने में कार्टिज आधारित न्यूक्लिक एसिड एम्पलीफीकेशन जांच का अध्ययन
(डा राम मनोहर लोहिया अस्पताल,नई दिल्ली के मेडिसन विभाग, पीजीआईएमईआर के पीजी के छात्रों की एमडी थीसिस)

अध्ययन से पता चलता है कि एचआईवी पॉजीटिव रोगियों में प्लमनरी टीबी सर्वाधिक पाया जाने वाला संक्रमण है जो कि 17% से 23% तक है। एचआईवी पॉजीटिव के रोगियों में क्षयरोग का पता लगाने में स्पूटम (लार) माइक्रोस्कोपी अधिक विश्वसनीय नहीं है। इसके अतिरिक्त दवा प्रतिरोधक क्षयरोगियों की संख्या में बढ़ोत्तरी से एचआईवी

रोगियों में क्षयरोग के इलाज की चुनौतियां बढ़ गई हैं। परंपरागत रूप से बैक्टिरियल कल्चर और दवा संवेदनशलीता जांच से डीआर–टीबी का निदान होता है, लेकिन यह एक धीमी ओर जटिल प्रक्रिया है। प्लमनरी क्षयरोग अथवा टीबी का उसकी शुरूआत में पता लगाना बहुत महत्त्वपूर्ण है ताकि इसका उपयुक्त तरीके से इलाज किया जा सके। कार्टिज आधारित न्यूक्लिक एसिड एम्पलीफिकेशन (सीबीएनएएटी) हाल ही में विकसित निदान के तरीकों में से एक है जिससे कुछ ही घंटों में क्षयरोग और एक प्रमुख दवा–रिफेमपिसिन की सुग्राहता जांच का एक साथ पता चल जाता है। अतएव, वर्तमान अध्ययन एचआईवी रोगियों में प्लमनरी क्षयरोग के शीघ्र निदान ओर प्राथमिक दवा प्रतिरोधकता का पता लगाने में कार्टिज आधारित न्यूक्लिक एसिड एम्पलीफिकेशन जांच (सीबीएनएएटी) की आरंभिक भूमिका को जानने के लिए किया गया। इस अध्ययन में 18 वर्ष से अधिक के उन एचआईवी पॉजीटिव लोगों को लिया गया जिनमें क्षयरोग को इंगित करने वाले लक्षण/एक्स–रे था। माइकोबैक्ट्रियोलॉजिकल जांच जैसे एक्सपर्ट Rif और MGIT कल्चर किया गया। इससे प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया और थीसिस जमा की गई।

3. लिक्विड डीएसटी (एमजीआईटी 960) द्वारा एमडीआर टीबी की आशंका वाले व्यक्तियों में सेकंड लाइन क्षयरोग दवा प्रतिरोधक क्षमता की त्वरित जांच और सॉलिड आनुपातिक पद्धति से तुलनात्मक मूल्यांकन
(जैव विज्ञान, जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान के छात्रों की पीएचडी थीसिस)

एमडीआर क्षयरोगियों में एक्सडीआर क्षयरोग का जल्दी पता लग जाने से इसके रोगियों में सर्वोत्तम थेरेपी का अधिक तत्परता से इस्तेमाल किया जा सकेगा। इसलिए यह अध्ययन इन प्रयोजनों के साथ शुरू किया गया : क) लिक्विड डीएसटी प्रणाली (एमजीआईटी 960) और मानक आनुपातिक पद्धति (सॉलिड एलजे डीएसटी) द्वारा एमडीआर की आशंका वाले रोगियों में केनामाइसिन और ओफ्लोक्सिन की प्रतिरोधिता की जांच करना ख) मानक आनुपातिक पद्धति (सॉलिड एलजे डीएसटी) से केनामाइसिन और ओफ्लोक्सिन की संवेदनशीलता और विशिष्टता की जांच करना ग) एक्सडीआर–क्षयरोग के निदान के लिए प्रतिकूल परिणामों में दोनों पद्धतियों के नैदानिक रूप से सही होने का आकलन करना घ) डीएनए अनुक्रमण द्वारा प्रतिकूल प्रतिरोधिता उत्पन्न करने वाले उत्परिवर्तकों का पता लगाना।

इस अध्ययन में एसिड–फास्ट बसिलस (एएफबी) के लिए सभी मरीजों की फ्लूरोसकेन्स माइक्रोस्कोपी द्वारा स्पूटम–स्मियर माइक्रोस्कोपी की गई। सभी स्पूटम स्मियर पॉजीटिव नमूनों की लाइन प्रोब एसे द्वारा प्राथमिक दवा संवेदनशीलता के लिए जांच की गई, जबकि स्पूटम नेगेटिव नमूनों को एमजीआईटी पद्धति से सीधे कल्चर किया गया और कल्चर के पॉजीटिव होने पर इन नमूनों का एलपीए किया गया।

नैदानिक एमडीआर नमूनों कीएमजीआईटी 960 द्वारा दवा संवेदनशीलता जांच के लिए और एलजे आनुपातिक प्रणाली से ओफ्लोएक्सिन और केनामाइसिन नामक दो सेकंड लाइन दवाओं के लिए और जांच की गई।

अध्ययन पूरा हो चुका है। यह पाया गया कि लिक्विड कल्चर प्रणाली अधिक त्वरित और संवेदनशील है। इसके कारण ज्ञात एक्सीडीआर मामलों का पहले से इलाज शुरू किया गया।

4. क्षयरोगियों में दुर्लभ घटित होने वाले उत्परिवर्तकों की आनुवांशिक बहुरूपता से रिफाम्पिसिन की प्रतिरोधिता
(जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत में स्कूल ऑफ लाइन साइंसिज में जमा की गई पीएचडी थीसिसं)

एक जगह पर समान जनसंख्या में दो या उससे अधिक युग्मविकल्पियों (एलील) का होना आनुवांशिक बहुरूपता है और यह प्रत्येक में बारंबार घटित होता है। इसलिए, एम ट्यूबरक्लोसिस में इंटर स्ट्रेन पैथोबॉयोलॉजिकल भिन्नताओं की मूल उत्पत्ति को जानना समान रूप से महत्त्वपूर्ण है, ताकि रोगी के चिकित्सकीय जीनोटाइप से स्ट्रेन जीनोटाइप के अंतिम संसर्ग को जाना जा सके। कई अध्ययनों से आरआरडीआर दायरे के बाहर उत्परिवर्तकों की आवृत्ति का पता चला है और यह भारत में एम ट्यूबरक्लोसिस के रोगियों में भी पाया गया है, परंतु बहुरूपता में इसकी भूमिका और प्रभाव का अध्ययन अभी तक अच्छी तरह नहीं किया गया है। अतएव, वर्तमान अध्ययन में हमने दिल्ली क्षेत्र में स्मियर पॉजीटिव बलगम के नमूनों में एलपीए द्वारा प्रतिरोधक क्षमता की शीघ्रता से जांच करने का प्रयास किया है।

निदान की मॉलीक्यूलर निदान प्रणाली के परिणामों की उसके फिनोटाइप दवा प्रतिरोधक क्षमता जांच (एमजीआईटी 960 डीएसटी) से एलपीए की संवेदनशीलता, विशिष्टिता और परिशुद्धता को निरूपित करने के लिए तुलना की गई जिसमें फिनोटाइप डीएसटी प्रणाली के मुकाबले एलपीए द्वारा क्षयरोग का कम समय पता लगाने में उसकी सही क्षमता का पता लगाना भी शामिल है। लाइन प्रोब एसे की डीएनए पट्टी में बैड पैटर्न विश्लेषण द्वारा लोगों में माइक्रोबैक्टिरयम क्षयरोग की गहनता और उसकी आनुवांशिक बहुरूपता की व्याप्तता का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में पाए गए उत्परावर्तकों की पुष्टि के लिए डीएनए का अनुक्रमण किया गया जिससे नए उत्परिवर्तकों की भी पुष्टि हई। हमारे अध्ययन में दी गई तकनीक एमडीआर–टीबी की पहचान करने में भी उपयोगी हो सकती है। असामान्य उत्परिवर्तकों का होना आनुवांशिक बहुरूपता को प्रमाणित करता है जिसकी

दवा प्रतिरोधक और दवा संवेदी फिनोटाइप के लिए किए जाने वाले उपचार में एमडीआर–टीबी के रोगियों के बेहतर प्रबंधन में आवश्यकता हो सकती है।

5. बहु–औषधीय प्रतिरोधक एवं मोनो रिफएम्पिसिन प्रतिरोधक एम ट्यूबरक्लोसिस आइसोलेट की सेकंड लाइन ट्यूबरक्लोसिस दवा प्रतिरोधकतासे दवा सुग्राहता परीक्षण एवं स्पॉलिगोटाइपिंग द्वारा एक्सडीआर स्ट्रेन कीमॉलीक्यूलर एपीडिमीलॉजी
(जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत में स्कूल ऑफ लाइन साइंसिज में जमा की गई पीएचडी थीसिसं)
क्षयरोग पृथ्वी पर उतनी ही पुराना रोग है जितना धरती पर मानव जीवन, शायद उससे उससे भी पुराना। लेकिन हैरानी की बात यह है कि इस रोग की तरफ बहुत बाद में ध्यान दिया गया। क्षयरोग नियंत्रण की वैश्विक उपलब्धियों को और डब्लूएचओ द्वारा क्षयरोग को समाप्त करने की रणनीति की सफलता को डीआर–टीबी के प्रार्दुभाव नेखतरे में डाल दिया है। सूक्ष्मजीव प्रतिरोधिकता (एएमआर) जन स्वास्थ्य में एक प्रमुख और आवश्यक चिंता का विषय बन चुका है। बहु–औषधीय क्षयरोग (एमडीआर–टीबी को कम से कम रिफएम्पिसिन और आइजोनाइज़ड प्रतिरोधी के रूप में परिभाषित किया जाता है) तथा रिफएम्पिसिन क्षयरोग (आरआर–क्षयरोग) विशेष तौर पर घातक हैं। वैश्विक रूप से देखा जाए तो एमडीआर–टीबी के मरीजों के इलाज की सफलता की दर 49% और 65% के बीच रहती है जो कि सेकंड लाइन दवाओं से प्रतिरोधकता उत्पन्न होने से और भी घट सकती है। यह अध्ययन उन संभावित डीआर–टीबी रोगियों में दवा की प्रतिरोधकता के आधारभूत पैटर्न को जानने के लिए किया गया जिन्हें क्षयरोग प्रतिरोधक थेरेपी के रूप में पहले सेकंड लाइन दवाएं नहीं दी गई थी तथा एक्सडीआर–टीबी रोगियों में स्पॉलिगोटाइपिंग द्वारा निदान किए गएमॉलीक्यूलर परीक्षण करने के लिए किया गया।

इसके लिए संभावित दवा प्रतिरोधक क्षयरोगियों के लार के नमूनों का रिफएम्पिसिन और आइजोनाइज़ड से संवेदनशीलाता जानने के लिए परीक्षण किया गया जिसके लिए लाइन प्रोब एसे का प्रयोग किया गया। एमडीआर–टीबी और आरआर–टीबी वाले व्यक्तियों में सेकंड लाइन क्षयरोग दवाओं (केनामाइसिन,केपरिमाइसिन,लीवोफ्लॉक्सिन,मॉक्सीफ्लॉक्सिन, लाइनजोलिड और क्लोफजिमाइन) से संवेदनशीलता जानने के लिए और अधिक परीक्षण किया गया। सभी ज्ञात एक्सडीआर स्ट्रेन को स्पॉलिगोटाइपिंग द्वारा जीनोटाइपिंग की जानी है।

6. दवा प्रतिरोधक क्षयरोगियों के स्मियर नेगेटिव प्लमनरी और अतिरिक्त प्लमनरी आशंका वाले नमूनों में एमडीआर व एक्सडीआर–टीबी का पता लगाना
(महाराजा विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर के छात्रों की पीएचडी थीसिस)

स्मियर पॉजीटिव क्षयरोगियों में दवा प्रतिरोधकता को जानने के लिए बहुत काम किया गया है, परंतु स्मियर नेगेटिव प्लमनरी मामलों में उपलब्ध आंकडे पर्याप्त नहीं है। संक्रमण के आरंभिक काल में अल्प माइकोबैक्टिरियल लोड होने के कारण ऐसे मरीजों को स्मियर नेगेटिव घोषित कर दिया जाता है, जबकि वास्तव में वे पॉजीटिव होते हैं। इस प्रकार के रोगी अपने आस–पास लगातार संक्रमण फैलाते हैं। ऐसे स्मियर नेगेटिव क्षयरोगियों में माइकोबैक्टिरियम का पता लगाने और इन मामलों में दवा संवेदनशीलता/प्रतिरोधकता पैटर्न को ध्यान से देखने पर इन मामलों को बेहतर तरीके से निपटा जा सकता है। इसलिए यह अध्ययन किया गया, ताकि एमजीआईटी 960 के प्रयोग से लिक्विड कल्चर द्वारा स्मियर नेगेटिव नमूनों में एम टयूबरक्लोसिस को ज्ञात किया जाए तथा लाइन प्रोब एसे (एलपीए) के माध्यम से दवा प्रतिरोधक मामलों का भी पता लगाया जाए। एक बार कल्चर पॉजीटिव दिख जाने पर सेकंड लाइन दवाओं के लिए एमजीआईटी के इस्तेमाल से डीएसटी का नियोजन किया गया।

यह अध्ययन पूरा कर लिया गया है और आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। परिणामों से पता चलता है कि स्मियर नेगेटिव मामलों में एमडीआर क्षयरोग मामले पाए गए। इनमें से कुछ एक्सडीआर टीबी के मामले निकले। यद्यपि,इन मामलों के नमूनों का अंर्तग्रहण और जांच पूरी कर ली गई है, जबकि आंकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है। स्मियर नेगेटिव और कल्चर पॉजीटिव मामलों में दवा प्रतिरोधक क्षमता का निदान करने में यह आंकड़े बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इन मामलों के लिए स्पॉलिगोटाइपिंग की गई और परिणामों से पता चला कि अधिकांश विकृति (स्ट्रेन) सामान्यतः पहचान किए गए समूह में ही पाई गई।

<u>जारी शोध कार्य</u>

7. क्यूटेनियस क्षयरोग के निदान में पोलीमरेज़ चेन रिएक्शन (पीसीआर) और माइकोबैक्टिरिया वृद्धि सूचक ट्यूब (एमजीआईटी)
(माइक्रोबायोलॉजी विभाग, मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली के छात्र की एमडी थीसिस)
त्वचा संबंधी क्षयरोग के निदान के लिए परंपरागत निदान पद्धति, हिस्टोपैथोलॉजी, माइकोबैक्टिरिया वृद्धि सूचक ट्यूब और पॉलीमरेज चेन रिएक्शन के बीच तुलनात्मक अध्ययन के लिए अब तक भारत में पर्याप्त डाटा और पुस्तकेंनहीं है। इसलिए पॉलीमरेज चेन रिएक्शन (पीसीआर), माइकोबैक्टिरिया वृद्धि सूचक ट्यूब (एमजीआईटी) द्वारा त्वचा संबंधी क्षयरोग मामले से माइकोबैक्टिरियम क्षयरोग का पता लगाने तथा माइकोबैक्टिरिया वृद्धि सूचक ट्यूब से संदर्भ मानक के रूप में पॉलीमरेज चेन रिएक्शनके परिणामों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह अध्ययन आरंभ किया गया।

लोकनायक हस्पताल के अंतःरोगी/बाह्म रोगी विभागों में आने वाले त्वचा संबंधी ऐसी सभी रोगियों को इस अध्ययन में शामिल किया जाएगा जिनमें त्वचीय क्षयरोग के क्लीनिक लक्षण पाएं जाएंगे। इसके लिए अन्तर्वेशीय एवं बर्हिवेशीय मानदंडों के अनुसार मामलों के नमूने लिए जाएंगे और इन नमूनों की Z-Nमाइक्रोस्कोपी, एलजे मीडिया, एलजे से सॉलिड कल्चर, एमजीआईओ960 प्रणाली से लिक्विड कल्चर, इन हाउस पोलीमरेज चेन रिएक्शन और हिस्टो पैथलॉजिकल जांच की जाएगी।

8. अतिरिक्त जननिक क्षयरोग वाली महिलाओं में बांझपन पैदा करने वाले गर्भाशय एवं ट्यूबल कारकों का अध्ययन
(प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज एवं संबद्ध हस्पताल, नई दिल्ली के छात्र की एमडी थीसिस)
जननिक क्षयरोग महिलाओं में बांझपन का एक प्रमुख कारण है। महिला में होने वाला जननिक क्षयरोग शरीर में कहीं भी हमेशा उप से प्रमुख केन्द्र की ओर फैलता है। यह लम्बे समय तक उपगामी और पता न लगने वाला हो सकता है और बांझपन का कारण बन सकता है। पॉसीबैकसिलेरी प्रकृति का होने के कारण इसका पता लगाना अक्सर कठिन होता है। लाक्षणिक जननिक क्षयरोग से संबंधित कई अध्ययन किए गए हैं परंतु महिलाओं में बांझपन पर अतिरिक्त जननिक क्षयरोग के प्रभाव को लेकर लिटरेचर का अभाव है।इसलिए यह अध्ययन इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया (i)अतिरिक्त जननिक क्षयरोग वाली महिलाओं में बांझपन पैदा करने वाले गर्भाशय एवं ट्यूबल कारकों का अध्ययन(ii)अतिरिक्त जननिक क्षयरोगी रह चुकी महिलाओं में गर्भाशय एवं ट्यूबल कारकों का पता लगाना। (iii)ऐसी महिलाओं में गर्भाशय एवं ट्यूबल कारक बांझपन का आकलन करना जो अतिरिक्त जननिक क्षयरोग से ग्रस्त न रही हों।

बांझपन के निदान के लिए आने वाली सभी महिलाओं के बांझपन का नियमित गंभीर अध्ययन किया जाएगा। इसमें विस्तृत इतिहास एवं जांच, रक्त की जांच (ईसीआर के साथ पेरिफेरियल स्मियर सहित सीबीसी), मेनटॉक्स जांच, चैस्ट एक्स–रे, पति के वीर्य की जांच, मासिक धर्म पूर्व एंडोमीट्रायल बॉयोपसी, अल्ट्रासाउंड पेल्विस और डे 21 प्रोजिसट्रोन शामिल होंगे। सभी महिलाओं की उनके विगत और स्मियर माइक्रोस्कोपी, कल्चर और पैथोलॉजी जैसी जांच के माध्यम से अतिरिक्त किसी भी तरह के जननिक क्षयरोग के लिए जांच की जाएगी। चिकित्सकीय नमूनों को जीनएक्सपर्ट जांच और लिक्विड कल्चर के लिए भी भेजा जाएगा।

9. मसल–स्केल्टल क्षयरोग में चिकित्सकीय–जनसांख्यिकी प्रोफाइल एवं दवा प्रतिरोधिकता के बीच संबंध का अध्ययन
(मौलान आजाद मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली के छात्र की पीएचडी थीसिस)

भारत में मसलस्केलटल क्षयरोग के मामलों में दवा प्रतिरोधकता के पैटर्न से संबंधित आंकड़ो की कमी है, विशेषकर नए मामलों में। इसलिए यह अध्ययन इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया (i)मसलस्केलटल क्षयरोग में व्याप्त दवा प्रतिरोधकता का आकलन करना (ii) मसलस्केलटल क्षयरोग में रोगियों में दवा प्रतिरोधकता के साथ अथवा उसके बिना चिकित्सकीय विशेषताओं की तुलना और उसे सम्बद्ध करना (iii) मसलस्केलटल क्षयरोग में रोगियों में दवा प्रतिरोधकता के साथ अथवा उसके बिना रोगियों में सामाजिक–जनसांख्यिकी प्रोफाइल की तुलना और उसे सम्बद्ध करना।

इस अध्ययन में 100 मरीजों को शामिल किया जाएगा। उपरोक्त अन्तर्वेशीय एवं बर्हिवेशीय मानदंडों के अनुसार चुने गए सभी मामलों का आकलन किया जाएगा जैसे जनसांख्यिकी प्रोफाइल, चिकित्सकीय लक्षण, चिकित्सकीय संकेत, रक्त संबंधी जांच, रेडियोलॉजिकल जांच, लिक्विड कल्चर, डीएसटी, लोनस्टियन, जनेसन मीडियम (सॉलिड कल्चर) ।

वैज्ञानिक कार्यक्रमों में भागीदारी

1. 4 अप्रैल 2017 को लोक नायक चैस्ट क्लीनिक में ''दिल्ली राज्य में प्लमनरी क्षययरोग के रोगनिदान में आरएनए की भूमिका'' परियोजना को संचालित करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने चर्चा में भाग लिया ।

2. साप्ताहिक ईको क्लीनिक फिर से आयोजित करने के लिए 4 अप्रैल 2017 को एक बैठक की गई। बैठक में एसटीडीसी दिल्ली द्वारा आरएनटीसीपी स्टाफ को प्रशिक्षण देने तथा कार्यक्रम का मूल्यांकन करने के लिए माह में एक बार ईको क्लीनिक लगाने का निर्णय लिया गया।

3. वर्तमान में चलाई जा रही जैडएमक्यू परियोजना की समीक्षा करने के लिए 4 अप्रैल 2017 को एक बैठक आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में भाग लिया ।

4. यूनियन द्वारा 10 अप्रैल 2017 को निक्षय परियोजना की समीक्षा आयोजित की गई जिसमें डा के के चोपड़ा, निदेशक ने भाग लिया । इस परियोजना की यूनियन के कार्यकारी निदेशक के साथ मालवीय नगर चैस्ट क्लीनिक के क्षेत्र में स्टेट टीबी सैल ने समीक्षा की। इसमें चैस्ट क्लीनिक के अंतर्गत स्लम क्षेत्र का दौरा भी शामिल था।

5. क्षेत्र विशेष को क्षयरोग से मुक्त करने के लिए तीन विभिन्न स्थानों का सर्वेक्षण किया गया। यह सर्वेक्षण क्षयरोग के सक्रिय मामलों का पता लगाने के लिए किया गया। ऐसे लोगों की एनडीटीबी केन्द्र में जांच की गई जिनको दो सप्ताह से अधिक खांसी थी। ये क्षेत्र थे : (1) 100 क्वार्टर, दिल्ली गेट और (2) माता सुंदरी रोड झुग्गी–झोपड़ी क्षेत्र (3) स्लम क्षेत्र एनएन कॉलोनी। लक्षण वाले कुल 20 लोगों का पता चला और उनकी जांच की गई।

6. 25 अप्रैल 2017 को साप्ताहिक ईको क्लीनिक आयोजित किया गया। इसमें नए मॉडयूल में 'निक्षय प्रविष्टियों'' तथा 2017 की प्रथम तिमाही से पीएमडीटी की ई–आधारित रिपोर्टिंग पर चर्चा की गई। चर्चा में रिकॉर्ड 130 वक्ताओं तथा 350 लोगों ने भाग लिया। इसमें दिल्ली राज्य के डीटीओ तथा पर्यवेक्षक स्टाफ ने भागीदारी की। इसके अतिरिक्त छः राज्यों के एसटीओ तथा अन्य राष्ट्रीय संस्थानों की फैकल्टी ने भी में चर्चा में भाग लिया।

7. एनआईटीआरडी मे 5 व 6 मई 2017 को पीएमडीटी के आकलन के उपायों को विकसित करने के लिए दो दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने विशेषज्ञ के रूप में कार्यशाला में भाग लिया।

8. ईको ट्रस्ट ने 5 मई 2017 को ईको–सीएचडब्लू पर आधे दिन का सत्र आयोजित किया। यह सत्र ईको–एशिया परियोजना पर चर्चा करने के लिए आयोजित किया गया।

9. 12 मई 2017 को ईको प्लेटफॉर्म पर दैनिक डॉट्स की तैयारी के लिए दिल्ली राज्य समीक्षा आयोजित की गई। समीक्षा सीटीडी द्वारा आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने चर्चा के दौरान दिल्ली राज्य में दैनिक डॉटस पर कार्य करने के लिए किए गए उपायों का ब्यौरा सामने रखा।

10. 28 मई 2017 को एनआईटीआरडी की नीति संबंधी समिति की बैठक की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने वैकल्पिक अध्यक्ष के रूप में बैठक में भाग लिया। बैठक के दौरान तीन अनुसंधान परियोजनाओं पर चर्चा की गई।

11. दिल्ली राज्य के डॉटस एवं माइक्रोस्कोपी केन्द्रों में कार्य करने वाले प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए 28 मई 2017 को एनडीटीबी केन्द्र में नई तकनीकी तथा प्रचालनात्मक दिशा–निर्देशों के बारे में एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी प्रकार का जागरूकता कार्यक्रम 30 मई 2017 को भी आयोजित किया गया।

12. 31 मई 2017 को साप्ताहिक ईको क्लीनिक आयोजित किया गया। इसमें डा के के चोपड़ा, निदेशक ने ''क्षयरोगियों में दवा प्रतिरोधिता और उसक चिकित्सकीय प्रभावों'' पर वक्तव्य दिया।

13. एसटीडीसी हब की ओर से 7 जून 2017 को दिल्ली राज्य ईको क्लीनिक आयोजित किया गया। यह सत्र पैरा मेडिकल स्टाफ के लिए आयोजित किया गया। 100 प्रयोगशाला तकनीशियनों, एसटीएल्स और चिकित्सा अधिकारियों ने सत्र में भाग लिया। डा एम हनीफ, माइक्रोबायोलॉजिस्ट ने ''आरएनटीसीपी के तहत डायग्नोस्टिक एसगोरिथम'' पर व्याख्यान दिया और डा जीशान (माइक्रोबायोलॉजिस्ट) ने किए गए दौरों के ओएसई परिणामों पर चर्चा की।

14. दिल्ली सरकार के औषधालयों के चिकित्सा अधिकारियों के लिए 12 जून 2017 को एक दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला आरनएनटीसीपी के अंतर्गत नवीनतम तकनीकी एवं प्रचलानात्मक दिशा–निर्देशों के बारे में थी। लगभग 50 चिकित्सा अधिकारियों ने प्रशिक्षण लिया। इसी प्रकार की कार्यशाला 15, 20, 22 और 27 जून 2017 को आयोजित की गई।

15. एसटीडीसी हब की ओर से 16 जून 2017 को ईको प्लेटफार्म पर पीएमडीटी के कार्यो की राज्य स्तरीय समीक्षा की गई। राज्य क्षयरोग अधिकारी और निदेशक, एसटीडीसी ने सभी डीआरटीबी केन्द्रों और कल्चर डीएसटी प्रयोगशालाओं द्वारा नए पीएमडीटी मॉडयूल में निक्षय की प्रविष्टियों की समीक्षा की। प्रविष्टियों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई और समाधान किया गया।

16. बसई दारापुर मे ईएसआई हस्पताल के संकाय के लिए एक दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला आरएनटीसीपी हेतु नई तकनीकी एवं प्रचलानात्मक दिशा–निर्देशों के बारे में थी। इसी तरह की कार्यशाला ईएसआई औषधालयो के चिकित्सा अधिकारियों के लिए 28 जून 2017 को आयोजित की गई।

17. इन्जेक्शन से नशीली दवाएं लेने वालों में सक्रिय मामलों का पता लगाने के लिए कार्य निर्देशों को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से 28 जून 2017 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। डब्लूएचओ, राज्य क्षयरोग प्रकोष्ठ, एनएसीओ के प्रतिनिधियों और एसपीएम एवं एनडीएमसी चैस्ट क्लीनिक के जिला क्षयरोग अधिकारियों ने स्टाफ के साथ बैठक में हिस्सा लिया।

18. आरएनटीसीपी के अंतर्गत कार्टिज आधारित न्यूसिलिक एसिड एम्पलीफिकेशन जांच (सीबीएनएएटी) वाली मोबाइल वैन की तकनीकी विशिष्टियों को अंतिम रूप देने के लिए

तकनीकी विशिष्टि समिति की 4 जुलाई 2017 को बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता डा बी डी अथानी, विशेष डीजीएचएस MoHFWने की। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने समिति के सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया।

19. एसटीडीसी हब की ओर से 5 जुलाई 2017 को ईको क्लीनिक आयोजित किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने सक्रिय मामलों का पता लगाने पर वक्तव्य दिया। डा बी के वशिष्ट, डीटीओ, बीजेआरएम हस्पताल ने कार्यक्षेत्र के अपने अनुभवों को सांझा किया।

20. 10 जुलाई 2017 को आरबीआईपीएमटी की वैज्ञानिक समिति की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक और डा एन हनीफ माइक्रोबायोलॉजिस्ट ने सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया। बैठक में डीएनबी छात्र के एक थीसिस प्रोटोकोल पर चर्चा की गई और कुछ सामान्य फेरबदल के साथ प्रोटोकोल की अनुशंसा की गई।

21. 13 जुलाई 2017 को ईएसआई हस्पताल, रोहिणी में सीएमई आयोजित की गई। हस्पताल के विभिन्न विशेषज्ञों ने सीएमई में भाग लिया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 'टीओजी के अंतर्गत उपचार' विषय पर व्याख्यान दिया। आठ फैकल्टी सदस्यों और रेजीडेंट डॉक्टरों ने सीएमई में हिस्सा लिया।

22. 13 जुलाई 2017 को ईसीएचओ परियोजना के साथ बैठक की गई। यह बैठक चार सरकारी मेडिकल और चार निजी हस्पतालों के साथ एनडीटीबी ईसीएचओ परियोजना को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित की गई। यह बैठक उनकी जानकारी को साझा करने एवं केस पर चर्चा करने के लिए की गई।

23. 14 जुलाई 2017 को एसटीडीसी दिल्ली में दिल्ली राज्य पीएमडीटी समीक्षा बैठक आयोजित की गई। कल्चर डीएसटी प्रयोगशालाओं तथा डीआरटीबी केन्द्रों के नोडल अधिकारियों ने तिमाही की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा प्रयोगशालाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई।

24. टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया में 24 जुलाई 2017 को एक बैठक की गई जिसमें 72वीं एनएटीसीओएन के वैज्ञानिक कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने हैदराबाद, जहां एनएटीसीओएन आयोजित की जाएगी, से आए आयोजकों के साथ कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए बैठक में भाग लिया।

25. 26 जुलाई 2017 को नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में दिल्ली राज्य आरएनटीसीपी समीक्षा बैठक आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक, एसटीडीसी ने 25 चैस्ट क्लीनिकों की तिमाही रिपोर्टो का विश्लेषण सामने रखा। बैठक में आरएनटीसीपी की विभिन्न

गतिविधियों पर चर्चा की गई जिसमें क्षयरोग प्रबंधन की चुनौतियों और निक्षय प्रविष्टियों पर चर्चा किया जाना शामिल था।

26. 28 जुलाई 2017 को एनआईटीआरडी की नीति संबंधी समिति की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने अध्यक्ष के तौर पर बैठक में भाग लिया। डीएनबी छात्रों के दो प्रोटोकॉल पर चर्चा की गई और उसे स्वीकृति दी गई।

27. लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, दिल्ली की केन्द्रीय समिति की 31 अगस्त 2017 को बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में भाग लिया और नई तकनीकी एवं प्रचलानात्मक दिशा–निर्देशों के अनुरूप आरएनटीसीपी के अंतर्गत क्षयरोग प्रबंधन पर व्याख्यान दिया।

28. 03 अगस्त 2017 को कम्यूनिटी मेडीसन विभाग, मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज में दिल्ली राज्य टास्क फोर्स की बैठक हुई। एनडीटीबी केन्द्र के संकाय ने बैठक में सदस्य के रूप में भाग लिया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 'आरएनटीसीपी के नए टीओजी के अंतर्गत उपचार' विषय पर व्याख्यान दिया।

29. 08 अगस्त 2017 को एसपीवाईएम, दरियागंज के प्रतिनिधियों और राज्य क्षयरोग अधिकारी के साथ बैठक हुई। बैठक में दिल्ली के नाइट शैल्टरों तथा तिहाड़ जेल में क्षयरोग के मामलों का सक्रियता से पता लगाने पर चर्चा हुई।

30. डीएसएसी की राज्य ओवरसाइट समिति की 09 अगस्त 2017 को डीएसएसीएस कार्यालय में बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने दिल्ली राज्य आरएनटीसीपी के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

31. जीएलआरए एनजीओ के अपोलो टायर फाउंडेशन के क्षेत्र में काम करने वाले कामगारों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र में काम करने वाले लगभग 40 कामगारों को क्षयरोग के लक्षणों का पता लगाने तथा आरएनटीसीपी के अंतर्गत क्षयरोग के निदान एवं उपचार के दिशा–निर्देशों से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया।

32. 30 अगस्त 2017 को एसटीओ कार्यालय में टीबी–एचआईवी समन्वय समिति की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में भाग लिया। बैठक में एआरटी के चिकित्सा अधिकारियों और स्टाफ को टीओजी तथा दैनिक डॉट का प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया गया। बैठक में सभी पीएलएचआईवी मामलों में आईएनएच प्रॉफिलेक्सिस देने का भी फैसला किया गया।

33. एसपीवाईएम नाइट शैल्टरों के लिए काम करने वाले क्षेत्र कार्यकर्त्ताओं के लिए 31.08.2017 को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डा शंकर माटा (एपीडिमालॉजिस्ट) ने क्षयरोग की आशंका वाले लोगों की जांच तथा नाइट शैल्टरों में रहने वाले लोगों की क्षयरोग जांच करने की योजना के बारे में बताया।

34. एसटीडीसी हब की ओर से 06 सितम्बर 2017 को ईको क्लीनिक संचालित किया गया। एनडीटीबी केन्द्र के डा हिमांशु, माइक्रोबायोलॉजिस्ट ने एनपीए के अवलोकन पर संक्षिप्त जानकारी दी। इसके बाद क्लीनिक केस पर चर्चा की गई। डीटीओ नरेला ने केस प्रस्तुत किया। सत्र के अंत में एलपीए से संबंधित सिफारिशों तथा केस पर चर्चा की गई।

35. दिल्ली क्षयरोग संघ ने 07 सितम्बर 2017 को गीता घाट नाइट शैल्टर में रोगी प्रदाता बैठक आयोजित की। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने कार्यक्रम में भाग लिया और निराश्रित रोगियों की समस्याओं की चर्चा की तथा क्षयरोग के शुरूआती लक्षणों की जानकारी दी।

36. 12 से 14 सितम्बर 2017 को चंडीगढ़ में आरएनटीसीपी की राष्ट्रीय समीक्षा बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में भाग लिया और बैठक में दिल्ली आरएनटीसीपी के आंकड़े प्रस्तुत किए।

37. वाणिज्यिक एवं औद्योगिक मंडल ने 23 से 25 सितम्बर तक दिल्ली में स्वास्थ्य रक्षा पर तीन दिन की संगोष्ठी आयोजित की। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने संगोष्ठी में भाग लिया और स्वास्थ्य रक्षा, उपाय और वहनीयता पर व्याख्यान दिया।

38. एसटीडीसी हब की ओर से 04 अक्तूबर 2017 को ईको क्लीनिक संचालित किया गया। डा सुंदरी, चिकित्सा अधिकारी, डब्लूएचओ एसईएसआर कार्यालय ने 'डायग्नोस्टिक सर्विसिज – फर्स्ट पिलर जव टीबी एलमिनेशन बाय 2025' (नैदानिक सेवाएं – 2025 तक क्षयरोग उन्मूलन का प्रथम आधार) विषय पर व्याख्यान दिया। इसके बाद क्लीनिकल चर्चा की गई।

39. राष्ट्रीय क्षयरोग कार्यक्रम ने यूएसएआईडी की सहायता से क्षयरोग प्रयोगशाला निदान नेटवर्क का व्यापक मूल्यांकन करने का निर्णय लिया है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य भारत के क्षयरोग निदान नेटवर्क का आकलन करना है जिसमें दिशा–निर्देश, प्रयोगशाला ढांचा और नैदानिक तकनीकों को नियोजित एवं उनका उपयोग करना शामिल है। इस संबंध में 6 अक्तूबर 2017 को नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में बैठक की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक और डा एम हनीफ, बैक्टिरियोलॉजिस्ट ने बैठक में भाग लिया।

40. एनडीटीबी की केन्द्रीय प्रयोगशाला के एनएबीएल प्रत्यायन के लिए 16 से 18 अक्तूबर 2017 को दूसरा मूल्यांकन दौरा रखा गया। इसमें पहले तैयारी दौरे में ज्ञात किए गए मुद्दों की समीक्षा एवं समाधान किया गया।

41. आईसीएमआर मुख्यालय मे 25 अक्तूबर 2017 को मामलों का सक्रियतापूर्वक पता लगाने से संबंधित बैठक आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में भाग लिया।

42. 26 अक्तूबर 2017 को भारतीय क्षयरोग संघ द्वारा राष्ट्रपति भवन में टीबी सील अभियान हुआ जहां भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने टीबी सील अभियान का उद्घाटन किया। एनडीटीबी केन्द्र के संकाय ने इस समारोह में भाग लिया।

43. हिन्दू राव हस्पताल द्वारा 27 अक्तूबर 2017 को सीएमई आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक तथा डा एम हनीफ बैक्टिरियोलॉजिस्ट ने इसमें भाग लिया और क्रमशः 'एमडीआर क्षयरोग के प्रबंधन'' तथा ''आरएनटीसीपी के अंतर्गत ऐल्गिरिदम के निदान'' पर व्याख्यान दिया।

44. एसटीडीसी हब की ओर से 1 नवम्बर 2017 को ईको क्लीनिक आयोजित किया गया।
डा.वसीम ले एमजीआईटी – 960 प्रणाली से एम ट्यूबरक्लोसिस की त्वरित पहचान एवं दवा सुग्राहता पर व्याख्यान दिया। डा लॉरीन, चिकित्सा अधिकारी, डीएफआईटी ने केस का प्रस्तुनिकरण दिया।

45. 13 नवम्बर 2017 को नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की दिल्ली राज्य आरएनटीसीपी समीक्षा बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक, एसटीडीसी ने 25 चैस्ट क्लीनिकों की तिमाही रिपोर्टों का विश्लेषण सामने रखा। बैठक में नए नैदानिक एल्गिरिदम और दिल्ली मे दैनिक डॉटस का आरंभ किया।

46. 13 नवम्बर 2017 को एनआईटीआरडी नई दिल्ली की नीतिगत समिति की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में चार परियोजनाओं पर चर्चा की गई और शामिल करने के लिए कुछ बदलावों का सुझाव दिया गया।

47. श्री अनिल बैजल, माननीय उप राज्यपाल, दिल्ली ने बुधवार, 15 नवम्बर 2017 को राज निवास, दिल्ली में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के लिए 68वें टीबी सील सेल अभियान का शुभारंभ किया। इस वर्ष के टीबी सील अभियान का विषय हैं – ''क्लीन इंडिया–टीबी फ्री इंडिया''। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने अभियान में भाग लिया।

48. नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की केन्द्रीय प्रयोगशाला के एनएबीएल प्रत्यायन (accreditation) के लिए 16 से 18 नवम्बर 2017 तक मूल्यांकन दौरा किया गया। तैयारी दौरे के दौरान पहचान किए गए विषयों की समीक्षा एवं समाधान किया गया।

49. एसोसिएशन ऑफ फीजिशियन ऑफ इंडिया ने 19 नवम्बर 2017 को होटल अशोक, चाणक्यपुरी में अपने अठ्ाइसवी वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने सम्मेलन में भाग लिया और ''एमडीआर क्षयरोग–वर्तमान अवधारणा'' विषय पर व्याख्यान दिया।

50.केन्द्र ने 20 नवम्बर 2017 को अपना 77वां वार्षिक दिवस मनाया। इस अवसर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

51. सेन्ट्रल टीबी डिवीजन द्वारा 21 से 23 नवम्बर 2017 तक शिमला में क्षेत्रीय पीएमडीटी समीक्षा एवं उत्तरी क्षेत्र की योजना बैठक आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक और डा एन हनीफ, माइक्रोबायोलॉजिस्ट दिल्ली राज्य के दल के रूप में बैठक में भाग लिया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में कमज़ोर समूहों में मामलों का सक्रियतापूर्वक पता लगाने पर व्याख्यान दिया ।

52.एसटीडीसी हब की ओर से 28 नवम्बर 2017 को ईको क्लीनिक आयोजित किया गया। यह क्लीनिक सक्रिय मामलों का पता लगाने के लिए 4 दिसम्बर 2017 से आरंभ होने वाले तीसरे चरण की तैयारियों से संबंधित था।

53. 72वें एनएटीसीओएन के वैज्ञानिक कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए 11 दिसम्बर 2017 को टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया में एक बैठक की गई। कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए डा के के चोपड़ा, निदेशक ने वैज्ञानिक समिति के सदस्य के रूप में भाग लिया।

54. ईसीएचओ–इंडिया ने नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र के साथ एक करार किया। यह करार 12 दिसम्बर 2017 से केन्द्र से स्वतंत्र ईसीएचओ चलाने के लिए किया गया।

55. एसटीडीसी हब की ओर से 13 दिसम्बर 2017 को ईको क्लीनिक आयोजित किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक, एनडीटीबी ने दिल्ली में एसीएफ की मध्य कालीन समीक्षा पर एक व्याख्यान दिया।

56. डा के के चोपड़ा निदेशक ने जन स्वास्थ्य विशेषज्ञ के तौर पर सोशल नेटवर्क ''लीवरेजिंग पेशेन्ट'' शीर्षक से एक अध्ययन मे भाग लिया। यह अध्ययन भारत में ज्ञात किए जा रहे क्षयरोग से बाहर आने के लिए दिल्ली राज्य क्षयरोग कार्यक्रम के सहयोग से जे–पीएएल

द्वारा किया गया। इस संबंध में 19 दिसम्बर 2017 को कार्यक्षेत्र में काम करने वाले दल के साथ चर्चा की गई।

57. 22 दिसम्बर 2017 को केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग के साथ वीडिया कान्फ्रेंस की गई। यह कान्फ्रेंस प्रदाताओं एवं रोगियों के लिए निक्षय प्रविष्टियो, डीवीडीएमएस और डीबीटी हस्तांतरण के लिए की गई।

58. दिल्ली राज्य में एनटीएम संसूचन के लिए एक छात्र के एनआईटीआरडी में पीएचडी पंजीकरण संबंधी एक बैठक 29 दिसम्बर 2017 को की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक और डा एन हनीफ, माइक्रोबायोलॉजिस्ट इसके सह–गाइड हैं।

59. 29 दिसम्बर 2017 को एनआईटीआरडी में एक बैठक गई। यह बैठक मेडिकल कॉलेजों तथा प्रमुख निजी हस्पतालों में स्पोक का विस्तार करने के लिए की गई। बैठक मे 7 मेडिकल कॉलजों और 7 निजी हस्पतालों में स्पोक के रूप में तथा एसटीडीसी (एनडीटीबीसी) हब के रूप में गतिविधियों का विस्तार करने के लिए की गई।

60. एसटीओ और ईसीएचओ भारत दल के साथ 3 जनवरी 2018 को एक बैठक की गई। यह बैठक डीटीओ और मेडिकल कॉलजों तथा प्रमुख निजी हस्पतालों के साथ पहले व तीसरे शुक्रवार को स्वतंत्र एसटीडीसी ईसीएचओ शुरू करने की कार्य प्रणाली को अंतिम रूप देने के लिए की गई।

61. जिला एसटीएल, टीएल के लिए प्रायोगिक सीबीएनएएटी प्रशिक्षण का सत्र संचालित किया गय जहां दिल्ली राज्य में सीबीएनएएटी मशीनें संस्थापित की गई। 3 जून 2018 को 7 भागीदारों ने इसमें भाग लिया। 4, 5, 6 और 9 जनवरी 2018 को इसी तरह के सत्र आयोजित किए गए।

62. जीएलआरए प्रबंधन के साथ दिल्ली राज्य के चार जिलों में चलाई जा रही परियोजनाओं से संबंधित बैठक आयोजित की गई। 23 जनवरी 2018 को यह बैठक परियोजनाओं की समीक्षा तथा प्रस्तावित सीएमई पर चर्चा करने के लिए की गई।

63. 5 जनवरी 2018 को फाइंड इंडिया के प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक की गई। यह बैठक एनडीटीबी केन्द्र में एलआईएसएस (प्रयोगशाला सूचना प्रबंधन प्रणाली) लगाए जाने के लिए की गई।

64. एक संगठन द्वारा संचालित जीएलआरए परियोजनाओं (दिल्ली के चार राज्यों मे एमडीआर मामलों की गृह आधारित देखभाल और संजय गांधी ट्रांसपोर्ट नगर में ट्रक चलाने वालों के

लिए परियोजना) के पदाधिकारियों के साथ 9 जनवरी 2018 को एक दिन की समीक्षा बैठक की गई। बैठक में इन चार जिलों के जिला क्षयरोग अधिकारियों की उपस्थिति में परियोजनाओं की समीक्षा की गई।

65. बीजेआरएम चैस्ट क्लीनिक और एनजीओ जीएलएआरए द्वारा सक्रियापूर्वक मामलों का पता लगाने के लिए संचालित की जा रही परियोजना की समीक्षा की 10 जनवरी 2018 को एसटीडीसी में समीक्षा की गई। परियोजना की अवधि के दौरान किए गए सभी 256 चैस्ट एक्स–रे फिर से देखे गए और उसके अनुसार परामर्श दिया गया।

66. केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग पीएमडीटी के मूल्यांकन का प्रारूप विकसित करने की प्रक्रिया में हैं। यह कार्य एनआइटीआरडी की सहायता से किया जा रहा है । इस का उद्देश्य इन प्रारूपों का प्रयोग करते हुए व्यावर्हता को समझना तथा पीएमडीटी के क्रियान्वयन की स्थिति को जानना है। इस संदर्भ में एलएन डीआरटीबी केन्द्र का पीएमडीटी मूल्यांकन किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक और डा शंकर माटा, एपीडिमालॉजिस्ट दल के सदस्य थे और 15 से 17 जनवरी 2018 तक मूल्यांकन किया गया।

67. एनडीटीबी केन्द्र में 18 जनवरी 2018 को दिल्ली राज्य आरएनटीसीपी की तिमाही बैठक समीक्षा बैठक एवं पीआईपी से संबंधित डीटीओ जागरूकता कार्यक्रम हुआ। बैठक में 2018 की दूसरी व तीसरी तिमाही की समीक्षा एवं चर्चा की गई। केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग के परामर्शक ने परियोजना कार्यान्वयन योजना (पीआईपी) के नए प्रारूपों तथा औचित्य पर विचार–विमर्श किया।

68. एनडीटीबी के दल ने क्षयरोग पर जागरूकता के लिए 20 जनवरी 2018 को मानव रचना विश्वविद्यालय का दौरा किया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने क्षयरोग के कारणों, लक्षणों, प्रबंधन और रोकथाम के बारे में बताया। दल ने सक्रिय मामलों का पता लगाने के लिए कर्मचारियों की जांच भी की । 100 कर्मचारियों में से लक्षण वाले दस लोगों की जांच की गई और उन्हें निदान एवं उपचार के लिए रेफर किया गया।

69. आरएनटीसीपी के अंतर्गत कार्य करने वाले डाक्टरों के लिए 23 जनवरी 2018 को एनडीटीबी केन्द्र में एक सीएमई आयोजित की गई। यह दिल्ली राज्य क्षयरोग प्रकोष्ठ और एनजीओ जीएलएआरए की सहयोग से आयोजित की गई। 50 से अधिक डॉक्टरों ने सीएमई में भाग लिया।

70. 24 जनवरी 2018 को एनडीटीबी केन्द्र में ''दिल्ली स्टेट वार्म लाइन कन्सलटेशन सर्विस'' पर एक परियोजना चर्चा बैठक की गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रतिनिधियों, दिल्ली

आरएनटीसीपी और एसटीओ ने बैठक में भाग लिया तथा एनडीटीबी केन्द्र द्वारा चलाई जाने वाली परियोजना के प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

71. 30 जनवरी 2018 को एनडीटीबी केन्द्र में दिल्ली राज्य प्रचालनात्मक अनुसंधान समिति की बैठक हुई। बैठक में कुल 30 नए और पुराने ओआर प्रस्तावों को प्रस्तुत किया गया और चर्चा की गई। एनडीटीबी केन्द्र की 4 परियोजनाओं पर भी चर्चा की गई और अनुमोदन किया गया।

72. एसटीडीसी हब की ओर से 31 जनवरी 2018 को ईसीएचओ क्लीनिक आयोजित किया गया। इसमे निक्षय प्रविष्टियां और जिला व राज्यों की पीआईपी की समीक्षा की गई।

73. संभावित क्षयरोग मामलों के रेफरल के लिए पुराने क्षयरोगियों की परियोजना पर चर्चा के लिए 03 फरवरी 2018 को जे पॉल संगठन के साथ मिल कर बैठक की गई। बैठक में परियोजना के लिए पांच चैस्ट क्लीनिकों को लेने का निर्णय लिया गया जो कि पूरे राज्य के प्रतिनिधि होंगे।

74. एमडीआर क्षयरोग मामलों मे mRMAका पता लगाने के लिए सीरोलॉजिकल जांच का आकलन करने के लिए 3 फरवरी 2018 को एलएन चैस्ट क्लीनिक मे परियोजना की मध्यावधि समीक्षा बैठक हुई।

75. क्षयरोग ईको कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने के लिए ढांचा तैयार करने हेतु सीडीसी द्वारा एनआईटीआरडी दिल्ली में 6 व 7 फरवरी 2018 को दो दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने कार्यशाला में भाग लिया।

76. जिनेवा के यूएसएआईडी दल ने फाइंड दल के साथ 6 फरवरी 2018 को एनडीटीबी केन्द्र की प्रयोगशाला का दौरा किया। यह दौरा आरएनटीसीपी के तहत भारत में प्रयोगशाला नेटवर्क का आकलन करने के लिए किया गया।
77. एसटीडीसी हब की ओर से 7 फरवरी 2018 को ईसीएचओ क्लीनिक आयोजित किया गया। इसमे एनडीटीबी केन्द्र के डा कौशल, माइक्रोबायोलॉजिस्ट ने 'एमडीआर मामलों में एलपीए ज्ञात करना और इसके चिकित्सकीय बाध्यताओं' पर व्याख्यान दिया। इसके बाद बिजवासन चैस्ट क्लीनिक के डा नीरज ने केस का प्रस्तुतीकरण दिया।

78. 8 फरवरी 2018 को जामिया मिलिया हमदर्द मेडिकल कॉलेज की दिल्ली स्टेट टॉस्क फोर्स कीं बैठक हुई। एनडीटीबी केन्द्र से डा के के चोपड़ा, निदेशक और डा हनीफ बैक्टिरियोलॉजिस्ट ने सदस्यों के रूप में बैठक में भाग लिया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 'टीओजी के अनुसार क्षयरोग एवं एमडीआर मामलों के प्रबंधन' पर व्याख्यान दिया।

79. 17 फरवरी 2018 को ईसीएचओ इंडिया परियोजना के प्रबंधकों और राज्य क्षयरोग अधिकारी के साथ मेडिकल कॉलेजों तथा प्रमुख निजी हस्पतालों में स्पोक का विस्तार करने के लिए बैठक की गईं।

80 दक्षिण एशिया के आईएलओ और भारत के लिए कंट्री कार्यालय द्वारा 22 फरवरी 2018 को नई दिल्ली में ''कार्य जगत में क्षयरोग एवं एचआईवी पर राष्ट्रीय निजी क्षेत्र परामर्श'' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने पैनलिस्ट के रूप में कार्यशाला में भाग लिया और ''कार्यस्थलों पर क्षयरोग एवं एचआईवी पर प्रतिक्रिया में कम्पनियों की भूमिका : उपाय'' विषय पर समूह चर्चा में भाग लिया।

81. 23 फरवरी 2018 को फाइंड इंडिया के प्रमुख डा सरीन एवं एसटीओ के साथ मोबाइल सीबीएनएएटी मशीन के प्रयोग की परियोजना के बारे में बैठक हुई। बैठक में मोहल्ला क्लीनिकों के निकट परियोजना को संचालित करने का निर्णय लिया गया।

82. आर के पुरम चैस्ट क्लीनिक द्वारा 26 फरवरी 2018 को उपचार के लिए एमडीआर मामलों पर जागरूकता के लिए एक जागरूकता बैठक आयोजित की गई। डा हनीफ, बैक्टिरियोलॉजिस्ट ने बैठक में भाग लिया।

83. 27 फरवरी 2018 को उपमहानिदेशक, एनएसीओ, डा के एस सचदेवा और एसटीओ, दिल्ली के साथ डाक्टरों तथा एमडीआर रोगियों के लिए जागरूकता परियोजना से संबंधित बैठक हुई। पूर्वी दिल्ली में परियोजना चलाने का निर्णय लिया गया।

84. 1 मार्च 2018 को एनआईटीआरडी की नीतिगत समिति की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया। बैठक में तीन अनुसंधान परियोजनाओं पर चर्चा हुई और इनको मामूली परिवर्तनों के साथ स्वीकृत किया गया।

85. एसटीडीसी की ओर से 1 मार्च 2018 को ईसीएचओ क्लीनिक संचालित किया गया। एनडीटीबी केन्द्र के डा हिमांशु ने संक्रमण नियंत्रण पर व्याख्यान दिया। केस का प्रस्तुतिकरण डा राहुल, एसटीएलसी, लोकनायक हस्तपाल ने किया।

86.13 मार्च 2018 को स्वास्थ्य मंत्रालय और एफडब्लू, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा ग्लोबल स्टॉप टीबी द्वारा संयुक्त रूप से ''दिल्ली एंड टीबी समिट'' आयोजित किया गया। भारती के माननीय प्रधानमंत्री ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई और लोगों को संबोधित किया ।

87. डा के के चोपड़ा, निदेशक ने एनडीटीबीसी के संकाय सदस्यों के साथ सम्मेलन में भाग लिया और इस अवसर पर राज्य सभा टीवी पर हिंदी व अंग्रेजी दोनों में वार्ता भी की। इस कार्यक्रम की जानकारी डीडी न्यूज़ पर भी दी गई।

88. 14 मार्च 2018 को चौ. देस राज चैस्ट क्लीनिक में सीएमई का आयोजन किया गया। डॉक्टरों तथा पैरा मेडिकल स्टाफ ने सीएमई में भाग लिया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 'टीओजी के अनुसार क्षयरोग एवं एमडीआर मामलों के प्रबंधन' पर व्याख्यान दिया।

89. विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर 20 मार्च 2018 को मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज में सीएमई का आयोजन किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 'टीओजी के अनुसार क्षयरोग एवं एमडीआर मामलों के प्रबंधन' पर व्याख्यान दिया।

90. 21 मार्च 2018 को आचार्य भीष्म हस्पताल, मोती नगर में सीएमई का आयोजन किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 'आरएनटीसीपी के अंतर्गत दवा संवेदी उपचार एवं दवा प्रतिरोधक क्षयरोग' पर व्याख्यान दिया।

91. विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर 22 मार्च 2018 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में सीएमआई का आयोजन किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने ''आरएनओसीपी कार्यक्रम संबंधी मुद्दे'' विषय पर व्याख्यान दिया।

92. विश्व क्षयरोग आयोजन के अवसर पर 23 मार्च 2018 को हेडगेवार हस्पताल में सीएमई का आयोजन किया गया। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 'टीओजी के अनुसार क्षयरोग एवं एमडीआर मामलों के प्रबंधन' पर व्याख्यान दिया।

93. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 24 मार्च 2018 को विश्व क्षयरोग दिवस मनाया। यह कार्यक्रम माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री अश्विनी कुमार और श्रीमती अनुप्रिया पटेल की उपस्थिति में मनाया गया। इसमें आरएनटीसीपी के लिए नई पहल का शुभारंभ किया गया। यह कार्यक्रम राम मनोहर लोहिया हस्पताल, नई दिल्ली में हुआ।

94. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के मेडिसन विभाग में 24 मार्च 2018 को विश्व क्षयरोग दिवस के आयोजन पर सीएमई संचालित की गई। इसमें क्षयरोग पर चर्चा की गई और डा के के चोपड़ा, निदेशक ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

95.डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 25 मार्च 2018 को डीडी न्यूज–टोटल हेल्थ कार्यक्रम में क्षयरोग के उपचार एवं रोकथाम पर चर्चा की।

96.विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर 28मार्च 2018 को सीएमई का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डा कीर्ति भूषण, निदेशक सामान्य स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार मुख्य अतिथि थे। डा के के चोपड़ा, निदेशक कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने ''दिल्ली में क्षयरोग नियंत्रण की चुनौतियां'' विषय पर सम्बोधित किया।

97. उत्तर क्षेत्र के राज्यों के लिए 31 मार्च और 1 व 2 अप्रैल 2018 को मनाली में क्षेत्रीय ओआर कार्यशाला का आयोजन किया गया। तीन दिनों के दौरान क्षमता निर्माण और विभिन्न राज्यों के मसौदा प्रस्ताव पर चर्चा की गई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने कार्यशाला में भाग लिया।

बैठकें

1. 3 मई 2017 को दिल्ली क्षयरोग संघ की कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया।

2. 13 मई 2017 को एनआईटीआरडी में एक चर्चा बैठक हुई। बैठक में सभी डीआरटीबी स्थलों और एसटीडीसी दिल्ली तथा दिल्ली राज्य क्षयरोग कार्यालय में ईसीएचओ केंद्रित चर्चा का विस्तार करने पर विचार–विमर्श किया गया। एसटीडीसी दिल्ली के निदेशक तथा सभी डीआरटीबी स्थलों के प्रतिनिधियों ने चर्चा में भाग लिया।

3. एनडीटीबी केन्द्र के स्टाफ (समूह ग व घ) के लिए 5 जून 2017 को विभागीय पदोन्नति बैठक हुई। इस बैठक में स्टाफ की पदोन्नति पर चर्चा की गई और उसकी अनुशंसाएं स्वीकृति हेतु एनडीटीबी केन्द्र की प्रबंधन समिति को भेजी गई।

4. एनडीटीबी केन्द्र के स्टाफ (समूह ग व घ) के लिए 12 जून 2017 को विभागीय पदोन्नति बैठक हुई। इस बैठक में स्टाफ की पदोन्नति पर चर्चा की गई और उसकी अनुशंसाएं स्वीकृति हेतु एनडीटीबी केन्द्र की प्रबंधन समिति को भेजी गई।

5. 12 जून 2017 को नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की प्रबंधन समिति की बैठक डा एल एस चौहान की अध्यक्षता में एनडीटीबी केन्द्र के सम्मेलन कक्ष में हुई। बैठक में प्रशासन से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा की गई।

6. डा के के चोपड़ा, निदेशक ने 1 अगस्त 2017 को टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया की बैठक में भाग लिया। बैठक में वर्ष के लिए टीबी सील डिजाइन पर चर्चा की गई तथा

'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' को टीबी सील के डिजाइन के रूप में रखने का निर्णय लिया गया।

7. टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित एनएटीसीओएन 2017 आन्ध्र प्रदेश में आयोजित की जाएगी। एनएटीसीओएन बैठक के लिए वैज्ञानिक कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए 16 अगस्त 2017 और 29 अगस्त 2017 को बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में भाग लिया।

8. 8 सितम्बर 2017 को एनआईटीआरडी की नीति संबंधी समिति की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में बतौर सदस्य भाग लिया। बैठक में डीएनबी छात्रों द्वारा दिए गए प्रोटोकोल पर चर्चा हुई और मामूली बदलावों के बाद इसे अंतिम रूप दिया गया।

9. एनएटीसीओएन 2017 के लिए सामान्य व्याख्यानों का चयन करने के लिए 13.09.2017 को टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया में बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने समिति के सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया। बैठक में विभिन्न व्याख्यानों के लिए पुरस्कार विजेता चुने गए और पुरस्कारों का चयन किया गया।

10. टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित एनएटीसीओएन 2017 आन्ध्रा प्रदेश में आयोजित की जाएगी। एनएटीसीओएन बैठक के लिए वैज्ञानिक कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए 20 सितम्बर 2017 और 25 सितम्बर 2017 को बैठक हुई। डा के के चोपड़ा, निदेशक ने बैठक में भाग लिया।

11. 24 अक्तूबर 2017 को नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की प्रबंधन समिति की बैठक डा वी के वोहरा की अध्यक्षता में एनडीटीबी केन्द्र के सम्मेलन कक्ष में हुई। बैठक में प्रशासन से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक में वार्षिक रिपोर्ट और बजट अनुमान का अनुमोदन किया गया।

12. 72वें एनएटीसीओएन के लिए वैज्ञानिक कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए 2 नवम्बर 2017 और 17 नवम्बर 2017 को टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया में बैठक हुई। कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए डा के के चोपड़ा, निदेशक ने वैज्ञानिक समिति के सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया।

13. 28 फरवरी 2017 को दिल्ली टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया की बैठक हुई जिसमें उनके भवन के रख–रखाव से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। डा के के चोपड़ा ने इसके सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया।

14. एसीएसएम सामग्री का चयन करने तथा क्षयरोग जागरूकता कार्यक्रम के लिए संचालित की जाने वाली गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए 1 मार्च 2018 को बैठक हुई। एनआरएचएम और डीजीएचएस के प्रतिनिधियों ने भी बैठक में हिस्सा लिया।

15. 16 अप्रैल 2018 को टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया की केन्द्रीय समिति के बैठक हुई। डा के के चोपड़ा ने सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया।

16. 26 अप्रैल 2018 को टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया की आम सभा की बैठक हुई। डा के के चोपड़ा ने एनडीटीबी केन्द्र के संकाय सदस्य के रूप में उक्त बैठक में भाग लिया।

नैदानिक अनुभाग

नैदानिक अनुभाग एनडीटीबी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है जिसकी शुरूआत 1940 में आदर्श क्षयरोग क्लीनिक के रूप में हुई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य सभी रोगियों का श्रेष्ठ इलाज और देखभाल करना है। रोगियों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ यह सभी प्रकार के जटिल तथा मुश्किल मामलों के लिए राज्य के भीतर एवं दिल्ली के पड़ोसी राज्यों में अति विशेषज्ञता प्राप्त रेफरल ओपीडी के रूप में भी प्रतिष्ठित है।

हालांकि, इसकी ओपीडी राज्य स्तरीय क्षयरोग केन्द्र के भीतर है परंतु यह बड़ी संख्या में विविध प्लमनरी से पीड़ित रोगी आते है। इन रोगियों में दमा, सीओपीडी, निमोनिया, आईएलडी, प्लमनरी हाईडेटीडोसिस और असाध्य रोगों से पीड़ित मरीजों के साथ–साथ प्लमनरी क्षयरोग के अनैदानिक मामले भी आते हैं। हमारी ओपीडी प्रतिदिन सुबह 9.00 से दोपहर 1.00 तक चलती है जिसमें हमारे रेडियालॉजी, फार्मेसी, चिकित्सा से जुड़े सामाजिक कार्यकर्त्ताओ और प्रयोगशाला सेवाओं का भी पूरा सहयोग रहता है।

पिछले 5 वर्षो में ओपीडी में आने वालों की संख्या की संख्या 100 प्रतिशत बढ़ी है जिसमें कुल 22,599 रोगी देखे गए और उनका इलाज किया गया। लोगों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए इस वर्ष निदान अनुभाग कुशल और शीघ्र सेवाएं देने के लिए प्रतिबद्ध रहा।

नैदानिक खंड द्वारा विशेष सीओएडी संचालित की जाती है। यहां ओपीडी आधार पर ब्रांकाइटिस के रोगियों का निदाव एवं उपचार किया जाता है.। पिछले 5 वर्षो में देखे गए मरीजों की संख्या में चार गुना वृद्धि (कुल 1022) हुई है।

रोगियों के स्वास्थ्य देखभाल के अतिरिक्त नैदानिक खंड मेडिकल एवं पैरा–मेडिकल स्टाफ को व्यावहारिक प्रशिक्षण देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिससे प्रशिक्षुओं को व्यावसायिक रूप

से अवसर मिलते हैं। पिछले एक वर्ष में यहां 220 इंटनर्स और 171 एमबीबीएस पूर्व–स्नातकों को प्रशिक्षित किया गया। इन्होंने नियमित अध्यापन गतिविधियों में भाग लिया जिसमें 48 संगोष्ठियां तथा 210 नैदानिक केसों पर चर्चा की गई। केस का वृत्तांत लेना, नैदानिक जांच, चैस्ट एक्स–रे का नतीजे निकालना जैसे सभी मूलभूत कौशलों तथा संबद्ध निदान जांच करने तथा उपचार कौशलों का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त नैदानिक खंड ने क्षयरोग निरीक्षण कोर्स के 3 बैचों के 60 छात्रों को भी रोगी प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया।

वर्ष के दौरान कुल ओपीडी उपस्थिति (अप्रैल 2017 से मार्च 2018 तक)

क्रम सं	माह	पुरुष	स्त्री	कुल
1.	अप्रैल 2017	382	502	884
2.	मई 2017	456	626	1082
3.	जून 2017	380	663	1043
4.	जुलाई 2017	561	637	1198
5.	अगस्त 2017	395	627	1022
6.	सितंबर 2017	311	485	796
7.	अक्टूबर 2017	368	487	855
8.	नवंबर 2017	378	564	942
9.	दिसंबर 2017	335	478	813
10.	जनवरी 2018	402	582	984
11.	फरवरी 2018	334	587	921
12.	मार्च 2018	407	588	995
	कुल	**4709**	**6826**	**11535**

तालिका

पिछले 5 वर्षो के दौरान क्लीनिकल अनुभाग में कुल ओपीडी उपस्थिति

क्रम स	वर्ष	ओपीडी उपस्थिति			विशेष ओ पी डी (सीओएडी)	एक्सरे
		नई ओपीडी	पुनः उपस्थिति	कुल		
1	2013-14	6,396	4,610	11,006	277	621
2	2014-15	7,843	6,144	13,987	277	980
3	2015-16	9,828	8,572	18,400	296	1,565
4	2016-17	10,157	9,895	20,052	562	1,561
5	2017-18	11,535	11,064	22,599	1,022	2,505

वर्ष 2017–18 में विभिन्न विषयों पर विभिन्न बैचों के लिए आयोजित की गई संगोष्ठियों की सूची नीचे दी गई है।

नैदानिक कौशल

1. श्वसन रोगों में ध्यान में रखे जाने वाले नैदानिक पक्ष
2. पुरानी खांसी में अंतर – निदान कैसे करें
3. श्वसनहीनता में अंतर
4. हीमोपटाइसिस – कारण एवं प्रबंधन
5. क्षयरोग का रेडियोलॉजिकल प्रस्तुतीकरण – सक्रिय व असक्रिय रोग

क्षयरोग

6. क्षयरोग का नैदानिक परीक्षण – संक्रमण एवं रोग
7. क्षयरोग निदान की मॉलीक्यूलर प्रणालियों की वर्तमान अवस्था
8. क्षयरोग का प्रबंधन – आरएनटीसीपी
9. क्षयरोग एवं एचआईवी संबद्धता
10. क्षयरोग एवं मधुमेह का सह–अस्तित्व
11. एटीटी की हेपाटोटाक्सिटी
12. क्षयरोग उपचार की दवाओं के प्रतिकूल प्रभाव
13. बहुऔषधीय दवा प्रतिरोधकता – निदान एवं प्रबंधन
14. एक्सडीआर – क्षयरोग
15. सीएनएस क्षयरोग
16. उदर संबंधी (abdominal) क्षयरोग
17. बांझपन में क्षयरोग

सीओपीडी एवं दमा

18. तीव्र श्वसन नली संक्रमण
19. दमा– नैदानिक विशेषताएं
20. दमा और उसका प्रबंधन
21. दमा में बीटा–एगोनस्टिस की भूमिका
22. सीओपीडी – एम्फीसेमा एवं पुराना ब्रांकाइटिस
23. सीओपडी में नवीनतम प्रगति
24. निमोनिया
25. प्लमनरी कार्य प्रणाली जांच
26. कार्डियोप्लमनरी एक्सोसाइज़ जांच

अन्य श्वसन रोग

27. प्लीयूरल एफ्यूसन
28. एम्पायेमा
29. न्यूमोदओरेक्स
30. प्लीयूरल रोग में थोराकोसेनटिसिस – निदान एवं थेरेपटिक
31. फेफडों का संक्रमण
32. लंग अबसेस
33. इम्यूना युक्त हॉस्ट में प्लमनरी संक्रमण
34. प्लमनरी उच्चरक्तचाप
35. श्वसन विघात
36. प्लमनरी थरोम्बो एम्बॉलिस्म
37. धूम्रपान एवं वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव
38. अन्तःश्वसनात्मकता का उपचार एवं युक्तियां
39. ब्रांकाइटिस
40. उपजीविकाजन्य फेफड़ों का संक्रमण
41. न्यूरोमस्क्यूलर एवं वक्ष भित्ति रोग
42. ब्रागकीओलर रोग (श्सनलिका रोग)
43. नींद विकार जन्य श्वसन का निदान
44. एसएलई में लंग संबद्धता
45. संधिवात गठिया में फेफडों से संबद्धता
46. फेफड़ों के कैसर में नवीन प्रगति – निदान एवं चरणावस्था
47. फेफड़ों के कैसर के प्रबंधन में नवीन प्रगति
48. इंटरस्टाइटियल फेफड़ों का रोग

रेडियोलॉजिकल प्रशिक्षण

निम्नलिखित तालिका वर्ष 2017–18 के दौरान महीने अनुसार रेडियोलॉजिकल प्रशिक्षण दर्शाती है।

वर्ष के दौरान किये गये रेडियोलॉजिकल प्रशिक्षण (अप्रैल 2017 से मार्च 2018 तक)

क्रं सं	माह	एक्सरे ओ पी डी	कर्मचारी एक्सरे ओ पी डी	एनजीओ द्धारा संर्दभित एक्सरे मामले	एक्सरे एसीडी जनपादिक	एक्सरे चिकित्सा जांच	कुल किये गये एक्सरे
1.	अप्रैल 2017	108	19	42	8	-	177
2.	मई 2017	142	5	36	4	-	187
3.	जून 2017	100	6	19	17	-	142
4.	जुलाई 2017	253	21	35	5	-	314
5.	अगस्त 2017	120	4	5	29	35	193
6.	सितंबर 2017	111	8	17	30	-	166
7.	अक्टूबर 2017	231	3	10	5	-	249
8.	नवंबर 2017	182	30	8	5	-	225
9.	दिसंबर 2017	197	2	4	5	-	208
10.	जनवरी 2018	160	6	4	34	36	240
11.	फरवरी 2018	184	4	-	5	-	193
12.	मार्च 2018	195	1	-	5	-	201
	कुल	**1993**	**109**	**180**	**152**	**71**	**2505**

डॉट केन्द्र

केन्द्र के परिसर में एक डॉट एवं माइक्रोकॉपी केन्द्र स्थित है। यहां आरएनटीसीपी के दिशा–निर्देशों के अनुसार उस क्षेत्र में आने वाले रोगियों का निःशुल्क निदान एवं उपचार किया जाता है। यहां केन्द्र के डाक्टर क्षयरोग की आशंका वाले रोगियों की जांच करते हैं, जांच की सलाह देते हैं और क्षयरोग से पीड़ित रोगियों का उपचार के लिए वर्गीकरण करते हैं। डाट केन्द्र में आने वाले रोगी एंटी टीबी दवाओं के साइड इफेक्टस के लिये हमारे ओ पी डी मे आते है।

डॉट केन्द्र जो कि नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में स्थित है उसमें वर्तमान में 84 मरीज नियमित उपचार ले रहे है। विवरण नीचे दिया गया है –

श्रेणी	कुल मरीज
श्रेणी 1	63
श्रेणी 2	16
बाल चिकित्सा मामले	5
कुल	**84**

जानपदिक अनुभाग

जानपदिक अनुभाग में पूरे वर्ष विभिन्न गतिविधियां होती है। इनमें अनुसंधान परियोजनाएं और विभिन्न चैस्ट क्लीनिकों का निरीक्षण किया जाना शामिल है जो कि राज्य क्षयरोग द्वारा किया जाता है और विभिन्न कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित/संचालित किए जाते है जिसमें कार्यक्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों और नर्सिंग कार्मिकों तथा चिकित्सा अधिकारी/निजी प्रैक्टिशनरों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

इस विभाग द्वारा वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्य किए गए :

(क) मामलों को सक्रियतापूर्वक ज्ञात करने का अभियान

जानपदिक विभाग का एक प्रमुख कार्य दिल्ली राज्य में क्षयरोग के मामलों का सक्रियता से पता लगाने का अभियान संचालित करना है। यह कार्यक्रम जनवरी 2017 में केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग ने प्रस्तावित किया था। यह अभियान घरों के सर्वेक्षण द्वारा क्षयरोग के लक्षण वाले लोगों पता लगाने के लिए आरंभ किया गया। यह एक राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम था जिसे देश भर में सफलतापूर्वक चलाया गया। यह 2 सप्ताह की गतिविधि थी जिसे 2017 में तीन बार संचालित

किया गया। इसके अभियान दल में 4 व्यक्ति थे जिनमें आरएनटीसीपी डॉट प्रदाता, आशा कार्यकर्त्ता तथा एनजीओ के प्रतिनिधि थे जिन्होंने घर–घर जाकर सर्वेक्षण किया । इस दल को डीटीओ के मार्गदर्शन में क्षयरोग के लक्षणों वाले उच्च जोखिम वाले समूहों (झुग्गियों मे रहने वाले लोग, कारागार, निर्माण स्थल इत्यादि) का पता लगाना था। सर्वेक्षण से पहले दिल्ली राज्य के सभी डीटीओ को कार्य के बारे में अवगत कराया गया। उन्हें संबंधित क्षेत्रों का खाका तैयार करने और विशेषकर झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों, निर्माण स्थलों, कारागारों और नाइट शेल्टरों में रहने वाले लोगों के बारे में पता लगाने के लिए कहा गया। इस सर्वेक्षण के लिए सीटीडी ने एक प्रारूप तैयार किया। दल को उच्च जोखिम वाले समूहों का दौरा करके निवासी का नाम, आयु, लिंग और पता जैसी जानकारी नोट करनी थी। इस सर्वेक्षण में क्षयरोग के लक्षणों के बारे में प्रश्न पूछे गए। यदि जवाब न होता था तो दल को उस घर को चाक से चिन्हित करना होता था और फिर वह दल अगले घर पर जाता था। यदि जवाब हां में होता था (परिवार के किसी व्यक्ति को 2 या उससे अधिक सप्ताह तक खांसी/बुखार इत्यादि है)तो दल द्वारा उसी स्थान पर व्यक्ति की लार का नमूना लिया जाता था और रोगी को केन्द्र पर आकर लार का दूसरा नमूना देने के लिए समझाया जाता था। इसके लिए क्षयरोग के लक्षण वाले रोगी का मोबाइल नम्बर लिया गया ताकि उससे बाद में संपर्क किया जा सके। इस क्रियाकलाप का निरीक्षण राज्य क्षयरोग प्रकोष्ठ के स्टाफ, डब्लूएचओ के सलाहकार और एनडीटीबी संकाय की ओर से किया गया। अंत में दल को भरे हुए प्रारूप जमा करने होते थे। इसमे एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य निक्षय पोर्टल पर इसकी प्रविष्टि करना था जो कि संबंधित चैस्ट क्लीनिक के डाटा एंट्री ऑपरेटर द्वारा की जाती थी। घर–घर जाकर सर्वेक्षण करने वाले कार्यस्थल स्टाफ को इसके लिए प्रोत्साहन राशि दी गई। प्रत्येक पॉजीटिव पाए जाने वाले मामले और उसका उपचार आरंभ किए जाने के लिए सरकार सर्वेक्षण दल को रू.500/–की प्रोत्साहन राशि देती है।

ईसीएचओ आधारित बैठक के दौरान डीटीओ और कार्यक्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों ने ऐसी कई समस्याओं को सामने रखा जो अभियान के दौरान उनके सामने आईं । इनमें कई समस्याओं जैसे लार का दूसरा नमूना न देना, कठिन क्षेत्रों तक पहुंचना, नशा लेने वाले लोगों के इलाके/खतरनाक क्षेत्र में जाना इत्यादि को सामने रखा गया। इन समस्याओं को सामने रखने का प्रयोजन अगली एसीएफ गतिविधि की तैयारी करना था जो कि जुलाई और सितम्बर 2017 के महीने में संचालित की गई। इन महीनों मे पूर्व सर्वेक्षण में आई मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए उसी तरह का अभियान चलाया गया।

गतिविधि का परिणाम

कुल जनसंख्या	लक्षण वाले जांच किए गए लोगों की संख्या	रोगियों की संख्या जिनकी लार की जांच की गई	रोगियों की संख्या जिनमें रोग का पता लगाया गया
1380622	228306	2857	254

(ख) श्योर परियोजना के लिए एसएमएस

क्षयरोग के उपचार का अनुपालन करने में एसएमएस के प्रभाव का आकलन करने के लिए एनडीटीबी ने वर्ष 2015 में श्योर परियोजना के लिए एसएमएस की शुरूआत की थी। इस परियोजना के लिए एक आईटी कम्पनी को नियुक्त किया गया। यह परियोजना क्षयरोगियों में एलटीएफयू में कमी लाने में एसएमएस की भूमिका को जानने के लिए आरंभ की गई।

इस कार्य में निम्नलिखित शामिल था :

- अक्तूबर 2015 में 239 डॉट प्रदाताओं को 8 बैचों में प्रशिक्षित किया गया। यह एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम था जिसमें उन्हें परियोजना में उनकी भूमिका के बारे में बताया गया।
- तिमाही बैठक में सभी जिलों के डीटीओ को जागरूक किया गया।
- अक्तूबर माह में एनडीटीबी में एक सर्वर लगाया गया और शुरूआत के कुछ दिनों में गतिविधि की प्राथमिक जांच की गई।
- डाट प्रदाताओं की सुविधा के लिए एक टोल फ्री नम्बर शुरू किया गया।
- प्रक्रिया : सर्वर के माध्यम से नए ज्ञात 6000 रोगियों को यादृच्छिक रूप से समूहों में बांटा गया। *समूह 1 नामांकन की पुष्टि होने का एसएमएस, साप्ताहिक प्रेरणादायक एसएमएस और याद दिलाने के लिए और डोस छूटने पर एसएमस / समूह 2 रोगियों को नामांकन पुष्टि का एसएमस, डोस न छूटे इसके लिए एसएमस। समूह 3 अध्ययन नामांकन पुष्टि के एसएमस को छोड़ कर रोगियों को एसएमस न मिलना।*
- यह परियोजना सुफलतापूर्वक पूरी हुई और इसके परिणाम राज्य स्तरीय एवं अन्य संबद्ध एजेंसियों तक पहुंचाए गए।

अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित हैं :

1. कुल 5667 रोगियों का सफलतापूर्वक पूरा उपचार किया गया।

2. जांच समूह 2 और जांच समूह 3 की तुलना में जांच समूह 1 में चूक एवं विफलता दर सबसे कम रही। इसका प्रमुख कारण प्रेरक एसएमएस और याद दिलाने वाले एसएमएस रहे जो समूह 1 में डोस छूट जाने पर किए गए। इससे यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि एसएमस और प्रेरक संदेश डोस छूटने की संभावना, चूक और विफलता को कम करने में कारगर है।
3. जांच समूह 2 और जांच समूह 3 की तुलना में जांच समूह 1 में बाहर निकलने वाले और एमडीआर रोगी कम थे
4. समूह 3 की तुलना में समूह 1 और 2 में मृत्यु के मामले अधिक थे।
5. समूह 1 व 2 में छूटने वाली डोस की संख्या (24 डोस छूटी) समूह 3 (21 डोस छूटी) से अधिक थी। जांच समूह 2 में सर्वाधिक डोस छूटी उसके बाद समूह 3 में (29) और जांच समूह 1 में (32) रही। फरवरी–अप्रैल 2016 के महीने में अधिकतम डोस छूटी।
6. रोगियों को दर्ज किए जाने से पूर्व उनकी गहन काउंसलिग के कारण डोस छूटने की संख्या में बहुत कमी आई। इस प्रकार काउंसलिंग कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण अंग होना चाहिए।
7. जांच समूह 1 में 8, जांच समूह 2 में 10 और जांच समूह 3 में 8 रोगियों ने उपचार के दौरान 1 से अधिक डोस छोड़ी (रेंज 1–8)। अतएव सभी समूहों में डोस छूटने की प्रवृत्ति से संबंधित कोई अंतर नहीं पाया गयज्ञं
8.

परिणाम	राज्य स्तर 2016	श्योरपरियोजना हेतु एसएमस
उपचार सफलता	86.3	94.4
चूक	5.5	2.2
विफलता	2.3	0.8
मृत्यु	2.5	1.2

सारांश में यह कहा जा सकता है कि उपचार को सफलतापूर्वक पूरा करने में एसएमएस की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। यह समूह 1 और 2 में अधिक प्रमुखता से थी। हालांकि अध्ययन में रोगियों को दर्ज किए जाने से पहले समूह 3 को कोई संदेश एवं काउंसलिंग नहीं मिली जिसकी अपनी भूमिका हो सकती है। डॉट प्रदाताओं द्वारा घरों का दौरा कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा रहना चाहिए। घरों में जाना और मोबाइल टेक्नॉलजी कार्यक्रम का अभिन्न अंग बना रहना चाहिए। इससे आगे चल कर अनुकूल परिणाम मिलेंगे।

टीओजी मार्गदर्शिका पर लघु पुस्तिका तैयार करना

एमओ में सामान्य प्रसार के लिए खंड द्वारा नवीनतम टीओजी मार्गदर्शिका पर लघु पुस्तिका तैयार की गई। इसके पीछे विचार यह था कि दिशा–निर्देशों का प्रसार किया जाए जो कि पुस्तिका के रूप में मेज पर रहे और जिसका निदान एवं उपचार के लिए दैनिक रूप से उपयोग किया जा सके।

निजी क्षेत्र की भागीदारी

यह विभाग निजी क्षेत्र को भागीदार बनाने के कार्य में कार्यरत रहा है। इसके लिए निजी क्षेत्र के संघटक स्टेकहोल्डरों को शामिल किया जाता है। इसका उद्देश्य संगठन के स्टाफ को रोग तथा आरएनटीसीपी के प्रति जागरूक और प्रशिक्षित करना और उन सेवाओं एवं स्थानों की जानकारी देना था जहां वे उनका उपयोग कर सकते हैं (निकट के केन्द्र/चैस्ट क्लीनिक और निःशुल्क सेवाएं उपलब्ध कराना)। जानपदिक विभाग के अधिकारी ओरियंटल हेल्थ इंश्योरेंस के स्टेकहोल्डरों और अन्य एजेंसियों के पास गए तथा इनके कर्मचारियों को सजग करने के लिए बातचीत जारी है।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के कर्मचारियों की जांच

प्रत्येक वर्ष विभिन्न संगठनों के कर्मचारी नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में आते हैं। इनमें अलग–अलग दूतावासों तथा संगठनों के कर्मचारी शामिल हैं। इस वर्ष राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, नई दिल्ली के 71 कर्मचारी नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में आएं । इन कर्मचारियों की क्षयरोग के लिए जांच की गई और उसके अनुसार सलाह दी गई।

ईको क्लीनिक

ईको एक वेब आधारित वीडियों कान्फ्रेस मंच है जिसका उपयोग दिल्ली में चैस्ट क्लीनिक करते हैं जिसमें राज्य क्षयरोग प्रकोष्ठ भी शामिल है। इन क्लीनिकों में सभी चैस्ट क्लीनिकों के वीडियों कान्फ्रेस के माध्यम से जुड़ते है और केस के प्रस्तुतिकरण/नवीनतम जानकारी इत्यादि जैस क्षयरोग के विभिन्न पक्षों पर चर्चा करते हें। पिछले एक वर्ष में यह गतिविधि बहुत सफल रही है। प्रत्येक सप्ताह ईको क्लीनिक आयोजित किए जाते हैं। जानपदिक विभाग एनडीटीबी केन्द्र के सभी विभाग समय–समय पर लगने वाले इन क्लीनिकों को आयोजित करने/सुगम बनाने के लिए कार्य करते हैं।

जन स्वास्थ्य अनुभाग

जन स्वास्थ्य अनुभाग नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र का एक विभाग है। यह विभाग जन स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए काम करता है।

स्वास्थ्य वार्ता

स्वास्थ्य वार्ता एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है जिसके माध्यम लोगों में जानकारी का प्रसार किया जाता है। एक से दूसरे व्यक्ति तक बात पहुंचाने का यह सबसे सरल तरीका है। इसे ध्यान में रखते हुए ओपीडी हाल में नियमित रूप से क्षयरोग पर स्वास्थ्य पर बातचीत की जाती हैं जिसमें 100 तक रोगी और उनकी रिश्तेदार प्रतिदिन आते हैं।

क्षयरोग जागरुकता

क्षयरोग जागरुकता को प्लेकार्ड का उपयोग करके उत्पन्न किया जाता है जो समय समय पर प्रदर्शित किये जाते है। हम ऑडियो–विजुअल के माध्यम से हमारे रोगियों और उनके रिश्तेदारों में जागरूकता लाने का प्रयास करते हैं। हमने क्षयरोग पर कई लघु वृत्तचित्र बनाए हैं जिसे कि हमारे मुख्य ओपीडी हॉल में दिखाया जाता है। हमारे द्वारा मौखिक रूप से दिए जाने वाले संदेशो का याद रखने के लिए हम आने वाले लोगों को ऐसे संदेश प्रिंट रूप में देते हैं।

क्षयरोग निरीक्षक कार्यक्रम

जन स्वास्थय विभाग और नैदानिक विभाग परस्पर सहयोग से क्षयरोग निरीक्षण पाठ्यक्रम भी चलाते हैं। यह तीन माह का पाठ्यक्रम होता है जिसमें देश के अलग–अलग हिस्सों से छात्रों का चयन किया जाता है। इस पाठ्यक्रम में क्षयरोग के विभिन्न पक्षों को शामिल किया जाता है। अध्यापन, व्यावहारिक प्रशिक्षण, क्षेत्र का दौरा करना और प्रदर्शन इस पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग हैं। इसमें छात्रों को केन्द्र के विभिन्न विभागों जापदिक विभाग, नैदानिक विभाग, डॉट केन्द्र और मैनटॉक्स कक्ष में बारी–बारी से भेजा जाता है। छात्र केन्द्र के विभिन्न क्रियाकलापों में भी भाग लेते हैं जैसे मरीजों का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उनके साथ स्वास्थय वार्ता करना, उन्हें काउंसलिंग देना इत्यादि। पाठ्यक्रम के अंत में प्रायोगिक और सैद्धांतिक परीक्षा ली जाती है और पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने पर छात्रों को टीबीएचवी पाठ्यक्रम पूर्णता प्रमाणपत्र दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम आरएनटीसीपी द्वारा प्रत्यायित है। वर्ष 2017–18 में चार बैचों ने क्षयरोग निरीक्षक प्रशिक्षण लिया। छात्रों की कुल संख्या 68 थी। 3 माह के दौरान छात्रों निम्नलिखित के प्रति सजग किया गया :

- क्षयरोग
- आरएनटीसीपी
- समुदाय आधारित संक्रमण पारस्परिकता सहित क्षयरोग के सामान्य पक्ष

मैनटॉक्स जांच

मैनटॉक्स जांच एनडीटीबी केन्द्र पर की जाती है। एडीटीबी केन्द्र की ओपीडी के अतिरिक्त विभिन्न सरकारी हस्पतालों और निजी चिकित्सकों द्वारा भी रोगियों को मैनटॉक्स जांच के लिए केन्द्र में रेफर किया जाता है।

अप्रैल 2017 से मार्च 2018 की अवधि में एनडीटीबी के चैस्ट क्लीनिक में 9243 मैनटॉक्स परीक्षण किए गए। इनमें से 8119 रोगियों के परिणाम उपलब्ध हैं। मैन्टॉक्स जांच का माह वार विवरण नीचे दिया गया है :

माह 2017-18	कुल परीक्षण	पठित	रीएक्टर्स >10 एमएम	रीएक्टर्स <10 एमएम
अप्रैल 2017	740	653	349	304
मई 2017	829	740	365	375
जून 2017	828	729	360	369
जुलाई 2017	856	761	310	451
अगस्त 2017	829	714	223	491
सितंबर 2017	745	646	280	366
अक्टूबर 2017	610	503	215	288
नवंबर 2017	833	733	312	421
दिसंबर 2017	655	573	278	295
जनवरी 2018	735	654	296	358
फरवरी 2018	792	710	320	390
मार्च 2018	791	703	301	402
कुल	**9243**	**8119**	**3609**	**4510**

क्षयरोग निरोधक सप्ताह का आयोजन

एनडीटीबी प्रत्येक वर्ष विश्व क्षयरोग दिवस को मनाने के लिए अर्थात 24 मार्च को क्षयरोग निरोधक सप्ताह आयोजित करता है। इस वर्ष एनडीटीबी ने अपने कार्यक्रम को व्यापक स्वरूप देते हुए परिसर के बाहर कई कार्य किए और पिछले वर्ष के मुकाबले बड़े पैमाने पर गतिविधियां संचालित की।

इस वर्ष निम्नलिखित नई गतिविधियां आयोजित की गई :

क) मेट्रो स्टेशनों पर जन जागरण
ख) नुक्कड़ नाटक
ग) क्षयरोग रैली
घ) क्षयरोग पुस्तकालय
ड) दैनिक स्टेज शो
जन जागरण गतिविधि की संकल्पना, नृत्य निर्देशन और संचालन क्षयरोग निरीक्षक पाठ्यक्रम के छात्रों द्वारा किया गया।

यह कार्यक्रम निम्नलिखित मेट्रो स्टेशनों पर किया गया :

क) राजीव चौक
ख) मंडी हाउस
ग) दिल्ली गेट

जनजागरण एक जागरूकता गतिविधि है जिसमें कोई जनसमूह संगीत के साथ नृत्य करता है। इसका प्रयोजन वहां एकत्रित लोगों को संदेश देना और दर्शकों को आकर्षित करना होता है। यह पूरा कार्यक्रम यूटयूब पर पोस्ट किया गया।

हमने निम्नलिखित केन्द्रों पर नाटक, नुक्कड नाटक और इसके साथ क्षयरोग पुस्तकालय भी प्रदर्शित किया :

क. एलएनजेपी में चैस्ट क्लीनिक के सामने
ख. डेन्टल कॉलेज प्रतीक्षालय
ग. दरियागंज
घ क्षयरोग निरीक्षक कोर्स के छात्रों ने 22.03.2018 को पुरानी दिल्ली क्षेत्र में एक रैली निकाली जिसमें क्षेत्र में जागरूकता पैदा करने के लिए क्षयरोग की जानकारी देने वाले पैनल प्रदर्शित किए गए।
च हम क्षयरोग के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देने वाले इश्तिहार भी बनाते हैं।

इन हाउस कार्यक्रम :

- चित्रकला प्रतियोगिता : एसपीवाईएम और बच्चों का घर के आश्रितों ने 19.03.2018 को चित्रकला प्रतियोगिता का आायोजन किया। ये बच्चों के लिए काम करने वाले एनजीओ है। ये चित्र हमारी ओपीडी में आने वाले रोगियों और आम लोगों के लिए लगाए गए हैं।
- दैनिक स्टेज शो : हम ने दैनिक रूप से स्टेज शो आयोजित किए जिसमें छात्रों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। ओपीडी में आने वाले रोगियों को उपयोगी टिप्स दिए गए जैसे स्वास्थसवर्धक खाना कैसे बनाएं, उपचार अनुपालन, एटीटी दवा इत्यादि का प्रबंधन।

जागरूकता कार्यक्रम

मामलों का सक्रियतापूर्वक पता लगाने के अभियान के अंतर्गत हम ने पूरी दिल्ली के नाइट शैल्टरों में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। निम्नलिखित स्थलों का दौरा किया गया :

क. सराय काले खां 19.09.2017
ख. आसफ अली रोड 21.09.2017
ग. राजौरी गार्डन 14.09.2017
घ डिलाईट सिनेमा के निकट 15.09.2017

विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर 2018 में नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र के क्रियाकलाप

हम प्रत्येक वर्ष 24 मार्च को विश्व क्षयरोग दिवस पर कई गतिविधियां चलाते हैं। यह वार्षिक कार्यक्रम 1882 की उस तिथि की स्मृति में मनाया जाता है जिस दिन डा रॉबर्ट कोच ने माइकोबैक्टिरियम क्षयरोग पैदा करने वाले क्षयरोग कीटाणु के अविष्कार की घोषणा की थी।

''वांटिड : लीडर्स फॉर ए टीबी–फ्री वर्ल्ड'', यह स्लोगन का थीम था। यह स्लोगन थीम दुनिया भर के युवा से लेकर बूढे लोगों का आहवान करता है कि वे क्षयरोग के उन्मूलन के लिए काम करें।

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र मरीजों तथा समुदाय के साथ प्रत्येक वर्ष विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस वर्ष 10 मार्च 2018 से 24 मार्च 2018 तक क्षयरोग रोधी दिवस मनाया। इस वर्ष हम ने अपनी सोच को व्यापक स्वरूप दिया और निम्नलिखित गतिविधियां आयोजित की :

क्रम	तिथि	नियोजित गतिविधि/गतिविधि का नाम	विवरण/सार
1	19.03.2018	चित्रकला प्रतियोगिता	एसपीवाईएम और बच्चों का घर दरिया गंज से बच्चों को चित्रकला प्रतियोगिता लिए आमंत्रित किया गया।
2	20.03.2018	राजीव चौक एवं मंडी हाउस मेट्रो स्टेशनों पर जन जागरण कार्यक्रम	यह जागरूकता पैदा करने वाली गतिविधि थी जिसमे जागरूकता पैदा करने लिए टीबी फ्लैश बोर्ड का प्रयोग किया गया।
3	21.03.2018	नुक्कड़ नाटक	एलएन चैस्ट क्लीनिक के हमारे छात्रों ने क्षयरोग पर नुक्कड़ नाटक किया
4	21.03.2018	नुक्कड़ नाटक	कश्मीरी गेट स्टेशन पर जन–जागरण कार्यक्रम किया गया।
5	22.03.2018	टीबी रैली	छात्रो की मदद से फ्लैश बोर्ड के साथ पुरानी दिल्ली क्षेत्र में रैली निकाली गई। हम तीन स्थानों पर रूके और नुक्कड़ नाटक, स्वास्थय परिचर्चा और जन जागरण कार्यक्रम किया।
6	23.03.2018	टीबी पुस्तकालय प्रदर्शन	एलएन हस्पताल की डेन्टल ओपीडी में छात्रों ने टीबी फ्लैश बोर्ड प्रदर्शित किए /जानकारी दी।
7	24.03.2018	पुरस्कार वितरण (चित्रकला प्रतियोगिता)	एनडीटबी केन्द्र में आयोजित सम्मान समारोह में विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।
8	19.03.2018 23.03.2018	एनडीटीबी लॉन में दैनिक स्टेज शो	प्रतिदिन दोपहर 11.00 से 12.00 बजे तक क्षयरोग के विभिन्न पक्षों पर विभिन्न स्टेज शो आयोजित किए गए।

सामुदायिक बैठके ओर स्वास्थ्य वार्ता

तिथि	कार्यक्रम	भागीदार
31.05.2017	विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर। क्षयरोग निरीक्षक के छात्रों ने एसपीवाईएम एनजीओं का दौरा किया और धूम्रपान तथा अन्य दवाओं के हानिकारक प्रभावों के बारे में बताया।	एसपीवाईएस, दरियागंज में रहने वाले
5.06.2017	विश्व पर्यावरण दिवस पर सभी कर्मचारियों को अपने निवास स्थान के निकट पौधा लगाने का आग्रह किया गया और रिकार्ड के लिए उसका फोटो कार्यालय में भेजने आग्रह किया गया।	एनडीटीबीसी का स्टाफ
6.6.2017	फिरोजशाह कोटला के निकट वाल्मिकी बस्ती में एक सामुदायिक बैठक की गई जिसमें वाल्मिकी बस्ती के निवासियों को क्षयरोग के बारे में बताया गया।	वाल्मिकी बस्ती के निवासी
12.08.2017	युवा दिवस के अवसर पर 'बच्चों का घर' में एक कविता पाठ का आयोजन किया गया। कविता पाठ का विषय युवाओं के अधिकार और देश के विकास में युवाओं का योगदान था।	'बच्चों का घर' के आश्रित
20.11.2017	एनडीटीबी केन्द्र में 77वां वार्षिक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसके बाद क्षयरोग निरीक्षक कोर्स के छात्रों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ।	एचवी के छात्र और स्टाफ
24.03.2018	क्षयरोग रोधिता दिवस मनाया गया और कई बाहरी कार्यक्रम आयोजित किए गए।	स्टाफ और एचवी के छात्र
1.12.2017	एचआईवी और एड्स के प्रति आगुतंकों को जागरूक करने के लिए मुख्य ओपीडी हॉल में एक स्वास्थ्य चच आयोजित की गई।	स्टाफ और एचवी के छात्र

माइक्रोबैक्टीरियल प्रयोगशाला

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की प्रयोगशाला केन्द्रीय क्षयरोग डीविजन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा लाइन प्रोब एसे, ठोस एवं लिक्विड कल्चर एवं डीएसटी के लिये प्रमाणित की गयी है। दिल्ली के 17 चेस्ट क्लीनिकों से नमूनो को निदान एवं पी एम डी टी के अंतर्गत अनुवर्ती कार्यवाई के लिये प्राप्त किया जाता है। एमजीआईटी 960 लिक्विड कल्चर प्रणाली का इस्तेमाल करके बेसलाइन दवा संवेदनशीलता जो दूसरी पंक्ति दवा है का प्रशिक्षण किया जाता है। इस प्रयोगशाला को दूसरी पंक्ति दवा लाइन प्रोब एसे करने के लिये चुना गया है।

वर्षिक अनुबंध एम वर्ष 2016 के लिये (जिलावार)

जिला	निदान हेतु जांचे गये संदिग्ध क्षयरोगी	सकारात्मक पाये गये संदिग्ध क्षयरोगी	पुनः थूक परीक्षण संदिग्ध क्षयरोगी	पुनः परीक्षण पर सकरात्मक पाये गये संदिग्ध क्षयरोगी	परीक्षित अनुवर्ती रोगी	अनुवर्तन में सकरात्मक पाये गये क्षयरोगी	जांची गयी स्लाइडों की कुल संख्या	कुल सकरात्मक स्लाइड	कुल नकरात्मक स्लाइड
बी जे आर एम	7015	607	39	5	1824	45	15928	1219	14709
जी टी बी एच	8350	1055	12	0	1881	128	18547	2223	16324
हैडगेवार	4541	569	35	3	584	62	9732	1210	8522
के सी सी	7212	665	8	1	2296	104	16635	1416	15219
लोकनायक ह	8981	754	16	2	638	53	18637	1565	17072
झंडेवालान	1904	327	2	1	884	82	4678	713	3965
एस पी एम	4945	470	12	2	838	50	10597	992	9605
शाहदरा	5642	842	255	2	2054	234	13527	1931	11596
पटपड़गंज	11706	1508	159	1	3412	209	26594	3108	23486
आर के मिशन	2590	331	87	11	613	53	5885	690	5195

नेहरु नगर	13170	1670	32	6	4983	383	31352	3664	27688
मोती नगर	10337	1306	88	15	3420	199	23117	2828	20289
आर टी आर एम	8133	872	22	3	1851	204	18545	1984	16561
नरेला	6939	976	0	0	2358	164	17255	2124	15131
करावल नगर	5798	956	20	3	2812	211	14400	2096	12304
एन डी एम सी	19632	2080	22	2	2730	174	42034	4319	37715
बी एस ए	6307	834	51	5	2075	176	14373	1814	12559
डी डी यू एच	9821	1195	92	9	3075	207	22716	2563	20153
गुलाबी बाग	2919	259	4	40	603	33	6355	520	5835
एल आर एस	6906	752	15	0	1950	99	15586	1590	13996
एस जी एम एच	6092	756	4	0	2207	72	13978	1498	12480
पटपड़गंज	5945	839	54	9	2974	289	14624	2010	12614
चौधरी देसराज	6548	771	59	8	1815	134	15058	1646	13412
मालवीय नगर	4796	692	0	0	2476	342	12079	1728	10351
बिजवासन	5596	537	34	3	1870	190	13113	1208	11905
डीटीबी फुटपाथ परियोजना – चादनी चौक (विशिष्ट परियोजना एसटीओ के तहत)	457	113	0	0	113	5	1027	231	796
कुल	**182282**	**21736**	**1122**	**131**	**52336**	**3902**	**416372**	**46890**	**369482**

वर्ष के दौरान दिल्ली राज्य के सभी 25 क्लीनिकों में क्षयरोग शंका वाले कुल 1,82,282 मामलों की रोग का पता लगाने के लिए जांच की गई जिसमें से 21,736 मामले पॉजीटिव पाए गए। टीबी प्रयोगशाला के परिणामों से प्राप्त आंकडों के अनुसार 4,16,372 स्लाइडों की जांच की गई जिसमें से 46,890 स्लाइडें पॉजीटिव पाई गई। जबकि कुल 3,69,482 स्लाइडें नेगटिव थी।

जीन अनुक्रमण

हमारी प्रयोगशाला में पूर्ण जीन अनुक्रमण (डब्लूजीएस) की सुविधा आरंभ की गई है। लागत में तीव्र कमी के कारण क्षयरोग के अनुसंधान में डब्लूजीएस तकनीक का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। डब्लूजीएस का प्रयोग एक बार में जीव जीनोम के सम्पूर्ण डीएनए अनुक्रम को ज्ञात करने के लिए किया जा सकता है और इससे एक बार में ही कई सवालों का जवाब मिल सकता है जिसके कारण यह रोगजन्य कारकों का अध्ययन करने का एक उपयुक्त तरीका है। क्षयरोग अनुसंधान के कई पक्षों के लिए डब्लूजीएस का प्रयोग किया जाता है जैसे संचरण श्रृंखला का अध्ययन करना, रोग का होना और जातिवृत्त का निष्कर्ष निकालना। इसके अलावा डब्लूजीएस द्वारा उत्परिवर्तकों से जुडी दवा–प्रतिरोधकता और रिफ्एम्पिसिन प्रतिरोधकता से संबंधित फिटनेस दोष की पूर्ति करने वाले उत्परिवर्तकों का पता लगाया जा सकता है।

प्रत्यायन

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की प्रयोगशाला ने राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड द्वारा परीक्षण एवं अंशशोधन प्रयोगशाला (एनएबीएल) के लिए आवेदन किया है। एनएबीएल, भारतीय गुणता परिषद (क्यूसीए) का घटक निकाय है और भारत सरकार क्यूसीआई का नोडल विभाग है। आईएसओ 15189 : 2012 'चिकित्सा प्रयोगशाला – गुणता एवं सक्षमता की अपेक्षाएं' के अनुसार प्रयोगशाला प्रत्यायन सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार एनएबीएल द्वारा प्रयोगशाला को औपचारिक मान्यता मिलने से कई लाभ होंगे जैसे कि प्रयोगशाला द्वारा जारी की जाने वाली परीक्षण/अंशशोधन रिपोर्टों के प्रति विश्वास बढ़ेगा, प्रयोगशाला के कार्यो का नियंत्रण बेहतर होगा और प्रयोगशाला को यह फीडबैक मिलेगा कि प्रयोगशाला का गुणवत्ता आश्वासन तंत्र सुदृढ़ है या नहीं और यह तकनीकी तौर पर सक्षम है या नहीं तथा रोगी का विश्वास एवं संतोष बढ़ने से प्रयोगशाला के संभावित व्यवसाय में बढ़ोत्तरी होगी।

स्थल मूल्यांकन दौरा एवं पैनल परीक्षण

एक माइक्रोबायोलॉजिस्ट, एक चिकित्सा अधिकारी और एक प्रयोगशाला तकनीकशियन से बना आईआरएल दल स्थल मूल्यांकन के लिए डीटीसी हेतु साल में कम से कम एक बार प्रत्येक चैस्ट क्लीनिक का दौरा करता हैं। दौरे मे यादृच्छिक आधार पर लिए गए डीएमसी को भी मूल्यांकन में शामिल किया जाता है।

आईआरएल द्वारा जिलों में प्रति वर्ष किए गए निरीक्षण दौरों की सिफारिशेा का केन्द्र प्रयोगशालाओं की प्रचालन और तकनीकी समस्याएं होती हैं जिसमें स्टाफ की उपलब्धता, ढांचा, उपयोग में आने वाली वस्तुओं की नियमित आपूर्ति तथा प्रशिक्षण शामिल हैं। दौरे के दौरान एसटीएलएस का पैनल परीक्षण किया गया।

आई आर एल दल द्वारा जांचे गये डी टी सी

क्र सं.	छाती क्लीनिक	दौरे की तिथि
1	जी टी बी एच छाती क्लीनिक	17-02-2017
2	हेडगेवार छाती क्लीनिक	27.02.2017
3	चौधरी देसराज छाती क्लीनिक	29.03.2017
4	आर के मिशन छाती क्लीनिक	27-04-2017
5	किंग्सवे कैम्प छाती क्लीनिक	28-04-2017
6	झंडेवालान छाती क्लीनिक	01-05-2017
7	पटपड़गंज छाती क्लीनिक	08-05-2017
8	बी जे आर एम छाती क्लीनिक	11-05-2017
9	लोकनायक हस्पताल छाती क्लीनिक	12-05-2017
10	बी एस ए छाती क्लीनिक	20-07-2017
11	करावल नगर छाती क्लीनिक	24-07-2017
12	मालवीय नगर छाती क्लीनिक	30-11-2017
13	नरेला छाती क्लीनिक	29-11-2017
14	गुलाबी बाग छाती क्लीनिक	06-12-2017

15	बिजवासन छाती क्लीनिक	07-12-2017
16	एस पी एम छाती क्लीनिक	08-12-2017
17	शास्त्री पार्क छाती क्लीनिक	13-12-2017
18	एस जी एम एच छाती क्लीनिक	14-12-2017
19	आर टी आर एम छाती क्लीनिक	18-12-2017
20	शाहदरा छाती क्लीनिक	19-12-2017
21	एन आई आर टी डी छाती क्लीनिक	20-12-2017

दवा प्रतिरोधक क्षयरोग क्रियाकलापों का कार्यबद्ध प्रबंधन (पीएमडीटी)

प्रयोगशाला को लाइन प्रोब एसे, सॉलिड एवं लिक्विड तथा डीएसटी के लिए सीटीडी से प्रमाणन मिला है। वर्तमान में दिल्ली में पीएमडीटी के अंतर्गत 08 चैस्ट क्लीनिकों से निदान के लिए थूक के नमूने और 17 चैस्ट क्लीनिकों से आगे के परीक्षण के लिए प्राप्त हुए।

पी एम डी टी गतिविधियां अप्रैल 2017 – मार्च 2018 के दौरान की गयी

(कल्चर एवं डीएसटी नमूनों पर की गयी कार्यवाही)

तिमाही 2017–18	निदान हेतु थूक के संचारित नमूने	संचारित अनुवर्तन नमूने	एलपीए डीएसटी निश्पन्न	एच आर सुग्राह्यता	एच आर प्रतिरोधी	सिर्फ एच प्रतिरोधी	सिर्फ आर प्रतिरोधी
द्वितीय तिमाही 2017	1633	2012	1272	1001	132	118	21
तृतीय तिमाही 2017	1856	1719	1140	904	127	93	16
चतुर्थ तिमाही 2017	776	1822	688	528	95	47	18
प्रथम तिमाही 2018	1463	1943	1143	872	108	106	21
कुल	**5728**	**7496**	**4243**	**3305**	**462**	**364**	**76**

सारणी वर्ष 2017–18 के दौरान पीएमडीटी गतिविधियों के तहत हुए प्रयोगशाला जॉचो का विवरण देती है। कुल 4243 थूक नमूनों को जांचा गया जिनमें से 462 नमूने एमडीआर एवं 76 रिफ मोनो प्रतिरोधी पाये गये।

प्रशिक्षण और पर्यवेक्षण अनुभाग

संस्थान विभिन्न चिकित्सकीय और अर्ध चिकित्सकीय कार्मिकों को प्रशिक्षण देने का कार्य करता है। ये कार्मिक संशोधित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) के अंतर्गत नीति के कार्यान्वयन के लिए दिल्ली और देश के अन्य राज्यों से प्रशिक्षण हेतु आते हैं। संस्थान द्वारा मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज और पटेल चैस्ट क्लीनिक के डॉक्टरों, मेडिकल छात्रों और अर्धचिकित्सकीय कार्मिकों (डॉट प्रदाता, एसटीएस, डीईओ, प्रयोगशाला तकनीकशियन, वरिष्ठ प्रयोगशाला तकनीशियन, उपचार प्रबंधकर्त्ताओं तथा वरिष्ठ उपचार निरीक्षक) के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रम किए जा चुके हैं। अहिल्या बाई कॉलेज ऑफ नर्सिंग, लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल, सफदरजंग हस्पताल, राजकुमारी अमृतकौर कॉलेज ऑफ नर्सिंग के नर्सिंग के विद्यार्थियों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया। वर्ष के दौरान दिए गए प्रशिक्षण का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

प्रशिक्षण गतिविधियां

वर्ष के दौरान कुल 154 दिन के प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए जिसमें 2749 कार्मिकों को आरएनटीसीपी के विभिन्न पक्षों के बारे में प्रशिक्षित किया गया जिसमें 99 सत्र थे। इनमें स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं के लिए संक्रमण नियंत्रण, क्षयरोग के रोगियों की देखभाल के लिए नर्सिंग कार्मिकों की भूमिका और दायित्व तथा क्षयरोग रोकथाम जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रशिक्षण का विवरण नीचे दिया गया है :

सारणी : 01 अप्रैल 2017 से 31 मार्च 2018 तक नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में संचालित प्रशिक्षण/जागरूकता कार्यक्रम

क्रम सं.	प्रशिक्षण का विवरण	अवधि		दिन	भागीदारों की संख्या
1.	जिला क्षयरोग अधिकारियों के लिए तीन दिन का तकनीकी एवं प्रचलानात्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	05.04.2017	07.04.2017	3	33
2.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम (बैच–1)	12.04.2017	12.04.2017	1	28
3.	चिकित्सा अधिकारियों के लिए तीन दिन का तकनीकी एवं प्रचलानात्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	21.04.2017	24.04.2017	3	23
4.	लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल ऑफ नर्सिंग के एलएचवी नर्सिंग छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	21.04.2017	21.04.2017	1	20
5.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	22.04.2017	22.04.2017	1	19
6.	दिल्ली सरकार के औषधालयों में काम करने वाले प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए दस दिस का आरएनटीसीपी मॉडयूलर प्रशिक्षण कार्यक्रम	24.04.2017	04.05.2017	10	11
7.	चिकित्सा अधिकारियों के लिए तीन दिन का तकनीकी एवं प्रचलानात्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	26.04.2017	28.04.2017	3	24
8.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का	28.04.2017	28.04.2017	1	23

	आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम				
9.	डाटा एंट्री ऑपरेटरों और सांख्यिकीय सहायकों हेतु आरएनटीसीपी के अंतर्गत निक्षय प्रविष्टियों का प्रशिक्षण	01.05.2017	01.05.2017	1	31
10.	लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल ऑफ नर्सिंग के नर्सिंग छात्रों के लिए दो दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	02.05.2017	03.05.2017	2	40
11.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएस और एसटीएल के लिए दो दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	03.05.2017	04.05.2017	1	24
12.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	07.05.2017	07.05.2017	1	10
13.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएस और एसटीएल के लिए दो दिन का तकनीकी एवं परिचलानात्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	08.05.2017	09.05.2017	2	20
14.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत डॉट प्लस निरीक्षकों हेतु दो दिवसीय तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	11.05.2017	12.05.2017	2	24
15.	एसटीएस और एसटीएल के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत दो दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	15.05.2017	16.05.2017	2	22
16.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	16.05.2017	16.05.2017	1	10
17.	दिल्ली सरकार के औषधालयों में	22.05.2017	01.06.2017	10	10

	काम करने वाले प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए दस दिस का आरएनटीसीपी मॉडयूलर प्रशिक्षण कार्यक्रम				
18.	एसटीएस और एसटीएल के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत दो दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	25.05.2017	26.05.2017	2	22
19.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	26.05.2017	26.05.2017	1	3
20.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम	29.05.2017	29.05.2017	1	53
21.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम	30.05.2017	30.05.2017	1	55
22.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम	01.06.2017	01.06.2017	1	52
23.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम	02.06.2017	02.06.2017	1	48
24.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत टीबीएचवी/डॉट प्रदाताओं के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम	05.06.2017	05.06.2017	1	64
25.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत टीबीएचवी/डॉट प्रदाताओं के	06.06.2017	06.06.2017	1	65

	लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम				
26.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	07.06.2017	07.06.2017	1	23
27.	टीओजी के अनुसार नई नैदानिक एल्गोरिदम और आरएनटीसीपी के अंतर्गत आईआरएल ओएसई के डीटीसी दौरे के परिणामों पर परिचर्चा	07.06.2017	07.06.2017	1	225
28.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत टीबीएचवी/डॉट प्रदाताओं के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम	08.06.2017	08.06.2017	1	69
29.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत एएनएम/टीबीएचवी/डॉट प्रदाताओं के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम	09.06.2017	09.06.2017	1	58
30.	लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल ऑफ नर्सिंग के एलएचवी नर्सिंग छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	09.06.2017	09.06.2017	1	23
31.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	12.06.2017	12.06.2017	1	38
32.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	14.06.2017	14.06.2017	2	25
33.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए	15.06.2017	15.06.2017	1	32

	एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण				
34.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	17.06.2017	17.06.2017	1	10
35.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	20.06.2017	20.06.2017	1	28
36.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	22.06.2017	22.06.2017	1	24
37.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक दिन का तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देश प्रशिक्षण	27.06.2017	27.06.2017	1	27
38.	उच्च जोखिम वाले समूहों में आरएनटीसीपी के अंतर्गत मामलों का सक्रियतापूर्वक पता लगाने के लिए एक दिन का प्रशिक्षण	28.06.2017	28.06.2017	1	25
39.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	28.06.2017	28.06.2017	2	9
40.	प्रयोगशाला तकनीशियनों आरएनटीसीपी कार्यक्रम के अंतर्गत दो दिवसीय पुर्न–प्रशिक्षण कार्यक्रम	29.06.2017	30.06.2017	2	1
41.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता	04.07.2017	04.07.2017	1	10

	कार्यक्रम				
42.	लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल ऑफ नर्सिंग के नर्सिंग छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	12.07.2017	12.07.2017	1	43
43.	पीएमडीटी पर समीक्षा बैठक एवं आरएनटीसीपी के अंतर्गत टीओजी पर नए नैदानिक संकेतकों पर जागरूकता कार्यक्रम	14.07.2017	14.07.2017	1	38
44.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत तकनीकी एवं परिचालानत्मक दिशा–निर्देशों के तहत दैनिक परहेज पर एक दिन का जागरूकता कार्यक्रम	21.07.2017	21.07.2017	1	45
45.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	24.07.2017	24.07.2017	1	10
46.	दिल्ली राज्य की एक दिन की आरनएनटीसीपी समीक्षा बैठक और आरएनटीसीपी के अतर्गत मॉनीटरिंग सूचकों की सुग्राहिता	26.07.2017	26.07.2017	1	35
47.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	07.08.2017	07.08.2017	1	25
48.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	15.08.2017	18.08.2017	1	24
49.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	18.08.2017	24.07.2017	1	10
50.	लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल ऑफ नर्सिंग के नर्सिंग छात्रों के लिए	26.08.2017	26.08.2017	1	70

	एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम				
51.	लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल ऑफ नर्सिंग के नर्सिंग छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	26.08.2017	26.08.2017	1	20
52.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	28.08.2017	28.08.2017	1	10
53.	दिल्ली सरकार के औषधालयों में काम करने वाले प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए दस दिन का आरएनटीसीपी मॉडयूलर प्रशिक्षण कार्यक्रम	04.09.2017	14.09.2017	10	10
54.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए टीबी–एचआईवी सहयोगात्मक क्रियाकलाप पर एक दिन का पुनश्चर्या (refreshment) प्रशिक्षण	13.09.2017	13.09.2017	1	34
55.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	13.09.2017	13.09.2017	1	10
56.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए टीबी–एचआईवी सहयोगात्मक क्रियाकलाप पर एक दिन का पुनश्चर्या (refreshment) प्रशिक्षण	15.09.2017	15.09.2017	1	35
57.	स्टाफ नर्सों/काउंसलरों/आर्ट केन्द्रों के फार्मस्टिों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत टीबी–एचआईवी सहयोगात्मक क्रियाकलाप पर एक दिन का टीबी–एचआईवी पुनश्चर्या (refreshment) प्रशिक्षण	21.09.2017	21.09.2017	1	36
58.	स्टाफ नर्सों/काउंसलरों/आर्ट	22.09.2017	22.09.2017	1	29

	केन्द्रों के फार्मस्टिों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत टीबी–एचआईवी सहयोगात्मक क्रियाकलाप पर एक दिन का टीबी–एचआईवी पुनश्चर्या (refreshment) प्रशिक्षण				
59.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	26.09.2017	26.09.2017	1	9
60.	केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग द्वारा क्षयरोग प्रयोगशाला निदान नेटवर्क के विस्तृत मुल्यांकन पर एक दिन की कार्यशाला	06.10.2017	06.10.2017	1	19
61.	दूसरे वर्ष के जीएनएम नर्सिंग छात्रों के लिए आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	11.10.2017	11.10.2017	1	33
62.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	12.10.2017	12.10.2017	1	10
63.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	16.10.2017	16.10.2017	1	10
64.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	23.10.2017	23.10.2017	1	22
65.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के छात्रों के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	26.10.2017	26.10.2017	1	2
66.	मौलाना आज़ाद मेडिकल	01.11.2017	01.11.2017	1	10

	कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम				
67.	लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल बाडा हिन्दू राव के लेडी हैल्थ आगुतंकों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत एक दिन का जागरूकता कार्यक्रम	02.11.2017	02.11.2017	1	21
68.	डीटीओ के साथ एक दिन की तिमाही बैठक और नए नैदानिक ऐल्गरिदम एवं दैनिक डॉट्स से अवगत कराने संबंधी जागरूकता	13.11.2017	13.11.2017	1	32
69.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	16.11.2017	16.11.2017	1	10
70.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत डीवीडीएमएस पर चिकित्सा अधिकारियों के लिए दो दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम	29.11.2017	29.11.2017	2	30
71.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत डीवीडीएमएस पर चिकित्सा अधिकारियों और डीईओ के लिए दो दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम	04.12.2017	05.12.2017	2	33
72.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	05.12.2017	05.12.2017	1	10
73.	सार्क के प्रतिनिधियों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत भारत में क्षयरोग कार्यक्रम पर दो दिन की जागरूकता कार्यशाला	05.12.2017	05.12.2017	1	9
74.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत डीवीडीएमएस पर एसटीएस के लिए एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम	06.12.2017	06.12.2017	1	44
75.	तृतीय वर्ष के जीएनएम छात्रों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत	08.12.2017	08.12.2017	1	57

	एक दिन का जागरूकता कार्यक्रम				
76.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	16.12.2017	16.12.2017	1	9
77.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक दिन प्रशिक्षण कार्यक्रम	19.12.2017	19.12.2017	1	25
78.	नर्सिंग छात्रों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत एक दिन का जागरूकता कार्यक्रम	20.12.2017	20.12.2017	1	27
79.	डीवीडीएमएस पर डॉट प्लस निरीक्षकों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम	21.12.2017	21.12.2017	1	33
80.	डीवीडीएमएस पर डॉट प्लस निरीक्षकों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम	27.12.2017	27.12.2017	1	30
81.	सीबीएनएटीटी पर आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएल्स का एक दिन का प्रशिक्षण	03.01.2018	03.01.2018	1	7
82.	सीबीएनएटीटी पर आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएल्स का एक दिन का प्रशिक्षण	04.01.2018	04.01.2018	1	10
83.	सीबीएनएटीटी पर आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएल्स का एक दिन का प्रशिक्षण	05.1.2018	05.01.2018	1	10
84.	क्षयरोग प्रयोगशाला में संक्रमण नियंत्रण के उपायों पर एक दिन का प्रशिक्षण	06.1.2018	06.01.2018	1	2
85.	सीबीएनएटीटी पर आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएल्स का एक दिन का प्रशिक्षण	08.01.2018	08.01.2018	1	11
86.	सीबीएनएटीटी पर	09.01.2018	09.01.2018	1	10

	आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएल्स का एक दिन का प्रशिक्षण				
87.	सीबीएनएटीटी पर आरएनटीसीपी के अंतर्गत एसटीएल्स का एक दिन का प्रशिक्षण	09.1.2018	09.01.2018	1	10
88.	दिल्ली राज्य में जीएलआरए परियोजनाओं की एक दिन की समीक्षा	09.01.2018	09.01.2018	1	18
89.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	16.01.2018	16.01.2018	1	10
90.	डीटीओ के लिए पीआईपी पर एक दिन का जागरूकता कार्यक्रम एवं तिमाही समीक्षा बैठक	18.01.2018	18.01.2018	1	32
91.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत क्षयरोग विस्तार बैठक पर एक दिन की सीएमई	23.01.2018	23.01.2018	1	60
92.	नाइटएंगल के नर्सिंग छात्रों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत क्षयरोग कार्यक्रम पर एक दिन की जागरूकता कार्यशाला	24.01.2018	24.01.2018	1	44
93.	आरएनटीसीपी के अंतर्गत प्रचालनात्मक अनुसंधान पर एक दिन की बैठक	30.01.2018	30.01.2018	1	44
94.	नाइटएंगल के नर्सिंग छात्रों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत क्षयरोग कार्यक्रम पर तीन दिन की जागरूकता कार्यशाला	03.03.2018	03.02.2018	2	40
95.	मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के मेडिकल के इन्टनर्स के लिए एक दिन का आरएनटीसीपी जागरूकता कार्यक्रम	12.02.2018	12.02.2018	1	50
96.	विदेशी प्रतिनिधियों के लिए आरएनटीसीपी के अंतर्गत भारत में क्षयरोग कार्यक्रम पर एक	09.03.2018	09.03.2018	1	9

	दिन की जागरूकता कार्यशाला				
97.	संशोधित पीएमडीटी कार्यक्रम के अंतर्गत नए दिशा–निर्देशों पर डीटीओ का दो दिन का प्रशिक्षण	15.03.2018	16.03.2018	2	26
98.	मेडिकल कॉलेज एवं दिल्ली सरकार के औषधालयों की प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए दस दिन का आरंभिक मॉडयूलर प्रशिक्षण	19.03.2018	31.03.2018	10	11
99.	संशोधित पीएमडीटी कार्यक्रम के अंतर्गत नए दिशा–निर्देशों पर डीटीओ प्लस निरीक्षकों का एक दिन का प्रशिक्षण	28.03.2018	28.03.2018	1	25
	योग			154	2749

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में वर्ष 2017–18 में संचालित प्रशिक्षण/संवेदीकरण कार्यक्रमों का माह अनुसार विवरण –

माह	डीटीओ एवं चिकित्सा अधिकारी	एस टी एल एस	एस टी एस	तकनीकी अधिकारी/ प० तकनीशियन	डी आर टी बी एवं एच आई वी कोड०	डॉट प्रदाता	डीईओ,	मेडिकल छात्र	नर्सिंग स्टाफ	कुल
अप्रैल 2017	80	0	0	11	0	0	0	70	20	181
मई 2017	0	44	44	118	24	0	31	23	40	324
जून 2017	258	45	48	101	23	281	0	67	23	846
जुलाई 2017	73	0	0	0	0	45	0	20	43	181
अगस्त 2017	0	0	0	0	0	0	0	69	90	159
सितंबर 2017	69	0	0	10	65	0	0	19	0	163
अक्टूबर 2017	19	0	0	0	0	0	0	44	33	96
नवंबर 2017	51	0	0	0	0	0	11	20	21	103
दिसंबर 2017	48	33	44	0	30	0	19	19	84	277
जनवरी 2018	137	17	0	32	18	0	0	10	44	258
फरवरी 2018	0	0	0	0	0	0	0	50	40	90
मार्च 2018	26	0	0	11	25	9	0	0	0	71
कुल	761	139	136	283	185	335	61	411	438	2749

संचित तिमाही रिपोर्टो का विश्लेषण

दिल्ली राज्य के आरएनटीसीपी के तहत सभी चैस्ट क्लीनिकों की तिमाही रिपोर्टों (लार संरक्षण, उपचार के परिणाम, कार्यक्रम प्रबंधन) का संकलन एवं उसे तैयार करना और उनका फीडबैक लेना, एसटीडीसी की प्रमुख गतिविधियों में एक है। दिल्ली के प्रत्येक चैस्ट क्लीनिकों की तिमाही रिपोर्टो का विश्लेषण किया जाता है और फीडबैक, जिसमें सुधार करने के लिए आवश्यक निर्देश होते हैं, को तैयार किया जाता है तथा जिला के क्षयरोग अधिकारियों के साथ तिमाही समीक्षा बैठक में इस पर चर्चा की जाती है। ऐसी सभी फीडबैक और राज्य की संकलित रिपोर्टो को डीटीओएस को भेजा जाता है और इनकी प्रतियां राज्य क्षयरोग नियंत्रण अधिकारी तथा केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को भी भेजी जाती है।

तालिका

छाती क्लानिकों का सार्वजनिक क्षेत्रों में जिलावार आरएनटीसीपी वार्षिक प्रदर्शन वर्ष 2017 में

क्रम सं	जिला का नाम	कुल जनसंख्या	सार्वजनिक क्षेत्र अधिसूचना	उपचार शुरु किया गया	उपचार शुरु किया गया प्रतिशत	फुस्फुसीय क्षयरोग प्रतिशत	अतिरिक्त फुस्फुसीय क्षयरोग प्रतिशत	सूक्ष्म जैविक रुप से संबधित प्रतिशत	चिकित्सकीय निदान	बाल चिकित्सा निदान प्रतिशत	एचआई वी स्थिति **ज्ञात** प्रतिशत	एचआई वी स्थिति **सकरात्मक** प्रतिशत
1	बी जे आर एम	6.0	1616	1416	88%	59%	41%	49%	51%	11%	78%	1%
2	बिजवासन	6.0	1717	1393	78%	65%	35%	61%	39%	14%	48%	1%
3	बी एस ए	7.0	2830	2672	94%	56%	44%	38%	62%	12%	57%	1%
4	चौधरी देसराज	7.0	2071	1975	95%	61%	39%	45%	55%	14%	55%	1%
5	डी डी यू एच	12.6	3164	1963	62%	52%	48%	43%	57%	14%	58%	0%
6	जी टी बी एच	6.6	2432	2363	97%	60%	40%	39%	61%	13%	71%	1%
7	गुलाबी बाग	3.5	903	867	96%	56%	44%	47%	53%	12%	84%	2%
8	हैडगेवार	3.0	857	835	97%	55%	45%	59%	41%	11%	1%	0%
9	झंडेवालान	4.0	1234	1172	95%	58%	42%	48%	52%	14%	77%	1%
10	करावल नगर	8.0	3808	3756	99%	53%	47%	37%	63%	15%	12%	3%
11	के सी सी	8.0	2187	1865	85%	62%	38%	43%	57%	12%	27%	2%
12	लोकनायक ह	3.5	1509	920	61%	58%	42%	49%	51%	12%	69%	2%
13	एल आर एस	7.5	2734	2208	81%	68%	32%	61%	39%	9%	72%	2%
14	मालवीय नगर	7.5	2561	2375	93%	61%	39%	46%	54%	12%	56%	1%
15	मोती नगर	11.1	3470	3459	100%	59%	41%	39%	61%	14%	44%	1%

16	नरेला	7.0	2088	2030	97%	66%	34%	47%	53%	12%	84%	1%
17	एन डी एम सी	10	4644	2632	57%	59%	41%	47%	53%	15%	70%	1%
18	नेहरु नगर	15.1	5016	4736	94%	56%	44%	36%	64%	14%	1%	2%
19	पटपड़गंज	13.1	3859	3335	86%	57%	43%	39%	61%	15%	18%	0%
20	आर के मिशन	3.5	605	592	98%	66%	34%	62%	38%	12%	53%	1%
21	आर टी आर एम	7.0	1943	1841	95%	63%	37%	52%	48%	10%	26%	2%
22	एस जी एम एच	7.0	2432	1777	73%	57%	43%	33%	67%	15%	21%	1%
23	शाहदरा	6.0	2789	2712	97%	57%	43%	36%	64%	14%	0%	-
24	एस पी एम	4.0	1002	995	99%	59%	41%	41%	59%	13%	63%	3%
25	जे पी अस्पताल	7.6	3241	3138	97%	45%	55%	37%	63%	18%	19%	1%
	कुल	**181.6**	**60772**	**53027**	**87%**	**58%**	**42%**	**23%**	**57%**	**14%**	**41%**	**1%**

दिल्ली राज्य में छाती क्लानिकों का सार्वजनिक क्षेत्रों में जिलावार आरएनटीसीपी वार्षिक प्रदर्शन वर्ष 2017 में तलिका में दिखाया गया है। कुल 182 लाख अबादी में 60772 मामले सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा अधिसूचित किया गये, जिनमें से 53024 (87%) ने इलाज शुरु कर दिया। इन सब में 58% प्लमनरी क्षयरोग के थे एवं 42%मामले अतिरिक्त प्लमनरी क्षयरोग के थे। आधे से अधिक अर्थात 57% सूक्ष्मजीवविज्ञान की पुष्टि के थे। बाल चिकित्सा क्षयरोग के 14 प्रतिशत मामले थे।

तालिका

दिल्ली राज्य में छाती क्लानिकों का क्रमवार वार्षिक प्रदर्शन – मामला अधिसूचना 2017 में

क्र सं	छाती क्लीनिक	सार्वजनिक क्षेत्र से अधिसूचना	सार्वजनिक क्षेत्र अधिसूचना दर	निजी क्षेत्र से अधिसूचना	निजी क्षेत्र से अधिसूचना दर	कुल अधिसूचना	कुल वार्षिक अधिसूचना दर
1	बिजवासन	1616	267	43	7	1659	274
2	बी जे आर एम	1717	293	25	4	1802	297
3	बी एस ए	2830	400	379	54	3209	454
4	चौधरी देसराज	2071	293	116	16	2187	309
5	डी डी यू एच	3164	251	150	12	3314	263
6	जी टी बी एच	2432	370	30	5	2462	375
7	गुलाबी बाग	903	255	47	13	950	269
8	हैडगेवार	857	283	19	6	876	289
9	झंडेवालान	1234	305	108	27	1342	332
10	करावल नगर	3808	471	445	55	4253	526
11	के सी सी	2187	271	69	9	2256	279
12	लोकनायक ह	1509	427	300	85	1809	512
13	एल आर एस	2734	361	815	108	3549	469
14	मालवीय नगर	2561	338	301	40	2862	378
15	मोती नगर	3470	312	311	28	3781	340
16	नरेला	2088	295	2	0	2090	296
17	एन डी एम सी	4644	460	177	18	4821	477
18	नेहरु नगर	5016	331	294	19	5310	351
19	पटपड़गंज	3859	294	159	12	4018	306
20	आर के मिशन	605	171	911	258	1516	429
21	आर टी आर एम	1943	275	105	15	2048	290
22	एस जी एम एच	2432	344	20	3	2452	347
23	शाहदरा	2789	460	142	23	2931	484
24	एस पी एम	1002	248	36	9	1038	257
25	जे पी अस्पताल	3241	428	117	15	3358	443
	कुल	**60772**	**332**	**5121**	**28**	**65893**	**360**

कुल वर्ष 2017 में 5121 मामले निजी क्षेत्र से अधिसूचित किये गये जिनका वार्षिक अधिसूचना दर 360 रहा। दिल्ली राज्य में छाती क्लानिकों का सार्वजनिक क्षेत्रों में जिलावार क्षयरोग मामला अधिसूचना प्रदर्शन वर्ष 2017 में तलिका में दिखाया गया है। कुल अधिसूचना दर सार्वजनिक क्षेत्र से 332 रही जब की निजी क्षेत्र में ये 28 थी।

दिल्ली में आरएनटीसीपी के अंतर्गत वर्ष 2016 में सार्वजनिक क्षेत्रों से अधिसूचित किये गये नये क्षयरागियों का उपचार परिणाम

सूक्ष्मजीवविज्ञानी पुष्ट क्षयरोगी मामलों का उपचार परिणाम

	पंजीकृत	उपचार पूरे मामले	ठीक हुए मामले	सफल उपचार मामले	मृत्यु	असफल	आगे की कार्यवाही भूले मामले	उपचार रैजिमन बदले मामले	सूचना ना दिये गये मामले
कुल	14526	2%	83%	85%	3%	3%	6%	2%	2%

चिकित्सकीय निदान मामलों का उपचार परिणाम

	पंजीकृत	सफल उपचार मामले	मृत्यु	असफल	आगे की कार्यवाही भूले मामले	उपचार रैजिमन बदले मामले	सूचना ना दिये गये मामले
कुल	30825	94%	1%	0%	3%	0%	2%

एचआईवी से संक्रमित क्षयरोगी मामलों का उपचार परिणाम

	पीएलएचआई वी–क्षय उपचार हेतु पंजीकृत मामले	उपचार के परिणाम की सूचना के मामले	रिपोर्ट किये गये मामलों का प्रतिशत	ठीक हुए मामले	उपचार पूरे मामले का प्रतिशत	सफल उपचार मामले का प्रतिशत	मृत्यु	असफल	आगे की कार्यवाही भूले मामले	उपचार रैजिमन बदले मामले
कुल	579	238	41%	16%	67%	83%	6%	0%	7%	1%

तालिका वर्ष 2016 में सार्वजनिक क्षेत्र से नये रोगियो के उपचार परिणाम की अधिसूचना देती है। वर्ष 2016 में कुल मिलाकर 14526 पंजीकृत मामले थे जिनके सूक्ष्मजीवविज्ञान की पुष्टि थी। इनमें से 83 प्रतिशत ठीक हुए एवं 2 प्रतिशत ने अपना इलाज पूरा किया। वर्ष 2016 मे, कुल 30825 क्षयरोग मामले पंजीकृत हुए जो चिकित्सकीय निदान वाले पुष्टिकृत मामले थे। इनमें से 94 प्रतिशत ने अपना इलाज पूर्ण किया। वर्ष 2016 में, कुल दिल्ली राज्य में, 579 मामले पीएलएचआई वी–क्षय उपचार हेतु पंजीकृत किये गये। इनमे से 238 (41 प्र) मामलो का उपचार परिणाम है। 83 प्रतिशत ने सफलतापूर्ण इलाज पूरा किया जिनमें से 16प्रतिशत का परिणाम सफल रहा एवं 67 प्रतिशत का पूर्ण रहा।

तालिका

दिल्ली में आरएनटीसीपी के अंतर्गत वर्ष 2016 में सार्वजनिक क्षेत्रों से अधिसूचित किये गये पुराने उपचारित क्षयरागियों का उपचार परिणाम

सूक्ष्मजीवविज्ञानी पुष्ट क्षयरोगी मामलों का उपचार परिणाम

	पंजीकृत	ठीक हुए मामले	उपचार पूरे मामले	सफल उपचार मामले	मृत्यु	असफल	आगे की कार्यवाही भूले मामले	उपचार रैजिमन बदले मामले	सूचना ना दिये गये मामले
कुल	6582	69%	2%	71%	6%	4%	10%	6%	3%

चिकित्सकीय निदान मामलों का उपचार परिणाम

	पंजीकृत	ठीक हुए मामले	मृत्यु	असफल	आगे की कार्यवाही भूले मामले	उपचार रैजिमन बदले मामले	सूचना ना दिये गये मामले
कुल	5758	88%	3%	0%	6%	1%	2%

एचआईवी से संक्रमित क्षयरोगी मामलों का उपचार परिणाम

	पीएलएचआई वी–क्षय उपचार हेतु पंजीकृत मामले	उपचार के परिणाम की सूचना के मामले	रिपोर्ट किये गये मामलों का प्रतिशत	ठीक हुए मामले	उपचार पूरे मामले का प्रतिशत	सफल उपचार मामले का प्रतिशत	मृत्यु	असफल	आगे की कार्यवाही भूले मामले	उपचार रैजिमन बदले मामले
कुल	278	113	41%	21%	52%	73%	10 %	1%	10%	4%

तालिका वर्ष 2016 में दिल्ली राज्य के सार्वजनिक क्षेत्र से पुराने रोगियो के उपचार परिणाम की अधिसूचना देती है। कुल मिलाकर 6582 पंजीकृत मामले थे जिनके सूक्ष्मजीवविज्ञान की पुष्टि थी। इनमें से 71 प्रतिशत मामलों ने अपना इलाज पूर्ण किया जिनमें से 69 प्रतिशत ठीक हुए। वर्ष 2016 मे, कुल 5758 क्षयरोग मामले पंजीकृत हुए जो चिकित्सकीय निदान वाले पुष्टिकृत मामले थे। इनमें से 88 प्रतिशत ने अपना इलाज पूर्ण किया, जबकि 278 मामले पीएलएचआई वी–क्षय उपचार हेतु पंजीकृत किये गये। इनमे से 113 (41 प्र) मामले इलाज के लिये आये। इनमें से 73 प्रतिशत ने सफलतापूर्ण इलाज पूरा किया जिनमें से 21 प्रतिशत का परिणाम सफल रहा एवं 52 प्रतिशत का पूर्ण इलाज रहा।

निरीक्षणात्मक कार्य

निगरानी और निरीक्षण आरएनटीसीपी का एक मुख्य औजार है। राजकीय क्षयरोग प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन केन्द्र (एसटीडीसी) होने से केंद्र का संकाय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम की राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर सक्रिय रूप से निगरानी और निरीक्षण करता है।

राज्य आंतरिक मूल्यांकन

सभी चैस्ट क्लीनिकों का आंतरिक मूल्यांकन आरएनटीसीपी के अतंर्गत किया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। इस कार्य में क्लीनिक के रिकार्डो, स्टाफ, औषधि भंडार, सूक्ष्मदर्शी से जांच की सुविधाओं तथा वित्तीय पहलुओं का विस्तार से मूल्यांकन किया जाता है। आंतरिक मूल्यांकन का आयोजन राज्य के क्षयरोग नियंत्रण विभाग द्वारा किया जाता है। दिल्ली के सभी चैस्ट क्लीनिकों के आंतरिक मूल्यांकन दल में एसटीडीसी के निदेशक या उनके द्वारा नामित

प्रतिनिधि होते हैं। प्रत्येक तिमाही मे राज्य के दो चैस्ट क्लीनिकों का आंतरिक मूल्यांकन किया जाता है। वर्ष 2017–18 के दौरान एनडीटीबी केन्द्र के संकाय ने निम्नलिखित अनुसूची के अनुसार चैस्ट क्लीनिक का दौरा किया :

संकाय	दौरे की तिथि	छाती क्लीनिक
डा. . के. के. चोपड़ा डा. शंकर मटटा	15/1/2018 से 17/1/2018	लोक नायक छाती क्लीनिक
डा. . शिवानी पवार	31/1/2018 से 2/2/2018	मोती नगर छाती क्लीनिक
डा. शंकर मटटा	12/2/2018 से 15/2/2018	लोक नायक छाती क्लीनिक

एलएन और आरके मिशन चैस्ट क्लीनिक में आईई प्रारूपों का पीएमडीटी आकलन

यह 3 दिन की गतिविधि थी जिसमें एमडीआर टीबी प्रारूपों का आकलन किया गया। यह क्रियाकलाप केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग की पहल थी। आकलन के लिए दिल्ली राज्य के एलएन और आरके मिशन चैस्ट क्लीनिक का चयन किया गया। इस कार्य के अंतर्गत यह जानने के लिए नए एमडीआर प्रारूपों का उपयोग किया गया कि आंतरिक आकलन के लिए इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जा सकता है अथवा नहीं।

चेस्ट क्लीनिकों का निरीक्षणात्मक दौरा

निगरानी एवं निरीक्षण कार्य यह सुनिश्चित करने के लिए किए जाते हैं कि अपेक्षित कार्यो का संचालन योजना के अनुसार किया जा रहा है तथा रिकार्डबद्ध एवं रिपोर्ट किए गए आंकडे सही एवं मान्य है। यह काम–काज में सुधारात्मक कार्यवाही करने के लिए फीडबैक प्रदान करता है जिससे कि कार्यक्रम के स्तर में सुधार हो। यह स्टाफ को कार्य के प्रति संवेदनशील बनाए रखने के साधन का काम करता है ओर राज्य और जिला स्तर पर उच्च स्तर के प्राधिकरणों की भागीदारी और प्रतिबद्धता में वृद्धि भी करता है।

वर्ष 2017–18 के दौरान डॉक्टरों ने निम्नलिखित निरीक्षणात्मक दौरे किए। इन डॉक्टरों ने आरएनटीसीपी के अंर्तगत कार्यक्रम की कार्यकारिता को बेहतर करने के लिए अपने इनपुट दिए।

संकाय	दौरे की तिथि	छाती क्लीनिक
डा. शंकर मटटा	1/5/2017	झंडेवालान छाती क्लीनिक
डा. शंकर मटटा	11/5/2017	बी जे आर एम छाती क्लीनिक
डा. शंकर मटटा	12/5/2017	एल एन छाती क्लीनिक
डा. शंकर मटटा	13/12/2017	शास्त्री पार्क छाती क्लीनिक
डा. शंकर मटटा	14/12/2017	एस जी एम छाती क्लीनिक

पुस्तकालय एवं सूचना सेवाएं

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र के वेबसाइट (www.ndtbc.com) पर केन्द्र में विभिन्न सुविधाओं तथा गतिविधियों की जानकारी के साथ–साथ 1940 से संस्थान के प्रकाशनों की सूची भी है। केन्द्र में एक पुस्तकालय है जिसमें क्षयरोगों तथा वक्ष रोगों से जुड़े विभिन्न पक्षों पर 660 पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त इसमें विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जनरल हैं। पुस्तकालय, मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज और वी पी चैस्ट संस्थान तथा संकाय के सदस्यों को अपनी सेवाएं देता है।

प्रशासन

(क) एनडीटीबी केन्द्र में आगंतुक

1. यूएसएड के प्रतिनिधि मंडल ने बाल सीबीएनएएटी परियोजना के प्रभाव के मूल्यांकन के लिए 26 सितम्बर 2017 को एनडीटीबी का दौरा किया।
2. श्री स्टीफन लुईस पूर्व राजनीतिज्ञ, भूतपूर्व राजनयिक और सीडीसी, जिनेवा के आकर्षक वक्ताने 10 अक्तूबर 2017 को एनडीटीबी केन्द्र का दौरा किया।
3. डब्लएचओ, सीटीडी, फाइंड और राज्य क्षयरोग प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय विशेषज्ञ दल ने 01 नवम्बर 2017 को दौरा किया। यह दौरा भारत के क्षयरोग निदान नेटवर्क के संयुक्त मूल्यांकन के लिए जांच सूची तैयार करने से संबंधित था।
4. अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के दल ने 04 नवम्बर 2017 को भारत के क्षयरोग निदान नेटवर्क के संयुक्त मूल्यांकन से संबंधित दौरा किया।
5. फाइंड जिनेवा के दल ने 13 दिसम्बर 2017 को एनडीटीबी केन्द्र का दौरा किया। यह दौरा प्रयोगशाला कार्य में फाइंड गतिविधियों के प्रभाव की समीक्षा करने के लिए किया गया।
6. एनडीटीबी केन्द्रीय प्रयोगशाला के प्रत्यायन के लिए एनएबीएल के आकलनकर्त्ताओं ने 27 फरवरी 2018 को मूल्यांकन दौरा किया।
7. स्टॉप टीबी पार्टनरशिप के दल ने 12 मार्च 2018 को नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र का दौरा किया। दल ने एनडीटीबी केन्द्र की प्रयोगशाला के दौरे के बाद क्षेत्र (केस चर्चा द्वारा न्यू ड्रग, एडीआर, डीआरटीबी रोगी प्रबंधन) में कार्यक्रम के प्रचालन ढांचे पर चर्चा की गई।

ग) अनुदान

1 वर्ष 2017–18 के दौरान, भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 310 लाख रुपये का वार्षिक आवर्ती वेतन अनुदान तथा 37.34 लाख रुपये का साधारण सहायता अनुदान जारी किया।

2 वार्षिक अनुदान के रुप में भारतीय क्षयरोग संघ द्वारा 10,000/– रुपये प्रदान किये गये।

घ) दान

दवाईयों के लिये प्राप्त दान
(भारतीय क्षयरोग संघ
के माध्यम से)

– अनार सिंह चंचल सिंह स्मारक निधि	12,490/– रुपये
– श्रीमती राम प्यारी दत्त स्मारक निधि	
– दान, बचत खाता पर ब्याज तथा सावधिक जमा रिजर्व	41,545/– रुपये
	————————
कुल	54,035/– रुपये

ड) सूचना का अधिकार अधिनियम 2005

वर्ष 2016–17 के अंतर्गत सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत 34 अर्जियां प्राप्त की गयी। नीचें दी गयी सारणी में प्राप्त एवं निष्पादित अर्जियों का ब्यौरा है।

क्रम स	मास एवं वर्ष	सूचना का अधिकार अर्जी			अपील			शुल्क राशि
		प्राप्त सूचना का अधिकार अर्जियों की संख्या	निष्पादित सूचना का अधिकार अर्जियों की संख्या	विचाराधीन	प्राप्त अपीलों की संख्या		प्राप्त सूचना का अधिकार अर्जियों की संख्या	निष्पादित सूचना का अधिकार अर्जियों की संख्या
1	अप्रैल 2016	2	2	-	-	-	-	-
2	मई 2016	6	6	-	-	-	-	-
3	जून 2016	4	4	-	-	-	-	-
4	जुलाई 2016	3	3	-	-	-	-	-
5	अगस्त 2016	5	5	-	-	-	-	-
6	सितंबर 2016	1	1	-	-	-	-	-
7	अक्टूबर 2016	5	5	-	-	-	-	-
8	नवंबर 2016	2	2	-	-	-	-	-
9	दिसंबर 2016	-	-	-	-	-	-	-
10.	जनवरी 2017	3	3	-	-	-	-	-
11.	फरवरी 2017	-	-	-	-	-	-	-
12.	मार्च 2017	3	3	-	-	-	-	-
कुल	2017-18	34	34					

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की गतिविधियों का सार

वार्षिक सांख्यिकी के ब्यौरे निम्नलिखित है –

बाह्यरोगी उपस्थिति

पंजीकृत नवीन बाह्यरोगियों	11535
रोगियों का पुनरागमन	11064
बह्यरोगियों की कुल उपस्थिति	22599

डॉट क्लीनिक उपस्थिति

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में नये मरीज डॉट केन्द्र में	63
कुल मरीज (2017–18) में नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र के डॉट केन्द्र में	84

विशेष क्लीनिकों में उपस्थिति

विशेष क्लीनिकों में (क्षयरोग एवं मधुमेह, एच आई वी एवं क्षयरोग, सी ओ ए डी एवं तंबाकू संकम्रण क्लीनिक एवं पुराने मामले)	1022

प्रयोगशाला परीक्षण

कुल प्रयोगशाला परीक्षण	**37,439**
स्मीयर माइक्रोस्कोपी	20,026
कल्चर जांच अ) ठोस कल्चर ब) तरल कल्चर	 2471 8592
दवा संवेदनशीलता परीक्षण ब) तरल कल्चर विधि द्वारा स) एल पी ए द्वारा	 1979 4152
सीबीएनएएटी	219 (आकडा दिसंबर 17 से मार्च 18 तक)

टयूबरक्लीन त्वचा परीक्षण

कुल टयूबरक्लीन त्वचा परीक्षण	9243
पठित परीक्षण	8114
रीएक्टर्स (>10 एम एम)	3609
गैर–रीएक्टर्स (<10 एम एम)	4505

विकिरण परीक्षण

विकिरण परीक्षण	2505

प्रशिक्षण/मध्यवर्ती संदर्भ प्रयोगशाला दौरे/प्रकाशन

प्रशिक्षित कार्मिक	2749
छाती क्लीनिकों का पर्यवेक्षण तथा मानिटरिंग एवं आंतरिक आकलन	10
इ क्यू ए हेतु छाती क्लीनिकों का मध्यवर्ती संदर्भ प्रयोगशाला दौरा	21
सम्मेलन में परचों की प्रस्तुति	4
शोध एवं प्रकाशन	8

ठाकुर वैधनाथ अय्यर एण्ड क.
सनदी लेखाकार
221–223 दीनदयाल मार्ग नई दिल्ली–110002

स्वतंत्र लेखा परीक्षक की रिपोर्ट

प्रति
नई दिल्ली क्षयरोग केन्द के प्रबंधन समिति के सदस्यों

हमने नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की संलग्न वित्तीय विवरणों को जिसमें तुलन पत्र 31 मार्च 2018 को, उसी दिनांक को समाप्त हुए वर्ष की संलग्न आय एवं व्यय लेखा शामिल है की लेखा परीक्षा की है एवं जिसमें महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियों और अन्य व्याख्यात्मक जानकारी का सांराश है।

वित्तीय विवरण के लिये प्रबंधन की जिम्मेदारी

प्रबंधन, वित्तीय विवरणों की तैयारी जो कि केन्द्र का सच्चा और निष्पक्ष विचार दे रहे है एवं जो भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा जारी वित्तीय मानकों के अनुसार है, के लिए जिम्मेदार है इस जिम्मेदारी में डिजाइन, आन्तरिक नियंत्रण का कार्यन्वयन और रखरखाव एंव वित्तीय विवरण की प्रस्तुति जो कि एक सच्चा और निष्पक्ष विचार देता है, शामिल है। यह सामग्री गलत बयान से मुक्त है चाहे वो धोखाधडी या त्रुटि के कारण हो।

लेखापरीक्षकों की जिम्मेदारी

हमारी जिम्मेदारी हमारे लेखा परीक्षण के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर एक राय व्यक्त करने के लिए है। हमने भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा जारी किए गए मानदंड के अनुसार लेखा परीक्षण किया है। उन मानदंडों की मांग है कि हम वित्तीय विवरण के भौतिक भ्रामकों से मुक्त होने की तार्किक विष्वसनीयता जानने के लिए लेखा परीक्षण की योजना बनाए और करे।

लेखा परीक्षा वित्तीय विवरण में मात्रा और खुलासें के बारे में लेखा परीक्षा साक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रक्रियाओं के प्रदर्शन शामिल है। चयनित प्रक्रियाएँ, लेखा परीक्षक के फैसले पर निर्भर है जिसमें वित्तीय विवरण की सामग्री का गलत बयान के जोखिम का आकलन भी शामिल है, चाहे वो धोखाधडी या त्रुटि के कारण हो। इन जोखिम आकलन करने में लेखा परीक्षक, लेखा परीक्षक तैयारी और वित्तीय विवरण की निष्पक्ष प्रस्तुति में, केन्द्र का आन्तरिक नियंत्रण समझता है। लेखा परीक्षक की प्रक्रिया डिजाइन करने के क्रम में परिस्थितियों में उपयुक्त है। लेखा परीक्षा में इस्तेमाल

लेखाकंन नीतियों के औचित्य और लेखा की तर्कसंगता का मूल्याकंन प्रबधन द्वारा किये गए अनुमानों के अनुसार है, साथ ही इसमें समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुतिकरण का आकलन भी शामिल है, हमें विष्वास है कि लेखा परीक्षा सबूत जो हमें प्राप्त हुआ, हमारे लेखा परीक्षा राय के लिये एक आाधार प्रदान करने के लिये प्रर्याप्त और उचित है।

राय

हमारी राय में एवं हमारी श्रेष्ठ जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार लेखा टिप्पणी, जो सूची 17 में दी गई लेखाकरण नीतियों एवं नोटस के साथ पढ़ी जाए, सूचना देती है। ये लेखा टिप्पणी, भारत में सामान्यताः मान्य लेखा सिद्वांतों के अनुरुप एक सत्य एवं उचित पक्ष सामने रखती है।

क. 31 मार्च 2018 को केन्द्र के मामलों के तुलन पत्र के संदर्भ में

ख. उसी तिथि को समाप्त हुए वर्ष का अधिशेष, आय और व्यय लेखा के संदर्भ में।

अन्य कानूनी और नियामक आवश्यकताओं पर रिपोर्ट

1 हमें जहां तक पता है और विश्वास है, हमने लेखापरीक्षा के उदेश्य से आवश्यक सूचना एवं स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं ।

2 हमारी राय में और जैसा कि उन पुस्तकों के हमारे परीक्षण से लगता है केन्द्र ने कानून द्वारा मान्य तरीके से उचित खाता बही बना रखा है;

3 इस रिपोर्ट द्वारा जांची गयी तुलन पत्र एवं आय एवं व्यय लेखा बही से मेल खाते हैं।

4 हमारी राय में, तुलन पत्र, आय एवं व्यय लेखा सामान्यतः मान्य लेखा सिद्वांतों के अनुरुप है जो कि भारतीय सनदी लेखाकार के द्वारा जारी किये गये है।

ठाकुर वैधनाथ अय्यर एण्ड क.
सनदी लेखाकार
एफआरएन : 000038एन

(अनिल के ठाकुर)
साझेदार
एम नं : 088722

स्थानः नई दिल्ली
तिथिः 30.8.2018

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

31 मार्च 2018 को स्थिति के अनुसार तुलन पत्र

	सूची	31 मार्च 2018 को (रु)	31 मार्च 2017 को (रु)
निधि के स्त्रोत			
सम्पति निधि	**1**	2,998,654	3,372,606
नियत आरक्षित निधि	**2**	1,325,237	1,312,350
अक्षय परियोजना निधि	**3**	1,432,274	1,614,795
चालू देयताएं और प्रावधान	**4**	5,266,010	3,178,974
कुल अधिशेष/धाटा		(344,775)	310,593
	कुल	**10,677,400**	**9,789,318**
निधि के उपयोग			
अचल संपतियां	**5**	2,998,654	3,372,606
चालू संपतियां, उधार व अग्रिम	**6**		
– भंडार एवं जमा		127,129	150,893
– नकद एवं बैंक शेष		7,376,000	6,119,512
स्त्रोत पर कटा वसूली टैक्स		175,617	146,307
	कुल	**10,677,400**	**9,789,318**
महत्वपूर्ण लेखाकंन नीतियॉ तथा लेखन टिप्पणी	**18**		

सम्पूर्ण लेखा विवरण सूची संख्या 1 से 17 तक

रिपोर्ट संलग्न
ठाकुर वैधनाथ अय्यर एण्ड क.
सनदी लेखाकार
एफआरएन नं – 000038एन

लेखाकार
(एस के सैनी)

(अनिल के ठाकुर)
साझेदार
एम न. 088722

निदेशक
(डा॰ के के चोपडा)

अध्यक्ष
(डा॰ एल एस चौहान)

स्थानः नई दिल्ली
तिथिः 30.8.2018

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

31 मार्च 2018 को समाप्त हुए वर्ष की आय और व्यय लेखा का ब्यौरा

	सूची	वर्ष 2017-18 (रु)	वर्ष 2016-17 (रु)
आय			
रख रखाव अनुदान भारत सरकार से			
अनुदान – वेतन		45,100,000	31,000,000
अनुदान – साधारण		4,000,000	3,734,000
रख रखाव अनुदान भारतीय क्षयरोग संघ से		10,000	10,000
मरीजों से शुल्क	**7**	204,500	291,900
विविध प्राप्तियाँ			
– ब्याज आय		292,284	152,196
– विविध प्राप्तियाँ		106,010	1,270
कुल		**49,712,794**	**35,189,366**
व्यय			
वेतन व अन्य कर्मचारी भत्ते	**8**	45,212,355	30,880,412
प्रशासनिक खर्चे	**9**	4,797,027	3,911,053
एक्सरे फिल्म, दवाईयों व औषधियों व प्रयोगशाला अभिरंजको पर खर्च	**10**	358,780	282,236
कुल		**50,368,162**	**35,073,701**
(घाटा)/अधिशेष वर्ष में		**(655,368)**	**115,665**
घटा/(जमा) : पिछले लेखानुसार शेष निधि		310,593	194,928
		(344,775)	**310,593**

महत्वपूर्ण लेखाकंन नीतियॉ तथा **18**
लेखन टिप्पणी
सम्पूर्ण लेखा विवरण सूची संख्या 1 से 17 तक

रिपोर्ट संलग्न
ठाकुर वैधनाथ अय्यर एण्ड क.
सनदी लेखाकार
एफआरएन नं – 000038एन

लेखाकार
(एस के सैनी)

(अनिल के ठाकुर)
साझेदार
एम न. 088722

निदेशक
(डा॰ के के चोपडा)

अध्यक्ष
(डा॰ एल एस चौहान)

स्थानः नई दिल्ली
तिथिः 30.8.2018

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

31 मार्च 2018 को समाप्त हुए वर्ष में प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

	सूची	वर्ष 2017–2018 के लिये (रु)	वर्ष 2016–2017 के लिये (रु)
प्राप्ति			
प्रारम्भिक रोकड व बैंक निधि	**6**	6,119,512	7,396,262
अनुदान :			
– आवर्ती अनुदान भारत सरकार से			
– आवर्ती अनुदान वेतन		45,100,000	31,000,000
– आवर्ती अनुदान साधारण		4,000,000	3,734,000
– रखरखाव अनुदान भारतीय क्षयरोग संघ से		10,000	10,000
मरीजों से शुल्क	**7**	204,500	291,900
भारतीय क्षयरोग संघ से प्राप्ति	**11**	2,712,000	2,093,000
अन्य प्राप्तियां	**12**	487,317	520,197
कुल		**58,633,329**	**45,045,359**
भुगतान			
कर्मचारी खर्चे	**13**	43,113,137	30,764,262
प्रशासनिक खर्चे	**14**	4,778,679	4,036,912
एक्सरे फिल्म, दवाईयों व औषधियों व प्रयोगशाला अभिरजको प	**15**	372,216	277,795
भारतीय क्षयरोग संघ निधि से भुगतान	**16**	2,712,000	2,093,000
अन्य भुगतान	**17**	281,297	1,753,878
समापन रोकड व बैंक निधि	**6**	7,376,000	6,119,512
		58,633,329	**45,045,359**
कुल			
महत्वपूर्ण लेखाकंन नीतियॉ तथा लेखन टिप्पणी	**18**		
सम्पूर्ण लेखा विवरण सूची संख्या 1 से 17 तक			

रिपोर्ट संलग्न
ठाकुर वैधनाथ अय्यर एण्ड क.
सनदी लेखाकार
एफआरएन नं – 000038एन

लेखाकार
(एस के सैनी)

(अनिल के ठाकुर)
साझेदार

निदेशक
(डा॰ के के चोपडा)

अध्यक्ष
(डा॰ एल एस चौहान)

एम न. 088722

स्थानः नई दिल्ली
तिथिः 30.8.2018

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

सूची–1

सम्पति निधि		31–3–2018 को (रु)	31–3–2017 को (रु)
पिछले वर्ष का शेष		3,372,606	3,518,730
जमा – वर्ष में वृद्वियाँ सम्पति प्राप्ति के लिये अधिग्रहण (अनुसूची 5 में उल्लेख)		32,170	305,056
		3,404,776	3,823,786
घटाए			
वर्ष के दौरान निपटान		-	
वर्ष के दौरान ह्रास (अनुसूची 5 में उल्लेख)		406,122	451,180
	कुल	**2,998,654**	**3,372,606**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

सूची–2

	प्रयोग में न लाया गया शेष 1.4.2017 को	वर्ष के दौरान प्राप्ति/ स्थानतंरण	ब्याज	कुल	वर्ष के दौरान उपयोग	उपयोग न किया गया शेष 31.3.2018 को
	(रु)	(रु)	(रु)	(रु)	(रु)	(रु)
निर्धारित निधि						
सामान्य दान	387,793	-	41,861	429,654	-	429,654
सभागह निधि	1,008	-	-	1,008	-	1,008
गरीब रोगियो के लिए	56,566	-	-	56,566	-	56,566
दवाईयाँ	281,947	12,240	-	294,187	37,062	257,125
कर्मचारी कल्याण निधि	86,436	-	3,232	89,668	7,384	82,284
अनुसंधान निधि	498,600	-	-	498,600	-	498,600
कुल	**1,312,350**	**12,240**	**45,093**	**1,369,683**	**44,446**	**1,325,237**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

	31–3–2018 को (रु)	31–3–2017 को (रु)

सूची–3

अक्षय परियोजना शेष

अक्षय परियोजना निधि – एसएमएस फार श्योर	827,553	929,153
अक्षय परियोजना निधि – क्षयरोग अधिसूचना में तेजी	-	80,921
अक्षय परियोजना निधि – जेल में क्षयरोग की द्रेखभाल के लिये	241,500	241,500
अक्षय परियोजना निधि – एक्सपर्ट अलटरा	363,221	363,221
कुल	**1,432,274**	**1,614,795**

सूची–4

चालू देयताएं और प्रावधान

अग्रिम राशि एवं प्रयोगशाला सेवा	3,160	3,160
वेतन व भत्ते	3,350,242	2,712,532
बोनस	178,378	178,870
अन्य देयताए	24,780	32,667
विविध लेनदार	11,130	17,415
उपदान निधि में अंशदान के लिए प्रावधान	1,667,000	205,000
सुरक्षित राशि	31,320	29,330
कुल	**5,266,010**	**3,178,974**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

सूची–5

स्थायी संपति

	1 अपैल 2017 को शेष (रु)	वर्ष के दौरान जमा (रु)	वर्ष के दौरान निकाली गई (रु)	31 मार्च 2018 को शेष (रु)	ह्रास वर्ष के दौरान	शुद्ध कूल संपत्तियाँ 31.03.18 को
भवन	221,369	-	-	221,369	22,137	199,232
विधुत एवं सफाई सम्बन्धी सस्थांपन	716,456	-	-	716,456	71,646	644,810
फर्नीचर, फिटिंग	1,248,996	32,170	-	1,281,166	127,084	1,154,082
प्रयोगशाला उपकरण	541,650	-		541,650	81,247	460,403
एक्सरे उपकरण	475,476	-		475,476	71,321	404,155
अन्य उपकरण	15,936	-	-	15,936	2,390	13,546
कम्प्यूटर	16,370	-	-	16,370	9,822	6,548
किताबें	50	-	-	50	30	20
वाहन	136,303	-	-	136,303	20,445	115,858
कुल	**3,372,606**	**32,170**	**-**	**3,404,776**	**406,122**	**2,998,654**

वर्ष 2017–18 के दौरान निश्चित परिसंपतियों के विस्तार का विवरण

खरीद की तारीख	मद संख्या	संख्या	मात्रा (रु)
18.07.2017	मोटोरिक्स स्क्रीन	1	11,520
31.03.2018	लैब स्टूल स्टील	10	20,650
			32,170

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

	31–3–2018 को	31–3–2017 को
	(रु)	(रु)

सूची–6

(अ)चालू परिसम्पतियॉ उधार एंव अग्रिम		
भण्डार में		
लागत मूल्य पर		
(प्रबंधन द्वारा मूल्यांकित और प्रमाणित)		
एक्सरें फिल्में और रसायन	17,150	26,484
प्रयोगशाला रंजक, रसायन और काँच के बरतन	109,979	88,409
त्यौहार अग्रिम	-	36,000
	-	
उप कुल–ए	**127,129**	**150,893**
(ब)नकदी एवं बैंक जमा राशि		
हाथ रोकड	162	2,870
(प्रबंधन द्वारा मूल्यांकित और प्रमाणित)		
बैंक आफ इडिंया चालू खाता	6,072,500	4,826,191
बचत खाता में		
बैंक आफ इडिंया –नियत दान खाता	1,221,054	1,204,015
बैंक आफ इडिंया – कर्मचारी कल्याण निधि	82,284	86,436
उप कुल–बी	**7,376,000**	**6,119,512**
सकल कुल–ए व बी	**7,503,129**	**6,270,405**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

	अग्रिम शुल्क 01.04.17	वर्ष के दौरान प्राप्त शुल्क	जोडे – अग्रिम शुल्क समायोजित वर्ष के दौरान	शुल्क 2017-18 वर्ष के लिए	अग्रिम 31.03.2018 को
सूची–7					
मरीजों से शुल्क					
प्रयोगशाला प्रभार	3,160	194,000	-	194,000	3,160
एक्सरे प्रभार	-	10,500	-	10,500	-
कुल	**3,160**	**204,500**	**-**	**204,500**	**3,160**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

		वर्ष 2017-18 (रु)	वर्ष 2016-17 (रु)
सूची–8			
वेतन व अन्य कर्मचारी खर्चे			
वेतन		28,200,386	9,849,117
मंहगाई भत्ता		3,407,806	12,450,805
मकान किराया भत्ता		5,084,293	2,866,947
यातायात भत्ता		1,829,355	1,792,848
अन्य भत्ते		983,310	666,545
बाल शिक्षा भत्ता		430,632	333,700
भविष्य निधि में अंशदान		3,053,167	2,212,268
उपदान निधि में अंशदान		1,667,000	205,000
बोनस		178,378	355,924
यात्रा रियायती भत्ता		378,028	147,258
	कुल	**45,212,355**	**30,880,412**
सूची–9			
प्रशासनिक व्यय			
सुरक्षा एवं हाउसकीपिंग शुल्क		2,023,827	1,578,990
– हाउसकीपिंग शुल्क	1127316		
– सुरक्षा शुल्क	896511		
कर्मचारियों को चिकित्सा सहायता		262,943	263,389
यात्रा खर्च व किराया		102,998	28,104
फर्नीचर फिटिंग और उपकरणों की मरम्मत		168,824	121,535
एक्सरे उपकरणों की मरम्मत		44,903	41,375
प्रयोगशाला उपकरणों की मरम्मत		111,517	95,665
टेलीफोन खर्चे		111,955	130,658
मुद्रण और लेखन सामग्री		117,115	92,399
डाक खर्चे		4,932	5,615
धुलाई खर्च		6,580	5,610
पुस्तकें और पत्रिकाएं		-	860
कार रख–रखाव		65,756	40,294
लेखा परीक्षा शुल्क		24,780	24,780
विभिन्न खर्चे		140,299	120,978
लोक निर्माण विभाग को रख रखाव हेतु–भवन		692,503	803,263
लोक निर्माण विभाग को रख रखाव हेतु–विघुत		554,590	179,400
वार्षिक दिवस खर्चे		37,838	38,478
विधि खर्च		-	19,800
फर्नीचर – बडी मरम्मत		325,667	319,860
	कुल	**4,797,027**	**3,911,053**

अनुदान फंड एवं फर्नीचर मरम्मत से प्राप्त संपतियों की लागत

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

		वर्ष 2017-18	वर्ष 2016-17
		(रु)	(रु)

सूची–10

एक्सरे फिल्में, दवाईयां, औषधियाँ और प्रयोगशाला अभिरंजक

दवाईयां और औषधियाँ				
अधशेष भंडार 1–4–2017 को		-		
जोडे – वर्ष में खरीदी गई		63,524		
		63,524		
घटाए – इतिशेष भण्डार		-		
			63,524	44,837
एक्सरे फिल्में व रसायन				
अधशेष भंडार 1–4–2017 को		26,484		
जोडे – वर्ष में खरीदी गई		116,936		
		143,420		
घटाए – इतिशेष भण्डार		17,150		
			126,270	83,157
प्रयोगशाला अभिरंजक, रसायन और काँच के बर्तन				
अधशेष भंडार 1–4–2017 को		88,409		
जोडे – वर्ष में खरीदी गई		190,556		
		278,965		
घटाए – इतिशेष भण्डार		109,979	168,986	154,242
उपयोग समान	**कुल**		**358,780**	**282,236**

-

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

		वर्ष 2017-18	वर्ष 2016-17
सूची–11		(रु)	(रु)
प्राप्तियॉ टी ए आई निधि से			
भविष्य निधि अग्रिम		1,712,000	2,093,000
उपदान निधि के लिए भुगतान		1,000,000	
	कुल	**2,712,000**	**2,093,000**

सूची–12

अन्य प्राप्तियॉ

त्यौहार अग्रिम की वसूली		36,000	69,300
दवाईयों के लिए दान		12,240	12,490
कर्मचारी कल्याण निधि		3,232	3,382
परिवर्तनशील स्थायी जमा पर ब्याज		262,974	128,433
बचत जमा खाते पर ब्याज (नियत आरक्षित निधि)		41,861	33,633
साधारण दान		-	10,000
विविध प्राप्तियॉ		106,010	1,270
बयाना		25,000	25,000
सभागार निधि		-	10,000
परियोजना – क्षयरोग अधिसूचना में तेजी		-	224,800
यूनिवर्सल कमर्फट प्रोडक्टस लि		-	1,889
	कुल	**487,317**	**520,197**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

सूची–13

		वर्ष 2017-18 (रु)	वर्ष 2016-17 (रु)
कर्मचारी खर्चे			
वेतन		27,011,740	9,680,549
मंहगाई भत्ता		4,240,706	12,455,119
मकान किराया भत्ता		4,838,203	2,859,047
यातायात भत्ता		1,819,051	1,796,347
अन्य भत्ते		993,395	614,978
बाल शिक्षा भत्ता		430,632	333,700
भविष्य निधि में अंशदान		3,016,498	2,198,557
उपदान निधि में अंशदान		205,000	412,000
बोनस		179,884	266,707
यात्रा रियायती भत्ता		378,028	147,258
	कुल	**43,113,137**	**30,764,262**

सूची–14

प्रशासनिक खर्चे			
सुरक्षा और सतर्कता शुल्क		2,023,827	1,698,483
सफाई व्यवस्था शुल्क	1127316		
सतर्कता शुल्क	896511		
कर्मचारियों को चिकित्सा सहायता		262,943	263,389
यात्रा खर्च व किराया		102,998	28,104
फर्नीचर फिटिंग और उपकरणों की मरम्मत		168,824	121,535
एक्सरे उपकरणों की मरम्मत		44,903	41,375
प्रयोगशाला उपकरणों की मरम्मत		113,768	93,414
टेलीफोन खर्चे		119,842	135,649
म्रुदण और लेखन सामग्री		117,115	92,399
डाक खर्चे		4,932	5,615
धुलाई खर्च		6,580	5,610
पुस्तकें और पत्रिकाएं		-	860
कार रख–रखाव		68,590	29,764
लेखा परीक्षा शुल्क		24,780	24,150
विभिन्न खर्चे		140,299	117,544
लोक निर्माण विभाग को रख रखाव हेतु–भवन		661,183	798,933
लोक निर्माण विभाग को रख रखाव हेतु–विघुत		554,590	179,400
वार्षिक दिवस खर्चे		37,838	38,478
फर्नीचर		325,667	319,860
विधि व्यय		-	42,350
	कुल	**4,778,679**	**4,036,912**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

		वर्ष 2017-18	वर्ष 2016-17
सूची–15		(रु)	(रु)
एक्सरे फिल्में, दवाईयां, औषधियाँ और प्रयोगशाला अभिरंजक			
एक्सरे फिल्में व रसायन		116,936	105,028
दवाईयां और औषधियाँ		63,524	44,837
प्रयोगशाला अभिरंजक और रसायन		191,756	127,930
	कुल	**372,216**	**277,795**
सूची–16			
भुगतान टी ए आई निधि से			
भविष्य निधि अग्रिम		1,712,000	2,093,000
उपदान निधि के लिए भुगतान		1,000,000	-
	कुल	**2,712,000**	**2,093,000**
सूची–17			
अन्य भुगतान			
त्यौहार अग्रिम		-	58,500
अग्रिम धन		25,000	-
कर्मचारी कल्याण निधि		7,384	-
दवाईयों के लिये दान		37,062	33,953
सभागार फंड		-	123,885
परियोजना – एसएमएस फार श्योर		101,600	644,800
परियोजना – क्षयरोग अधिसूचना में तेजी		80,921	364,954
परियोजना – एक्सपर्ट अलटरा		-	475,442
परियोजना – जेनेटिक पालीमारफिजम		-	30,000
सुरक्षा जमा		29,330	22,344
	कुल	**281,297**	**1,753,878**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

अनुबंध (31 मार्च 2018 को अंत हुए वर्ष का)

		अनुदान – वेतन	अनुदान – साधारण
		(रु)	(रु)
आय			
प्रारम्भिक अधिशेष / घाटा (1–4–2017)		112,913	197,680
भारत सरकार से अनुदान		45,100,000	4,000,000
रख रखाव अनुदान भारतीय क्षयरोग संघ से		-	10,000
मरीजों से शुल्क		-	204,500
ब्याज आय		-	292,284
विविध प्राप्तियाँ		-	106,010
	कुल	**45,212,913**	**4,810,474**
व्यय			
वेतन व अन्य कर्मचारी भत्ते		45,212,355	-
प्रशासनिक खर्चे		-	4,797,027
एक्सरे फिल्म, दवाईयों व औषधियों व प्रयोगशाला अभिरंजको पर खर्च		-	358,780
परिसंपतियों के मुख्य नवीनीकरण पर खर्च			-
	कुल	**45,212,355**	**5,155,807**
अधिशेष / घाटा		**558**	**(345,333)**
कुल अधिशेष 31–3–2018 को			**(344,775)**

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र, नई दिल्ली

सूची–18

महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियॉ तथा लेखाओं की टिप्पणी

अ) महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियॉ

1 लेखांकन का आधार

यह वितिय विवरण एकरुपता एवं सरोकार को ध्यान में रखते हुए देयता (सिवाय विशेष रुप से छोडकर जो कहा गया है) एवं ऐतिहासिक लागत कन्वेंशन के तहत एवं समान्य रुप से लेखाकंन मान्यताओं जो भारत में है उनके के आधार पर तैयार की गयी है।

2 अनुमान के उपयोग

भारत में जीएएपी के आधार पर वित्तीय विवरणों की तैयारी का अनुमान है और मान्यताओं को बनाने के लिये प्रबंधन की आवश्यकता है जहां पर जरुरी है एवं जो संपति और देनदारियों और वितीय बयान की तारीख के रुप में आकस्मिक देनदारियों की सूचना राशि और वर्ष के दौरान राजस्व और व्यय की राशि को प्रभावित करता है। वास्तविक परिणाम अनुमानित से भिन्न हो सकते है। इस तरह के अनुमान को किसी भी वर्ष में मान्यता प्राप्त है।

3 राजस्व मान्यता

आय एवं व्यय का ब्यौरा सिवाय छुटटी नकदीकरण के उपचय के आधार पर किया गया है।

4 स्थाई सम्पति एवं मूल्यह्रास

क) स्थाई सम्पति लागत मूल्य पर दिखाई गई है व दान के रुप में प्राप्त संपति, दान की तारीख के समय व्याप्त अनुमानित बाजार मूल्य पर दिखायी गयी हैं ।

ख) वित्तीय वर्ष 2011–12 से अपनी अचल संपतियों पर मूल्यह्रास, आयकर अधिनियम 1961 के तहत निर्धारित दर के आधार पर लगाना शुरु कर दिया है।

ग) इसके अलावा मूल्यह्रास को संबधित फिक्सड परिसंपतियो को सम्पति निधि में डेबित करके दर्शाया गया है।

घ) पूंजीगत मदो मे पाचं हजार तक कि वस्तुओं के क्रय को नही दिखाया गया है।

ड) परिसंपति निधि को आय और व्यय खाते एवं परियोजना निधि को वर्ष के दौरान हासिल की गई स्थायी परिसंपतियों के साथ आकंलित किया गया है।

5 स्टॉक

प्रयोगशाला अभिरंजक व एक्सरे फिल्में तथा रसायन को पहले आये और पहले गये नियम के आधार पर खरीद मूल्य पर दिखाया गया है (सूची संख्या 3 के संदर्भ में)।

6 उपदान निधि

उपदान निधि के भविष्य भुगतान की देयता भारतीय क्षयरोग संघ के नियमों के अनुसार की गई है एवं भारतीय क्षयरोग संघ के उपदान निधि नियमों के अनुसार भारतीय क्षयरोग संघ की उपदान निधि के पास है।

7 भविष्य निधि

भाारतीय क्षयरोग संघ के भविष्य निधि नियमों के अनुसार, केन्द्र के कर्मचारियों के भविष्य निधि के खाते भारतीय क्षयरोग संघ के पास रखे जाते है।

8 ब्याज से आय

विशेष कोष के निवेष पर प्राप्त ब्याज आय एवं व्यय लेखे की बजाय विशेष कोष में सीधे जमा की गई हैं।

ब) <u>लेखा टिप्पणी</u>

1 बिजली और पानी का खर्चा आय और व्यय खाते में नहीं दर्शाया गया है क्योंकि बिजली व पानी की सप्लाई लोकनायक अस्पताल से होती है जिसके लिये लोकनायक अस्पताल/दिल्ली विद्युत बोर्ड द्वारा वर्ष 2015–16 में कोई मांग नहीं की गयी है। लेखों में बिजली तथा पानी के देयता के लिये कोई प्रावधान नहीं किया गया है। हालांकि, 2016–17 में लोकनायक अस्पताल ने बिजली खर्चा का शुल्क लेने शुरु कर दिये है।

2 भूमि जिस पर इमारतें स्थित हैं उसका कोई अधिकार पत्र उपलब्ध नहीं है।

3 स्टाक की लागत/ मूल्याकंन प्रबंधन द्वारा मूल्यांकित एवं सत्यापित।

4 पिछले वर्ष के आंकड़ो को आवयकतानुसार पुनः समूहित किया गया है।

लेखाकार
(एस के सैनी)

निदेशक
(डा॰ के के चोपडा)

(डा॰ एल एस चौहान)
अध्यक्ष

स्थान : नई दिल्ली

तिथि : 30–8–2018

FACILITIES AVAILABLE AT NDTBC

OPD CONSULTATION

RADIOLOGICAL EXAMINATION

TUBERCULIN TESTING

SPUTUM EXAMINATION

BSL LABORATORY

DOTS CENTRE

नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र

जवाहर लाल नेहरु मार्ग
नई दिल्ली – 110002
दुरभाषः जानकारी : 23234270, कार्यालय : 23239056 फैक्स : 23210549
ईमेल : ndtb@yahoo.com, stdcdl@rntcp.org
वेबसाइट : www.ndtbc.com